

श्रीमाधवराम सुखसागरप्रारम्भः ॥

ॐ सतगुरु प्रसाद ॥

दो० गौरीपुत्र गणेश को वन्दन करों बनाय ॥
अखिलविश्व त्रैलोक्यको जिनकानाम सुखदाय १
द्विरदवदन बारिज नयन कोटि चन्द समदेह ॥
चार भुजा अहिराज जिमि लम्बोदर सुख गेह २॥

स० ॥ गणनायक भूतपतीसुतको करजोर सदा अभिवन्द हमारे। जिनके पद पंकज देवगुरू कमलासन पूजिके विश्व सँवारे ॥ ध्यानधरे जिनको सुरराज सो देवन माहिं भये अधिकारे। यहते हम जान भजे पदको मतिदायक सो औलम्ब हमारे ३ मकराकृत कुण्डल कानलसे पुनि सुन्दर क्रीट सो शीश बिराजे । मणि मुक्तन के कंठ हारपरे सभ नीलसुअम्बर ऊपर छाजै ॥ जड़ाऊजड़ी मुँदरी अँगुरी कर कंगन बांह में बैठे बिराजै। हेम छुद्रक जड़ी कटिमें पद अम्बुजमें नेवरा सुख बाजै ४ चहुँ हाथन में चहुँ बेदलिये युग चारन में धर्म थाप चलावे। त्रिनैनबिषे त्रिलोकी बसे तिनके सुत बाहन मूह सुहावै ॥ जग कारन देवी सुअंग सभै सुखदायी सुरम्भा जे नाम कहावे। ज्ञान स्वरूप त्रिकाल अवाध जो ध्यानधरै सोई मोख को पावै ५ याते प्रधान सभ देवन में सुख सेवन के दुख बिघ्न हटावै । सबका सुखदायक है गणनायक तुंडीते जगको उपजावै ॥ गणेशपुरान में व्यासभले सबका सुखहेतु गणेश कुगावै। त्रिदेव सुआदि सबै जगमण्डल जेहि पूजि सो कामनमें सुखपावै ॥ ६ ॥

दो० एकदंत सुखसदन चिद व्यापक शुभ जो अकास ॥
अखिल विश्वके नाथ तुम करौ सो मम उरवास ७

क० ॥ क्षीरसिन्धु सुख माहिं अहिशय्या सैनकरै पद पद्म मानो नीत सम कमलाही सेवैहै। चारिकर माहीं दर गदा औसरोज चक्री भृगुपाद गरे स्रक अंगद सुशाही है॥ जिनका सुपदवार सव लोक मोक्षकरै धारे त्रिपुरारि सुखसदाशिरमाहीं है। ऐसे भगवान लक्ष्मी के पति सुखदायी जिनका सुनामलिये भव दुखनासी है ८ मंगल मूरति श्याम विष्णु कृपाल ईश सेवकन के दुख देख करत निहाल है। परै भीर देवन को तिनै पद माहिंपरै विविध औतारि धारि सुरनको पालै है ॥ परउपकारी कोउ विष्णु समान नाहीं चराचर जीवनके सदा सो सहाई है। याते ताकी पूजन सुमंगल सफल सदा ऐसे मधुसूदन को हमरी नमामी है ६ गिरिजा के पति भोलानाथ जग मूलआदि जिनका सुज्ञान तीनकाल सो आवाधहै। जिनके सो वायेंअंग गणपति मात वसै देवगण आदि सव ध्यानको लगावै है ॥ गरसै भंग गंग शीशधेनु वाल वाहन स्वामी चन्द्र चूड़ामणि जटामें विराजै है। गले व्याल रुंडमाल नित सिंहखाल ओढ़ तीन शूल डमरु कैलासपति चिदहै १० जिनका सुनाम लिये कालदुख त्रास पावै कामरिपु दयासिन्धु सदा निष्काम है। अंग में भसम शोभै मानों श्याम घटा चढ़ि प्रातकाल श्वेतनैन छविपावै है ॥ तीन नैन तीन लोक सदा सो प्रकाशकरै नाथनके नाथ मुँह मांगे फल देवै है। उतपति पालन सँहार सोभविन करै जिनका प्रकाश इन्दु सूरज प्रकाशी है ११ देशकालरहित शिव कालहूके काल महानाम रूप माहिं जिन व्यापक अकाशहै। योगीजन जिन का सो निशिदिन ध्यानकरै पाय ज्ञान निजरूप तापको नशावै है ॥ अंतमाहिं वपु त्याग सदा शिवरूप ह्वै पञ्चभूत देह त्याग भगमें न आवैहै। ऐसे शिवनाथ काहि हमरी नमामी सदा जिनकेसुकृत अघ विघ्न नशावै है ॥ १२ ॥

स० ॥ हरीहर रूपधरे गुरु नानक वेदीकुल जगमाहिं उदारे। रघुबंश बिषे तिनकी शुभ पद्धति बाहुज धरमसतोगुणधारे ॥ सुरमानव दयत गन्धर्व यक्ष किन्नर सिद्ध मुनीश महीपति सारे। वेदअरथ अपारसो कीन तिनै संग सिधसकी बहुभांति देखारे १३ धर्म विरोधिनवालेनको मानभंग प्रतिष्ठासो दीनउठाये। दश चार भुवन सवमाहिं फिरे जहँ वेद धरम नहिं धर्म्म चलाये ॥ त्रेता विषे रघुबंशजये शुभ

द्वापर कृष्ण मुरारिकहाये। दिगविजय अपार सो लीला करै जेहि गायके जीव लघे भवजाये १४॥

दो० गुरु नानक शुधरूप अज चहुँ युग धरे अवतार॥
जगत जीव गुरु होयके उपदेश करे भव पार १५
जिनकी बाक अडोल अति वेद ग्रन्थ के माहि॥
दुखित जीव कलि देखिके सुधासिन्धु रचे ताहि १६

क० ॥ आदिगुरु नानकसो अखण्ड चिदानन्द ब्रह्म जिनका सुयश वेद बानी सन्त गावै है। नाम सुख देख भवसागर बनाये जिन सेवकनके गन जिस पाय पार पावै है॥ जिनका प्रकाश पाय मति प्रकाश होय शुभकृत माहिं मंगल करे सुखदाई है। ऐसे गुरुनानक पदाम्बुज सुखमाहिं हाथ जोरि शीश नाइ वन्दना हमारी है १७ जिनके तनुज श्रीमहाराजचन्द्रभये रुद्र अवतार महामोक्ष सुखदानी है। त्रिधानाम रूपधारि उतपति पालै जग अन्तमें संहारकरि आप में मिलावै है॥ वेद बानी जिनकी सो तिनहीं को गावै नित मोहनी स्वरूपधारि जगत प्रकाशै है। निवनि अवधूत सुखमारग अबाध शिव दशौदिशमाहिं शुभप्रगट चलायेहै १८ सोम बाल तनधारि नद सम शीश जटा हेम की तड़ागी शुभ कटिमें विराजै है। श्याम मेघ की समान अंग भस्म रमाये जतीवजका कुपीन आड़बन्दकी चढ़ाये है॥ मुखचंद कर पाद कमल की समान नैन बिम्ब ओंठ मानो कुन्द दशन सोहाये है। नागा उदासीनके पियारे इष्टदेव गुरूज्ञानरूप जिनका न तीन काल बाध है १९ कैलास के शिखर गौरीनाथ के औतार वैसे कृतफल देनहारे सदा निष्कामहै। ज्ञानसों वैराग षट सम्पती समाज मोख ऋधि सिधि आदि षट भाग शुभ जोइहै॥ इनका सो अधोपती श्रीचन्दमहाराज जिसका सो देवै शिव सोई सुख पावै है। जिनका सो पूजि सन्त देव सिद्धि काम करै ऐसे श्रीचन्द त्रैनैन को नमामी है२० जिनका औतार मेरे गुरू महाराज ईश जिनका सुनाम माधोराम वेद गावै है। बड़े बड़े यज्ञ भारतखण्ड में अपार कीने जिनको सुकृत शुभ सन्त लोक गावै है॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष सेवकनको देवै नित चार युग जीवन भवसागर तरावै है। गिरिजापति वन सम अवध मँझार माहीं अमी बन रचदीन लिये उपकार है २१ सुरपति

वन जेहि देखि शरमिन्द पावै दिव्य सुखधाम तेहि मध्य में वनाये है। जिनके तिकेरथित मण्डल अपार वसै मोक्ष हेतु पाय तपको कमावै है॥ नवतन यज्ञ नित तहां सो अपार वसै होय सुर नर मुनि आदि तहां सुख पावै है। महा उपकार कीन्हें कलिके मँझारेमाहीं जिनका सुनाम दुख तापको नशावै है २२ अमी गुरुसागर सों तीर्थ वनाये जिन तीन लोक पापनको महादुखदाई है। सुर नर मुनि आदि तिसमें स्नान करै मोक्ष सिन्धु सुख पाय जगमें न आवै है॥ जिनके सो आसरे संसार सो अपार वसै जिनको सुदया सव लोक पै अपारहै। आदि चिदानन्द घन व्यापक अकाश सम वन्ध मोक्ष रहित मायापति सात रूपहै॥ २३॥

दो॰ साखी शुद्ध कुटस्तु अज अविनाशी भवभैन॥
चिद्ध सदा होइ प्रकाशही सो माधोराम सुखऐन २४
देश काल प्रच्छेद विन जगत सिन्धु के नाय॥
मम उर आयन कीजिये करौ गुरुदेव सहाय २५
सुमति देहु मल नाशकर पद पंकज धरों शीश॥
अखिल लोक सहाय तुम कृत फल देवहु ईश २६

स॰॥ ब्रह्मपुत्र वसिष्ठ उदार भये जग मुनिगन माहिं सो महाकुलीने। ज्ञानकी मूर्ति रचे अवजासन उत्तम जानिके कारक कीने॥ त्रिलोकी विषे सव जीवन के हित धर्म मर्यादसो थापन कीने। जिनकी शुभरीति लोकान्तरमें कोइ टारसकै नहिं करत नवीने २७ सूरज वंश विषे कुलपूज्य भये सव राजनको धर्म ज्ञान दृढ़ाये। जिनके उपदेशको पाये भले रघुवंशी सवै चिद मोक्षको पाये॥ शुद्ध सनातन ब्रह्म चिदानन्द जिनको अचारज ईश वनाये। यहि भांति वसिष्ठ कुले माधोराम नरायन राम अवतार सुहाये २८॥ क॰॥ सुख तनधार शुभ जगमें प्रकाशभये वालपनमाहिं जगदीन शुभलायकै। कुलका प्रभाव देवी सम्प्रदाको धारलीने योगमें अरूढ़भये मन लायकै॥ मन वुधि इन्द्रीआदि सवको दमनकीने तपोधन जिनका एक सुखदायकै। जिनको सुप्रापदको महासुअपार सुख योगीराज जिनके सो माया वसे पदके २९ अवजासन स्वरूप माधोराम जगईश ब्रह्म तिनका उदार देख जानै सुखदायकै। भवमण्डल मँझार माहिं चराचर जीवनको हमरी समान यह सदा रहै सहायकै॥ यहि

भांति चिदाकाश उरमें बिचार करै आपन नाम तिनमें भजोगे शुभ फेरिके । नाम सुनरायनराम मोक्ष देवै पापहन जग से अचारज सुथापै सुखदायकै ३० कुलगुरूकी मर्याद माहिं निशि दिन बास करै मुन सरदार अब जग सुखदाई है । गंभीर घुन शीतल सुभाव निरवेद रूप वेदविहित जीवन को धरम दृढ़ायकै ॥ जिनका सुपद पाय कल जीउ होय मोक्ष माधो ब्रह्ममाहिंमिले फिर नाहिंआवै है । निरगुन स्वरूप माधो रामका अखंड जानो सोइशुध बोध नित चेतन ब्यापी है ३१ अंतस अभास के सहित जोइ चेतन है जीवका स्वरूप बुध ताहि को बखानै है । खान पान लेन देन जग में व्यवहार सब बास के सहित सभबुद्धि में रहावै है ॥ अपना बेकार दुख जीवत बिहार जग चेतन स्वरूप सुध साखिये अरोपै है । चेतन असंग नित ब्रह्मको स्वरूप जानो लेशमात्र देह इन्द्रैतामें न विकार है ३२ जैसे महाकाश घट मठ के संयो गनते नाम रूप तिसके सो और भाति भासै है । घट मठ दृष्टीकाहित आगे जो विचार कर महाकाश एक व्यापी नितसे सराह है ॥ तैसे सुखमथूल का संयोगपाय चेतना अज्ञानी नित पुरुपनको जीवत प्रमान है । ज्ञान ते अज्ञान काह उरते हटावे जब माधोराम चिदानन्द सोइ भान होय है ३३ शुध मायाका संयोग पाय माधो का स्वरूप चिद जगत के हेतु नित ईश्वर कहावै है । भेद दृष्ट वाले पुरुष बासनासहित नित तिनकी उपासनाको विधिसे कमावै है ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष तिनकानाश देवी ईश विविध अवतार धर लीलाको दिखावे है । महासुखदायी नित तिनके वेद औ पुराण कहै गावै सुनै उरमाहिं भाव जोहै राखै है ३४ पाय शुध ज्ञान उर अंतमाहिं मोक्ष होय करमके अधीन देश काल नहीं पावै है । जाते माधोका स्वरूप नित निर्गुण सर्गुण जोइ जीवन के उपासनाको लायक दोनों रूपहै ॥ यही निज जानकर मुनि सुनरायनराम जीवनको कल सुख नाम सो जपावै है । काल कलनासे रहित आप मोक्ष बन्द न्यारे सदा माधौका स्वरूप सुखदायक प्रकाशै है ३५ माधौकी सु लीला नित सबको सहाय करै जिनका सुभेद कल कोइ नहीं जानै है । हित अनहित नित सबको सहाय करै इहांसे रहित ज्ञानरूप दयासिन्धु है ॥ विघ्न अविद्या मल्क ब्योर माहि हनो सुमती प्रकाशो मेरी तुम सुखदायी है । ऐसे माधोरूप सुनरायनराम मुनिराज तीन पद पंकजमें बन्दना हमारी है ॥ ३६ ॥

चौ० ॥ माधौ ग्रन्थ रचौ सुखसारा । जेहि सुन उर में होय विचारा ॥ सब सुखदायक माधौरामा । तिन मिल कथाकहौ सुखधामा ३७ गुरु विवेक विन होय न ज्ञाना । ज्ञान बिना नर नहिं कल्याना ॥ माधोराम दयाकर जबहीं । विवेक ज्ञान पावै नर तबहीं ३८ दया भगत तिनको सुख पंथा । तिसके पावन हित यह ग्रंथा ॥ याते स्वधामानकी ताई । यह शुभ ग्रंथ लखौ सुखदाई ३६ आदि अंतलै इसके माहीं । ज्ञान वैराग और कछु नाहीं ॥ नामरूप त्रैलोक मँझारा । चिद माधोराम एक सुखसारा ४० याते तिनकी अस्तुति जोई । ईश ब्रह्मसम इसमें होई ॥ गुरु ईश्वर में भेद सुनाहीं । वेद पुरान कहे भवमाहीं ४१ निर्गुण सगुण ब्रह्म विभेदा । तिसमें सगुण गुरु निरखेदा ॥ शरीरसहित बुध सरगुन जाने । विवेक रीति से ब्रह्म पछाने ४२ भवसागर लंघनके माहीं । सगुण गुरु विन उतरे नाहीं ॥ गुरुविन भवनिधि तरै न कोई । जो विरंचि शङ्कर सम होई ४३ यहि विधिके दृष्टान्त घनेरे । गुरु की महिमा अधिक सो टेरे ॥ गुरु शिष्यहोय गुरु भक्त कमावे । आस्तिक है गुरुकी रतिगावे ४४ कहन योग लक्षण नहिंपावै । तौभी गावै दोष न आवै ॥ गुरु अस्तुति बुध अधिक बखाने । सुनि अचरज नहिंकरैं सयाने ४५ गुरु समान दाता नहिं कोई । दृष्ट अदृष्ट देह फल सोई ॥ सगुण गुरु याते अधिकाई । निज निर्गुण पद देत लखाई ४६ इसते गुरुको अधिक पछाने । तिसकी भगतको करै सो जाने ॥ विन गुरु भगत जोई प्रवीना । आतमज्ञान न पायक दीना ४७ आतमज्ञान बिना सुख नाहीं । जन्ममरण सबलोकन माहीं ॥ यातेचिदघन माधोरामा । तिनतेपावे सुख विश्रामा ४८

क० ॥ तिनकी सो अस्तुति यह निखिल ग्रंथ जानो नूतन प्रसंग यामें अमी सुखदाई है । प्राचीन ऋषि मुनि पद यहि उत्तम जो सोइकल गुरु संत माहिं सो प्रयोग है ॥ माधोराम कासुभक्त शिष्य प्रेमी जो उदार होय तिसताईं ग्रंथ यह महा सुखदाई है। नारायणराम मुनिराज संत ऋषि बुधिमान तिनका सम्बाद यामें अमीकी समाने है ४६ संत ऋषि उरमें अज्ञान दुख तापरह्यो मुनिराज तिसको नशाय सुख दीन्हो है। ज्ञान कासो पायऋषि चित निहतापभये अपना स्वरूप चिदानन्द लखपायो है ॥ अंत माहिं तन तजि माधोराम माहिंमिले मुनिके प्रसादकर जगमें न आयेहै । जोई सुने पढ़े याहि उरमें विचारधरै ज्ञानसहित मोक्षपाय भगमें न आवैहै ५० इतिउपरान्तप्रसंग॥

दो० सत चित आनँद ब्रह्मअज अविनाशी ज्ञान सुखहेत ॥
विभोनाम सवरूप में सकल प्रपञ्च निकेत ५१
व्यापक सकल अकाश जो एक अंशमें चन्द ॥
तिव माया है ब्रह्ममें जगकारनी अनन्द ५२
हेम विषय जिमि कटक है वार रजो अह फेन ॥
तिव जगमाया ब्रह्म में निगम बखानत बैन ५३

चौ० अभास सहित माया विभू रचतन । मिले परस्पर जिवघृत छीरन ॥ स्वयं प्रकाश ज्ञान सुखराशी । चिदानन्द यकरस अविनाशी ५४ तिसको मायावशिष्ट है नामा । कारन भवमण्डल के धामा ॥ जग उत्पति पालन संहारे । मायेवशिष्ट सो करत अपारे ५५ माया उपादान जगकेरा । तिसमें चिदकाविवरतनियारा ॥ ईशनाम सो ताहि कहावै । जिसमें मुनि सब ध्यान लगावै ५६ सरगुन ब्रह्म निगम तेहिगावै। जाहि नाम सुनि अघभय पावै ॥ जग पालन हितलै बहुरूपा । चरित्र देखावै सुख सो अनूपा ५७ तिसकी माया अन्त न पावै । देख चरित्र मुनिभय अकुलावै ॥ सो मायापति ब्रह्म स्वरूपा । देह धर्यो कोशलपुरभूपा ५८ भव पालत देवन सुख कारन । धर्मघातकरिपु किहिननिवारन॥ देव दैत्य अघा पुन्य सो जोई । तेहि फल राम धरे तन सोई ५९ याते सुर सन्तन सुख दीन्हे। असुरन हने दुखित बहु कीन्हे ॥ जिनके जैसे करमहैं जोई । तेहि अनुसार दिये फल सोई ६० हानि लाभसे सदा नियारा। फलदाता भवकेर अगारा ॥ ईश्वर करम अकरम ते न्यारे। याते मिथ्या वपु नहिं धारे ६१ हित अनहित तिसका कोउ नाहीं। चिदघनराम विभू सबमाहीं ॥ अध्यारोप वशिष्ट मँझारा। जग उत्पति पालन संहारा ६२ त्रिगुनी माया मिसरत माहीं । जगत न होय जीव सुखनाहीं ॥ याते शुद्ध सतोगुणमाये । तिसमें रामके तन सुख छाये ६३ ब्रह्म चिदानँद शुद्ध प्रधाना ।दाशरथी वपुधरे सो नाना ॥ सन्तन हितसुख अवध में आई । सुन्दर तनधारे रघुराई ६४ नौमी शुक्लपक्ष मधुमासा। ब्रह्मानन्द भये सुखरासा ॥ जेहिदिन राम जगत तनधारा । मंगलरूप भयो जगसारा ६५ भवमण्डल के दुःख नशाये । जिमि आदित तम मारभगाये॥ ऋषि मुनि देव दरशकी ताईं। अवध विषय चलिआये धाई ६६ परमानँद का दरशन कीन्हे। कोटि जनम शुभकृत

फल लीन्हे ॥ सुमनवृष्टि चिदघनपर वरषैं । जैजै शब्द करैं सुर हरषैं ६७ नौमी तिथि मिल्यो ब्रह्मस्वरूपा । तेहिदिन पर्व सो लग्यो अनूपा ॥ सुर नर मुनि सब सरयू नहाये । अघहन मोक्षअचल सुख पाये ६८ चारखान वह घरी जो नहाये । कृतफल तन तजि ब्रह्म समाये ॥ वेद पुराण स्मृति सब जोई । तनधरि तेहि दिन आये सोई ६९ परबअपार महासुखदाई । थापे रामनौमी नम गाई ॥ तबते राम सो नौमी परभा । जो भंजे नहिं आवै गरभा ७० ब्रह्मानन्द पौर खुलगयो । राम मनोहर वपु तहँ लयो ॥ मोक्ष हेतु शुभपरब है जोई । प्रति संवत सुख आवै सोई ७१ सुर नर मुनि ऋषि परबको नाये । अवध बिषे चलिआये धाये ॥ माधोबन नारायन रामा । तिनके आश्रम करै बिशरामा ७२ अवध मँझारि महासुखदाई । स्वरग लोक मानों छवि छाई ॥ भोजन छाजन बहुत प्रकारा । आदर देवै मुनि सरदारा ७३ हरषसहित यक मास नहावै । कोटि जनम अघ ताप नशावै ॥ दान मान पूजा बहु पाटन । भगती सहित करै मुनिराजन ७४ यहिविधि मुनिते बिदाको पाई । निजनिज आश्रम सब चलिजाई ॥ द्वादश माधो विपिन मँझारा । रहैं भीर सुख देख अगारा ७५ त्रिविध प्रकार तहां सुखरासी । ऋषिमण्डल नित बसै उदासी ॥ वेद अर्थ के जाननवाले । उदासीन तापससुख आले ७६ जटाजूट सम बलकल धारे। अंग विभूति शिवऋषि सारे ॥ जगत पदारथ तुच्छ विचारे । इन्द्रीदमनै बिषय संहारे ७७ जलधारा आदिक वहु करई । योग यज्ञ कर तन तप कसई ॥ पंचअग्नि सेकै मन मारे । उग्र तपस्या करै अपारे ७८ इसमें शंका नहिं बुध मानू । यह लक्षण सन्तन के जानू ॥ वेदरूप गुरु ग्रन्थहै जोई । प्रातःकाल प्रकाशै सोई ७९ विविध प्रकारके अर्थ सुनावै । ऋषि-मण्डल तहँ बैठ सोहावैं ॥ ज्ञान वैराग भगति शुभकरमा । आश्रमवरन निरूपै ध-रमा ८० वर्णाश्रम की कीरति जोई । प्रथम कमावे सामक सोई ॥ मन्त्र शुद्ध ज्ञान को पाई । ब्रह्मरूप होवैं सुखदाई ८१ याते उदासीन बुधिसागर । बेद लोक से सदा उजागर ॥ जिनका वेष जगतमें अनूपा। रामचन्द्र लीन्हें सुखरूपा ८२ तापस वेष विशेष उदासी। चौदह वर्ष राम बनबासी ॥ सो यह वेष उत्तम सुखदाई। माधौ वन में रहैं अधिकाई ८३ पाणिजोर शुभपदमलगाये। मृगछाला सब तलेबिछाये॥ कोउ कोउ दरभ असीन सुहावे । वैराग देह धर तहँ सुख पावै ८४ चिद जड़ग्रन्थ

भेद दुखदाई। करै निवारन ज्ञानहि पाई ॥ यहि विधि अभ्रमूल तम नासी। ब्रह्मवित्त तहां सकल उदासी ॥ ८५ ॥

क० ॥ शीश माहिं जटा शोभै मानों सब गिरिजापति एकदश माल सब कण्ठ में सुधारे हैं। अंग में भसम चढ़ि शुभ श्याम वारिदसों पाणि जपमाल सोहै शांत सुखधारे हैं ॥ शुद्ध ऐन छाल ओढ़े कोउ बलकल धारे ऋषिन की रीति जो सनातन को सेवै हैं। लघु जीरन उमरवाले कोई दिगपटा धारे वेद सब ग्रन्थनके पार भले लीन्हें हैं ८६ कोऊ सो वेदान्त बोलै पूरब मीमांसा कोइ न्यायका सो गूढ़मत कोई ऋषि भनेहैं। सांख्ययोगमें प्रवीन सुपतंजलि बखानै सुविसेसकाकनादि के सुमतिको बखाने हैं ॥ कोऊ सुपुराण बोलै बहुत श्यामा श्रुती माहिं आपनाइ भास बिषे सब बुद्धिमानहैं। शान्त सुखदाई ज्ञानी उदासीन संत सब बितंडा आदि छोड़िकै अदध्यातन बिचारैहैं ८७ ॥ स० ॥ यहि भांति प्रमाणनके अनुसार सो तत्त्व बिचारिकै मोक्ष कमावै। शुभकरमन में दिन अन्तकरै फिर सोव निज आश्रममें चलिआवै ॥ मन बाक इन्द्रिय सब रोक भले सुख योग समाधि विषय टिकजावै। उठ प्रातसमय सुसबै ऋषिमंडल फिर शुभ करमन में लगजावै ॥ ८८ ॥

चौ० ॥ यहि विधि ऋषिमण्डल समुदाई। माधोभवन बसै हमेशाई ॥ अतिअपार तहँ जग तप देखी। सुरपति चित में डरे बिशेखी ८९ पर सो उदासीन ऋषि सारे। ब्रह्मज्ञानमें निष्ठाधारे ॥ ब्रह्मलोकलै प्रभुता जोई। मायामात्र समझै सोई ९० मेघ विषय जिमि तडिता चंचल। तिन नाम रूप सब लोकन निहचल ॥ इन्द्रलोक सब लोकहै तुच्छा। तरंग समान करै को इच्छा ९१ निश्चल एक ब्रह्म सुखराशी। तिस तजि और सकलहै नाशी ॥ सबकर जीवन श्वास अधीना। दिन दिनबिषे होतहै खीना ९२ जिमि घट फूट जल सरवत जावे। तिमि प्रान एक दिन बिज सम रहवै ॥ पुनि फल मानों तन शुभ पावै। मोक्षबिना जग बिरथै जावै ९३ याते तिरथा लोक के माहीं। असंयोग लायक कुछ नाहीं ॥ भोजपत्र सम गिरत सो जावै। नदी प्रवाह होत जिमि आवै ९४ बाल वृद्ध यौवन धन दारा। नामरूप संसार असारा ॥ मायारचित जगत दुखमाहीं। ज्ञान मान निष्ठा करै नाहीं ९५ भव सुखहित नहिं करम कमावे। उदासीन जगमाहिं रहावे ॥ इन्द्रन सुख लिये करम जो करई।

जनम मृत फांसी गल धरई ६६ जिनके हिरदय बिमलबिचारा। माधोरूप लखें सुख सारा ॥ ब्रह्मवित सेवै सोइउदासी। सुरपति माया जिनके दासी ६७यह बिचार सह ऋषिगण सारे। माधो बिपिनमें बसैं अपारे ॥ चिदघनरूप नारायण रामा । धरम ध्वजा तिसमें सुखधामा ६८ महाबुद्धिमान मुनिसरदारे। जिनके हिरदे सन्त पियारे॥ सात उदार ज्ञान तपरूपा। गुरुरीति सुखकरै अनूपा ६६ ऋषिमण्डल पूजै मनलाये। जैसे वेदविधी शुभगाये॥ आदरदान मान बहुदेवै। जिसमें ऋषिगण प्रसन्नहोवै १०० बिविध भाँति भोजन पकवाना। तपबलते सब करै समाना॥ पाणिजोरि सब ऋषिन बुलाई। भोजनदेवै बहुसुखदाई१०१ जिनका अशन सो अमी समाना। अघहन सातकरै कल्याना॥ चितचंचलता सकल बिनाशै। स्वच्छबुद्धि निरमल परकाशै१०२ ब्रह्मातम विचार भ्रम खोवै। चतुरहोय जिमि अलरस लेवै ॥ फिर विषयनमें चित नहिं भरमै। माधोरामको पावै मरमै १०३ ॥

क०॥ ध्यानकाल माइ कुल धनुषपर चोपलाये असना अधिकारी सब जंगम सुनावै है। सैकड़ों हज़ार ऋषिमण्डल अपार नित पाकशाला माहिं मुनि पंगति लगावै है॥ ऋषिनकी पाँतिकर पाकशाला शोभै जिमि तारनकी मालकर रवियोम छबिपावैहै। देवभोग व्यंजनसो भोजपत्र माहिं संत सबऋषि अग्रभाग प्रेमसे टिकावै है १०४ सुतकारनके हाथ दुर्योधन समान खुले चिन चक्रवृधवाले पारस समान है। ऋषिनके आगे सब प्रेमसे बरतावे धाय मानों सो कुबेर कल्पवृक्ष तनधारे है॥ नारायणराम मुनिराज ऋषितट माहिं शोभै पूरबदिशामें जिमि सूर छबिपावै है। प्रेम भक्ती के आधीनहोके सन्तनको दरशकरै अमीसम व्यंजन सो ऋषिन देवावै है १०५ चित ज्ञानरूप प्रेमभक्ती के प्रेरेहुये निज पाणिलैके मुनि आपही बरतावै है। लक्ष्मी के पति जिमि देवन बरताये अमी तिसकी समान मुनिराज भागलावे है॥ जिन तारनके मध्यमें शशांक शुभ गवनकरै अमी व्यंजन हाथलिये महा छबिपावे है। इच्छानुसार सब ऋषिनको भागदेवै जिनका सुपदवार जगफन्दकाट है१०६ जिनका सुनामलिये अजामिल मोक्षपाये मोढ़के भवसागरसो नाहीं दुखपावे है। ऋषिनको भागलाये आतमा न तिष्टजावै मान अपमान जिनकरे हैं विध्वन्ससे हैं॥ माधोरामके स्वरूपका सो वोइनर पावै ऋषिराजकी समान सोइ धरमनको पालै है।

वेदनकी धुनिऋषिमण्डल अपारकरे कहांलों बखानै कबि छबिसो अपार है १०७ मानो देवऋषि सनकादिक सो नारद आदि अजके सो ओकमें निगम जिमि गावे है। जिनकी सो धुनिसुन पाप महा भयपावे माधो बन त्यागकर तहाँ न रहावे है॥ भोजपत्र माहिं संच अमी सुखदाई भोज मुनिराज आगे सुश्कारसो टिकावे है। ऋषिनसमान सो नारायणराम मानहारी माधोरामका प्रसाद मान अशनको पावे है१०८ यहिभाँति सन्तन की नित्यप्रति सेवाकरै अन्तमाहिं वेद श्रुति बोलके पधारे है। फिर निज निज शुभकर्मनमें लागजावे योग तप तनकसे माधो बनसेवे है॥ माधोराम भवनमाहिं सतयुग बासकरै कलिका सो नामरूप लेस कहुं नाहीं है। दश चार भुवनमें भारतखण्ड उत्तमहै तिसमाहिं माधोबन महासुखदाई है १०९ जहाँ तहाँ देख अति बन्दनके हेतु सब माधोभवन बन्दनाको नाश मोक्षकरै है। धनसो पुरुष पुण्य मानों तनपाय जग जगत् संन्यासकर सन्तरूप धारे है॥ माधोराम भवनबस माधौकेसो गुणगावे तिनका सो पुण्य सुख शारद न जानै है। तहँका प्रभाव सुधासिन्धु सो अपार महासुखदायी कलिकोट कहा सो बखाने है ११० ऐसे बन के सहित सो नारायण माधोराम काहि तिन पदपंकज में कबिकी नमामी है। नित ऋषिनके सेवनसो मुनिराज ईशकरै ज्ञानसों वैराग मोक्षभोग सुखदेवे है॥ देवी सम्प्रदाके सहित माया इसरज पुण्यफल मुनिकी समान जग औरनको दूरहै। तहाँ पुण्यके प्रभावनते धन धाम राजपावे देवी बिना मोक्षहित सुखनाहीं पावे है १११ तिनका सो भोग बारबधूकी समान जानो अन्त अधोगती दैवी बिदबिन जावे है। अथवा सो धन धाम सन्तनके हेतुजावे लोक परलोकनकी खियाती उरचाही है॥ सन्तनकी दयाकर कामनाका फलपावे मोक्ष सुखधाम कदाचित नहीं पावे है। जगदान आदि करै मनमें गुमानराखे निष्फल जावे जिमि गजका सनानहै ११२ छं॰॥ याते विचार विना धनत्यागन मोक्षमें हेतु नहीं दुखपावे। विचारबिना पशुऊ धनत्यागत सो निरवेद नहीं कोउ गावे॥ जो कछु कर्म बिचारते सिद्धहै नाहीं बिबेक बिना भयपावे। शुभाशुभ करमन माहिं भ्रमै अँग आपगले दुख फाँसीलगावे ११३ याते मोक्षचहै शुभ सन्तन सेवै लोक परलोककी आश हटावे। शुभ शास्त्रबिचारै संगकरै शतभव दुख संगल याते नशावे॥ प्रेमभक्ती अपार महासुखदायक सन्तनके

पदकी सो कमावे। पुण्य अपार फलीविंत होय नरायणराम मुनीसम लावे ११४
चौ० ॥ जिनके इष्टदेव हैं सन्तन। तिनकी प्रभुता क्या कहे कवितन ॥ सन्तन हिंत तन मन धन वानी। किहननिछावर मुनिवर ज्ञानी ११५ जिनकी रीति जगत चलिआई। सन्त भगत जानै सुखदाई ॥ नाना वस्त्र भूषण वृन्दा। कर उपाय लै बहुत योगिन्दा ११६ सब ऋषिजनके करै निवेदन। जिनके इष्ट सुसन्त विसेसन ॥ है गै वाहन करवसिअन्दन। जो सुखदै दुखकरै निकन्दन ११७ हीरा मोती कञ्चननारी। हेमथालधरि पूरसँवारी ॥ माधोवन ऋषिमण्ड उदारे। तिनको अरपै मुनि सरदारे ११८ पाणि जोर फिर करै निवेदन। भगवत इच्छा लेव विसेसन ॥ यहि इसरज माधो कर सारा। सन्तनहित सुख रचे अगारा ११९ आप चिदानंद शुद्ध प्रधाना। जीवन दुख हनि करे कल्याना ॥ याते यह इसरज शुभ जोई। अपने समझो ऋषिगन सोई १२० मुझको भी अपनी सेवकाई। जानो उरमें है सुखदाई ॥ माधोराम जो ईश हमारे। चिदघन व्यापक जगत मँझारे १२१ तिनकी आज्ञा लख सुखदाई। मैं उरधार करौं सेवकाई ॥ याते सब माधोकी माया। लेहु ऋषी हमपर करदाया ॥ १२२ ॥
सवैया ॥ यहि भांति मुनिराजन लैकै उपायन सन्तनके पदमाहिं निवेदै। मान अपमानको त्यागै सदा जिनके उर नाहीं अज्ञान सुखेदै ॥ दीन सुभाव सुसन्तनके ढिग भक्तके रूप दिखावै निरखेदै। भवमण्डल को उपदेश करै चिद आपसो ज्ञान स्वरूप अभेदै ॥ १२३ ॥
चौ० ॥ यहिविधि मुनिकी रीति सो देखी। ऋषिगन प्रथमहिं हर्ष विशेखी ॥ मुनिराजनको मनमें सराहे। जिनके वनवम सत्र सुखजाहे १२४ माधोवनमें ऋषिगन सारे। उदासीन तपकरे अगारे ॥ संसार पदारथ हेतु सो जानी। तिसमें दृष्टि करै नहिं ज्ञानी १२५ माधोराम एकशुभसारा। तिनको पाय तजै संसारा ॥ जे माधो के सुख नहिं जानै। तेईभवदुखमें लपटानै १२६ ॥ है गजमोती नाहिं सो लेवै। राजऋषी पर परसन होवै ॥ भगवन तुम्हरा दरशन जोई। हम सबको दुर्लभ है सोई १२७ तौ पद पंकजकी शरनाई। हम अपार पावैं सुखदाई ॥ हम पर दया यही मुनि कीजै। हमरे हृदय निवास करीजै १२८ सुधासिन्धु नारायण रामा। यह प्रसाद दीजै सुख धामा ॥ संसार रोग दुख मोह निवारहु। अचल ब्रह्म सुखसिन्धु मिलावहु १२९ चिद

घन माधो मोक्ष सुखपाई। भवनिधि दुख हम नहीं भ्रमाई॥ माधोराम विष्णुभगवाना। तिनके तुमहौ रूपनिधाना १३० कसन करौ मुनिवर सनमाना। वेद पुराण सकल तुम जाना॥ तुम्हरी रीति सदा चलिआये। धरम मर्य्याद करत सबआये १३१ जगमें धरम स्थापन जोई। हे प्रभु सकल कहो तुम सोई॥ तुम विन कौन सो जगमें सहाई। सो तन धन सब संतमें लाई १३२ तुम्हरे धाम महासुखपावै। हम निर्भय सब हरिगुण गावै॥ क्या हमको दुर्लभ जग रहई। जिनपर तुम दयाल मुनिराई १३३ यह बन सुखनिधि जो चलिआवै। चारपदारथ करतलपावै॥ तुम हमको दुख कहां प्रतिकूला। जो हमरे हित तुमअनुकूला १३४ याते तुमको हमरी जोहारे। हमरे हिरदय बसौउदारे॥ यहिविधि ऋषिगन करैं सन्माना। मुनिशरदूल बहुत बुधिमाना। १३५ हर्ष सोगते रहैं अतीता। ब्रह्मानन्द मगन मनजीता॥ मान पान जगमें दुखदाई। माधौ एक लखैं सुखदाई १३६ और देशान्तर ऋषि मुनि जोई। माधौवन चलिआवै कोई॥ तिनकी पूजनकरैं अपारे। कबि बरणत नहिंपावै पारे १३७ बड़े बड़े यज्ञनको कीने। तिनकी कथा बहुत कवि कीने॥ महाअपार न पावैपारे। जे कबि जग उदारबुधिभारे १३८ प्रेम मगन होय फिर कबिगावै। थाह न पावै मन पछितावै॥ कबि बरणत भे लज्जित मारी। निजबुधि लखि रहिजाय बिचारी १३९ माधोरामकी कीरति व्यवहारा। शेष गणेश कहत नहिं पारा॥ याते तिनकी लीला जोई। महाअपार सिन्धुअमी होई १४० ताते कहा मैं पायो पारा। जो पिपील नहिं सागर पारा॥ अपार यज्ञ माधौ जो ठाने। तिनकी कथा नहिं हाथ बखाने १४१ तिनकी प्रभुता किमि कहिजाई इस विभूति वेद जो गाई॥ तिनके घरमें रही लोभाये। जो जीव चराचरको सुखदाये १४२ माधों भवन नरायण रामा। कामधेनु कल्पवृक्ष समाना॥ जो कोई आश्रममें चलि आवै। मुहँमांगे सुख फल सोइ पावै १४३ इसमें शङ्काकरै न कोई। तप प्रभावते क्या नहिं होई॥ तप बल शेष धरे महिभारा। तपबल शम्भु करहिं संहारा १४४ जप तप ज्ञान वैराग समाना। सुखदाई कोउ नहिं बलवाना॥ याते नारायण राम मुनीशा। तप बल कारज करै हमेशा॥ १४५॥

क०॥ माधोबन माहिं निज कुटी के मँझारि शोभै विष्णुस्वरूप शान्त सुखतन धारिया। शीशमें जटा कलापै मानों श्याम बारिधि सुतपोकान्त भारी पिख पावक

लेजाइया॥ माधोराम की समान उर दया सो अपार धारे धरमके पालनमें दृष्टि है अपारिया। जिनकासो पद पाय अघमूल नाश होय जैसे मारतगड जगकरै तम हानिया १४६ माधोराम गुरू विषय निशिदिन ध्यानकरैं जिनका स्वरूप चिदानन्द सुखदाइया। जल थल तीनलोक कीनहुपसार जिमि अनादिसो पुरुष अवगति अविनाशिया॥ लोकचतुरदश में जिनका प्रकाश अति हस्त कीटबीच माधोराम सो समानिया। राव रङ्क सबनोंका एकसर जानै सदाअचल अद्वयतअलख अवगामिया १४७ सब घट अन्त्रमेंयामी साखीरूप नित अक्षैरूप रहित आश्रम जातते नियारिया। राग रंग रेख नाहीं देशकाल न्यारे चिद जीवनको मोक्ष करैं आप अबकारिया॥ शत्रु मित्र जिनका सो तात मात कोइ नहीं नीर दूररहित ज्ञानमान विभू जानिया। जिन आत्मास्वरूप जानै ज्ञानीकी नजीक सदा अग जग दुखमूल तिनमें सुहानिया १४८ यहि भांति जिनके सो ज्ञान भयो हिये माहिं साखी शुधब्रह्म माधोराम कासो जानिके। संसार दुख सिंधुमहा तिनके नजीक नाहीं माधोके स्वरूप माहिं मिले भवत्यागके॥ तिनको विछोड़कर मातकुख नाहीं आवै सरी नहीं डोलै जिमि सिन्धुमें समायके। नामरूप माहिं तिन चेतन स्वरूप हैके सबको प्रकाशकरै विभू सुखदायके१४९ याते माधोके स्वरूप काहिं योगी नित ध्यान करैं वेद औ पुराण तिनकहै सो बखानके। नाम रूपरहित अज सदा सो अदिष्टभने अद्वयतसो अखगड ब्रह्म आत्मा सुखदायके॥ सूक्ष्मस्थूल नाहीं मूलसो अज्ञान नाहीं समसृष्टि बृष्टीपनोरहित राखै प्रकाशके। ईश पुनि सुतब्राट प्राग ,तैजस विश्वभोग योगबन्ध मोक्षरहित सबलायकै १५० जाग्रत अवस्था माहिं नाना परपंच भाषै बुद्धिका बिलास नामरूप सब जगहै। सूक्ष्मस्थूलका सुबुद्धी उपादानहोय विवरण चेतनका तिसमें प्रकाशहै॥ जो स्वप्नमें भोगनाहीं भोगनसों हार नाहीं तोभी एक चित्र सुचित्र बुद्धीजने हैं। सुषुप्ति अविद्या में मनीषा जब होय लीन नाम रूप भेद दुख तहाँ न रहावै है १५१ याते बुद्धिसों अविद्यारूप जग उपादान होय सुख दुख निश्चयरूप बुद्धिको विकारहै। अपने दृष्टांतका बुद्धिका जो बोध होय कारन सहित बुद्धि आप नाश पावै है॥ जिमि आरन मँझार माहीं दवा का प्रचगड होय आरन दगध कर आप शांत होवैहै। अविद्यामूलसहित बुद्धि ज्ञान कर नहिं बाधै तबतक जगत अज्ञानी को

अपारहै १५२ अनादि सो अविद्या नित चेतनमें वासकरै तिसको प्रकाशै चिद आप सो असंगहै। संसार के सहित सो अविद्याका स्वरूप मिथ्या ज्ञानी के विचार माहिं तीनि काल नाहीं है ॥ मनोराजकी समान बुद्धिरचित सोपन जग हानि नित प्रती होय माधो एकरसहैं। तिनका स्वरूप ज्ञान बिन नापछान सकै जोई लख लेवै कहन योग न रहावैहै १५३ मूक जिमि मिष्ट खाय पूंछे से बतावे नाहीं माधोका स्वरूप ज्ञानी लखै ज्ञानी जानैहै। मन बुधि बानी आदि तिनको न जान सकैं कारज अविद्या के अविद्या मिथ्यारूपहै ॥ चेतनासों ज्ञानरूप ये न ते न्यारे विभू जैसे महाकाश घटमटमाहिं न्यारेहैं। तैसे माधो का स्वरूप सूक्षम स्थूल ते न्यारे बीच तिनहीं के ज्ञानकर मोक्ष सुख पावैहै १५४॥ क० ॥ जाके हिये यह ज्ञान प्रकाशित अज्ञान तिमिर सब देत नशावै। ब्रह्मस्वरूप स्वयं परकाश असंगन ते कर शांत न पावै ॥ तिसमाहिं जगभूतभविष्य नहीं व्रतमान देखै सब मिथ्या जनावै। आतमनन्दको पाइ भले ज्ञानी जगत् विषे नहिं आशकोलावै १५५ मनोरथमात्र जगत विलाससो ताकी प्राप्ती निविरती नचहन्दे। देखे सुने न सुने सब देखत सब रस लेतहै लेतनस्वादे ॥ नशापर सुगन्धसों बोलै नहीं पुनि सूंघै स्पर्शकरत विवादै। न त्यागै न संग्रहतजै मलत्यागै न धोवै न हरिअर्घ्यावत पादै १५६॥ क० ॥ यहिभाँति ब्रह्मव्रत इन्द्री ते युक्तहोयके भोगनको भोगै नितभोगे निसंगहै। मैंतो इन्द्रिय से नहीं इन्द्रिय सो मेरी नहीं साखी सो कुटस्त मैंने तिनका प्रकाशी है ॥ जिमि सूरका प्रकाशपाय लोक सब कृतकरै सूरज असंग तीनकाल नित रहे हैं। तैसे मन बुद्धी दश इन्द्रिय पंचप्राणमिल आतम ब्रह्मभूप आगे नृत्यको दिखावे है १५७ आत्मा असंग नित सुख निर्विकार रहै सतो अंशभूतनते अन्तःकरण जनहै। सतो रजोअंशनते ज्ञान कर्म इन्द्री प्राण देहनाश रूप पंचभूतनका पूतहै ॥ त्यागै विषय भोगै इन्द्री आतम सुखी दुखी नहीं जैसे मृगवारों मारूथलनभी गावे है। याही निश्चय ज्ञानी केसो हियेमाहिं बासकरै करता सो दीखै कृत करता सो नाहीं है १५८ जनकसो आदि सब भूतनमें राजकीने जगत पदारथको संग्रह सब कीनेथे। विविधप्रकार सब राजनको सुखलीने अन्तरमें शांत सुध कौल जिमि वारथे ॥ अन्तके समयमें देह प्रालब्ध डार फल संशयरहित जनक विदेह मोक्ष पायेथे। शुकदेव

आदि सब भोगते निराशभये जगतमें दोषदृष्टी नेकभाँति कीनेथे १५६ दत्तात्रेय शुकदेव जड़भरत आदि विकेत विदेहकी समान सो निर्वाण सब हुयेथे । प्रालब्ध के अधीन सब ज्ञानिनके चेष्टान्यारे जीवनमुक्त माहीं भेद सदा रहेथे ॥ ज्ञानकासुफल जनकादि शुकदेव सब एकसम पायके निसंश मोक्षहुये थे। यहि भाँति जगमें अनेक बुद्धि ज्ञानवान त्याग संग्रहकर अन्त माधोमें समाने थे १६० ॥ स० ॥ जिस माधोरामके माहिं बिषे सब ज्ञानी विदेह सो अन्तमें होवै । सोई नारायणराम मुनीराजन माधो स्वरूपहै माधोको सेवै ॥ अन्त शुद्ध सो शान्तमहा जगजीवनके हित करम कमावै। सृष्टी अचारजको मत यही सो जीवनको मोक्ष हेतुमें लावै १६१ आप असंगरहै जगमें फल इच्छा नहीं भव भोगमें लावै। जैसी अवस्थामें आपरहै सुख तैसे जीवन काहि बतावै ॥ कर्म उपासन ज्ञान त्रिखण्ड कल्याणके हेतु सुगाय सुनावै । याते सुखदायक नारायणराम उपायकहै जाते माधोको पावै ॥ १६२ ॥

चौ० ॥ वेदविहित मुनि करम जो करई । जीवन हितकार कहौं मैं सोई ॥ एक समय नारायणरामा । सृष्टि बिचार किहिन सुखधामा १६३ भवमण्डल में जीव अपारा। सहजे उतरे भवसिंधुपारा ॥ सो विचार मुनि कहिन सुमनमें। कोउ उपकारी मुनिसम जगमें १६४ द्वादश राशि वेद जो गाई । तिसही में कुम्भराशि सुखदाई ॥ कुम्भसे मकरलै गंगमझारा। पर्वमहा सप्तलगै अपारा १६५ एकमास जो जन्तु नहावै । बिन प्रयास सुख अचलको पावै ॥ माधो वन ऋषिगण बुधसारे । तिस हित मुनिवर लहन हकारे १६६ अशेकऋषी तहँ आय सुहाये। मानो देव उत्तर नभ आये ॥ मुनिको नमस्कार सब कीने । महाउत्साह आनन्द सभाभीने १६७ आदरतह सब ऋषि बैठाये। शुभकृत सबके कान सुनाये॥ कुम्भराशि तीरथ नृपनाई। सबकेई चलो जगत सुखदाई १६८ गंगनहावै प्रयाग जो राजा। होय ब्रह्मभवका शिरताजा॥ जन्म कर्म अघ मृत्युहै जोई । फिर नहिं ब्यापिसके तेहि सोई १६९ तुमहिं देख सब जीवन जगमें । सुरसरि मज्जकरै शुभकरमें ॥ जगव्रत दान निमती लखकरिहै । धोय पाप भवसागर तरिहै १७० यहि तुम्हराहै पर उपकारे। निष्काम चिदानँद तुम ऋषिसारे ॥ पर उपकार जगतमें जोई। सन्त बिना नहिं करै सो कोई १७१ जगत जीव स्वारथ में लागी । जातिकुजाति बिषै अनुरागी ॥ नरक स्वर्ग सुख दुखके

माहीं । सन्तसहाय करै कोउ नाहीं १७२ सन्तबिटप सरिता गिरि धरणी । परहित हेतु इनहिंकी करणी ॥ और सुबन्धनको कर्म जानै । मुक्त उपाय सन्त एक जानै १७३ याते सन्तसंग सुखदाई। जो नहिं करै महाजड़ताई॥ सन्त गंगसम नहिं कोउ दाता । चहुँयुग मोक्षकरै विख्याता १७४ ब्रह्मकमण्डलु सुरसरि बसई । नृप-गण देव दरश सुखकरई ॥ मज्जन पूजनकर बहु देवा । अक्षय स्वर्ग भोगै सुखदेवा ॥ १७५ अधिक सतोगुण स्वर्ग रहावै । गंगप्रताप ज्ञान सुरपावै ॥ तहँ मोक्षसुख लहै अपारा । कोई इक सुर आवै संसारा १७६ याते सुरसरिकेर प्रतापा । अखिल सुख ब्रह्माण्डकी दाता ॥ जीवनहित भागीरथ जोई । सुधासरी लाये इहाँ सोई १७७ ॥

स० ॥ ब्रह्मकमण्डलु मध्य बिषे सोई भागीरथी तपको फललयाये । भवमण्डल में सब जीवनके हित मोक्ष निसेनी सो दीन लगाये ॥ त्रिलोकीकेनाथ लोभाये सदा शिवधारे जटा जनवी सुखदाये। बिषखाय हलाहल शान्तकरै सुख शान्त स्वरूप गिरिजापति पाये १७८ त्रियनयन जटामहँ गंगशुभै मानों नील अकाशमें सूरसुहाये । तिसकी शुभ किरण कैलासगिरे जिमि बिन्दुतउडुगण टूटके आये॥ गिरिराजसे आये धरापै चले तिसको पुनि सिंधुलै आनँद पाये । नृप सागरके सुत साठि हजार सुशाप अधीन महादुख पाये १७९ क्षणमाहिंबिषे तिन मोक्ष किये यह गंग सुधा जग में सुखदाये । अनेक जन्मान्तर पुन होय शुभ सोइ सो गंग पियै जल नाये ॥ पुनि फल मानुष पाय भले तन जो नहिं गंग सुधाको नहाये । भव मण्डल माहिं नरा वह मंदहै झूठे मानुष जन्म कहाये१८० तन बारुनके घटके समहै नर शुद्ध नहीं बिन गंग नहाये । अनेक जन्मांतर पाप अपार सो जाके प्रभाव सो सुने नाशिजाये ॥ जिसका महातम ग्रन्थनसे ऋषि देव मुनी सबही तुम गाये । प्राम तमरूप सुगंग अमी जग जीवन को मोक्ष सिन्धु सुहाये ॥ १८१ ॥

दो० गंग तरंग अघ हरनको बरनौ किमि प्रकार ॥
रघुवंशतिलक जग पावनो कीनों बहु उपकार १८२

चौ० ॥ गंग शब्द धुनि वेद सुहावै । जेहि सुन उरमें ताप नशावै ॥ गंग यमुन वेनी परभाऊ । बरनत शारद अतिसकुचाऊ १८३ जाके तट योगीधरै ध्याना । ताप बिषै त्यागै अज्ञाना ॥ बीतराग निर्भय नित रहई । बिबेक सहित मज्जन शुभ

करई १८४ जग व्रत दान अनिक विध करमा। तेहि तटमें शुभ करै सुधरमा॥ तहां कृत फल सुख होइ अपारा। जिमि एकईश ते जग बिस्तारा १८५ विन प्रयास तहां होवै ज्ञाना। जो भवबन्ध हने दुखनाना॥ शान्त निजातम अचल अनामे। ब्रह्म रूप सुख भेद न जामे १८६ ऐसे आतमनन्दको पाई। गंगप्रसाद शान्त सुखलहई॥ दैवी करम निगन रहै अबेरे। असुरी तहां नहीं दुख झगरे १८७ अन्तसमै तन मात्र त्यागी। ब्रह्मरूप होवै बड़भागी॥ पंचभूत बपु नहिं फिर पावै। माधौ राम विषय विलसावै १८८॥

दो० ऐसे तीरथराज की कबिको सदा प्रणाम॥
जाहि विषे तन त्यागिकै पावै सुख बिश्राम १८९

स०॥ वेद विधी जग में जोइ बरतत हे ऋषिमण्डल तू प्रगटाये। तुम्हरे उपदशे में जोई चलै सुख सो भवसिन्धुसे जात पलाये॥ द्वादशवर्ष विषे कुम्भराशि बहु संत समागम यामें सुखदाये। प्रगट गुप्त सो आवै तहां सब जो भवमण्डलमाहिं रहाये १९०सप्तपुरी चहुँ धाम सुआदिक सबका पती यह तीरथराये। सबका महातम याके अस्नान में सुर नर पावै सो वेदन गाये॥ अक्षयवटका जोइ दरश करै नर सो तनु त्याग अक्षयपद पाये। दश यज्ञ सो आयके ब्रह्मा करै तहां दरशन ताको महासुखदाये॥ भरद्वाज सो आदिक लैके महामुनि तहां निवास करै तप ताये॥१९१॥

क०॥ तीरथ परागराज लोक में प्रधान सब मोक्ष सुखधाम देवै पापनको आरी है। सुर नर मुनि सुख तहां नित बास करै अंग मल धोय करम योग को कमावे है॥ जीवनमुक्त होवै बिदेहको सुपाये लेवै जिसका सो यश सन्त वेद नित गावै है। गंग रजधानीकी सो लीला सो अपार महालक्ष्मी सो पती लोक देखके लजावै है १९२ यहि भांति मुनिराज सुरसरिकी कीरति गाय जिसका प्रमाण सब ग्रन्थनमें थानिया। सुनके सो ऋषिगण जितने को माधोबन चितमें प्रसन्न सब भये सो अपारिया॥ मुनि शारदूल की सो कीरती सब लागे गाने तीरथ महातम सुन जग सुखदाइया। धन मुनिराज कलि जीवन भवतारन को माधो चिदानन्दका अवतार तुम धारिया १९३ हमरे उपकार लिये अमी के समान बाक दयारूप मुझको सुनायो तुम उचारिया। तुम्हरी सुबाक जग गंग की समान धार पापन को काट करै देवै सुखदानि-

या । माधोराम ब्रह्मानन्द तिनको मिलाने हित हमैं उपदेश कीनो तुमका नमामिया ॥ माधो बन ऋषिगण सब बुद्धिमान तपी कुम्भराशि मज्जन को करै सो तयारिया ॥ १९४ ॥

चौ० ॥ यह बिधि मुनिनायकसरदारा । ऋषिमण्डल संग लिहिन अपारा ॥ माधो नाम सुमिर उर लीन्हें । सुदिनसहित मुनि गमन सो कीने १९५ तप प्रभाव ऋषि चले समोहे । मानों दिवा झुंड मन मोहे ॥ बलकल जटाजूट तन धारे । अंग विभूतिचढ़ी ऋषि सारे १९६ एण छाल सब बगल दबाये । छरी कमण्डलु हाथ में लाये ॥ मानों गिरिजापति रघुराई । बहुत रूप धारे तहँ आई १९७ दैवी संपति ताजि सब देशा । सब ऋषि उरमें करैं प्रवेशा ॥ मानों असुरी कर परिवारा । भवमण्डल ते चहत निकारा १९८ माधोवन में ऋषिगण जोई । तिनको प्रेरि चलाये सोई ॥ भवमण्डल कर पाप अपारा । तीरथराज बिषे संहारा १९९ और नहीं होवै कहुं हाना । प्रबल दुःखकर पाप निदाना ॥ तहँ ऋषि सब दैवी तनधारे । भव सुख हित सब चले पधारे २०० नेम निमित यम नियमहै जोई । प्रथमै करत जाय सब कोई ॥ एक योजन चलि मग ठहरावै । निशि, बिताय शुभ कृत कर जावै २०१ ॥

क० ॥ धर्मकी मूर्ती मुनिराज सूनरायणराम ऋषि मध्ये चले जावै जग सुखदानिया । जितने ऋपीश संग वेद में प्रवीन सब तिनकी सुसेवा मुनिराज सब कीनिया ॥ तीरथ पराग पहुँचै गंगातट माहिं शुभ एकान्त देश सुख माहिं डेरा मुनि ठानिया । सब ऋषिमण्डल सो जहां तहां डेरा लीने जप तप तन कसे गंग नित नहाइया २०२ मुनि शरदूल माधोरामका स्वरूप ईश वेद श्रुति अनुसार जगतहाँठानिया । मखकी सो सामग्री सो तहां सो अपार रचे सांगोपांग भलीविधि तपसे सँवारिया ॥ सैकड़ों हजारों मन समिधा समूह करै घृत अन्न मिष्टान देव सुखदाइया । मोदन बनावन हितकारक बहुत भये जिनका सुसुपकार भली भांति जानिया २०३

स० ॥ देव सो भोग अटूट अमीसम व्यञ्जन नाना प्रकार बनाये । जिसकी खसबोय सो छायरही सब तीरथमाहिं सो देव लुभाये ॥ स्वर्गलोक के सुख सो भूलगये भारतखण्ड के भोगन माहिं रमाये । मानों कुवेर भँडार सो लायकै मुनिकी सो यज्ञमें देत लगाये २०४ सब व्यञ्जन नाना तयार करै जिनकी जगमें चिदमाधो सहाये ।

जगमूल सो कारण ईश्वर माधो सब जीवनकृती फल देवै नचाये॥ चतुरानन आदि सो देव सबै जिनकी नित कीरति नारद गाये। यहि भांति विभू चिदनन्द प्रमातम तिसईश विषे मख अरपै मुनिराये॥ २०५॥

दो० तीरथवासिन सबन को बहु भोजन दक्षिणा दीन॥
सुर नर मुनि सब जंगमा सबको आनँद कीन २०६

कं०॥ यहि भांति मुनिराज मख सो अपार कीने गजदान अश्वदान देवैं सो अपारिया। मुनि ऋषि द्विज माहिं प्रीति सो विशेष राखै मुँह मांगे फल देवै करैसनमानिया॥ राजा बलिकी समान मुनिराज सुउदार भये प्रालब्ध जीवन की मन तन धारिया। जिनका सुदान पाय होवँत अचल सब और आश तृष्णा न जग में रहाइया२०७मानों धनपति मुनिराजका अवतारधारि अपना सुसबैधन देत लुटवाइया। जिनका भँडार सो अतुट सो अपार भरा जिनका सहायक माधोराम सुखदाइया॥ कर सरोज महा सुभग पवित्र अतिकल्प सुवृष मानों देह निज धारिया। जिनका सुनाम चिन्तामणिकी समान फले चारिज पदारथविन्द कारे दुखहानिया २०८ कमल रविकी समान सबकहींको प्रकाश करे करमनके फल सुख दुख नाते नियारिया। संसारको विकार पुनि तिनमें सुलेश नाहीं अज्ञान यज्ञ दुखमूल तिनमें सुहानिया॥ जगजीवन के हित वितमाया को व्यवहार माहिं लोभ क्षोभरहित निजानन्द सुख जानिया। जिमि सागरमें मच्छ कच्छ सब पर नाचे कूदे तिनका सो देख सिन्धु हरष शोक नाहिया॥ २०९॥ ज्ञानरूप मुनिराज तपके प्रभाव कर मोदक अपार कुम्भराशिमें लुठारिया। इन्द्र मेघकी समान यथा सबको प्रसन्नकीने जैसी विधिचाही तैसे किह मुनिराइया॥ वेद विहितकृतन में विघ्न जो नाहीं परे वही करम जगमें सो-होवै सुखदाइया। नातो वे विचार करै माधो के निमित्त नाहीं सुखपावै जिमादच्छ सिवन जानिया २१०॥ छं०॥ चहुँ कुम्भन माहिं यही विधिसो यकमास निवास करै सुवनावै। और देशान्तर के सगले मुनि कुम्भनमाहिं सबै चलिआवै॥ विधिपूर्वक स्नान करै सबही पुनि मुनिशरदूल के दर्शन आवै। नारायणराम मुनी मति मान संयोग यथा सबको बैठावै २११ चरणपखार मुनिमण्डल के निज मस्तक माहिं भली विधि लावै। पटहु सन सबको पहिराय भले शुभ अक्षत फूल सुगन्ध

चढ़ावै ॥ नानाप्रकारके श्रीकमले निज हाथनसे सबको पहिरावै। अनेक सुभांतिनके अमी व्यञ्जन हेमके थारन में मँगवावै २१२ आदर भक्ति विवेककी मूरति मंडल आगे सो धरके जिवावै। प्रीति महा उत्साह भरे मुनिराजन ठाढ़ सो चमर फेरावै ॥ मुनि मण्डल वेदकी धुन्नि करै जेहिको सुनिकै अघ मृत्यु नशावै। मुनिराजनके सुपकारसमै सुकुवेर समान सुधाये वर्तावै २१३ मुनिराज खड़े मुनिमण्डलमें मानों देवन में सुरराज सुहावै। भोजन सन्तन माहिं फिरै मानो अमृतकी वरषा बरसावै ॥ सुवरणपात्रमें बारि भले मुनिमण्ड़ल के अन्त हाथ धुवावै। शुभ आसन माहिं बैठाय भलीविधि वेद विधी शुभ पान दिवावै २१४ जहुरादिक नाना सुमंगरी अपार सो हेमके थारन संच उपावै। पान मिलाय कै पूजि सबै मुनिमण्डल को सुखदेत विदावै ॥ शुभ द्रव्य अपार सो लेइ सबै जिनकी जगमें मुनि जो चलिआवै। मनवाञ्छित सो फल पावै भले फिर इच्छा नहीं धनमाहिं रहावै २१५ मुनिराजनते शुभ भोजन दान सुमानो को पाय महा हरपावै। मुनिके सुखदायक दर्शन पाय सुगावत सो मगमें गुणजावै ॥ लक्ष्मीपति माधोराम जिनके उर तिनका भव दुर्लभ क्या सुरहावै। दैवी सम्पति वेदविधी सब जिनके घर मूर्ति सुधारि सुहावै २१६ तहां चारिपदारथ आदिक सुसब तोट नहीं नितपूर रहावै। इनके सुख ओकनकी महिमा सब हार परे कबि पार न पावै॥ भवमण्डल में मख बहुत होयपर इनकी समान नहीं कोउ पावै। नितेक मुनिमण्डल आयूदश यज्ञशालामें दान समान खेलावै २१७ माधो अरनके माहिं विषय मुनिमण्डल आयरहावै। हजारे तहां असुरी सम्पति लेश नहीं दुख आपन प्रकाश मुनिराज हटारे॥ इक माधोरामका ध्यान करै सब जो दुख द्वन्द्वको देतनिवारै। तिनका प्रभाव महासुखदायक खेलरहा जगमाहिं अपारे २१८ तिनहींके स्वरूप जोहै मुनिराजन भेद नहीं यक रूप उदारे। सीतापती जिमि दाशरथीसुत मायापती सुखरूप अपारे ॥ जैसे नारायणराम मुनि चिदानन्दसो माधोका वपुधारे। माधवकी रीति बनायकरै सब जाते लिखो वही रूप चिदारे २१९॥

चौ० ॥ यहिविधि निजमुख मुनी उदारे। निवतम गावै ऋषनापारे ॥ भोजन दान मान सेवकाई। देकै बिदाकरै मुनिराई २२० निज निज आश्रम मुनि निशिधावै। गुणगावत मगमें सब जावै ॥ जनकी अस्तुति सन्त बखानै। ताके

ईश्वररूप पछानै २२१ यहिविधि एक मास मुनिराई। धर्म मर्य्याद करै सुख दाई ॥ जीवनके कल्याण निमित्ता। आप चिदानन्द सुनित्ता २२२ मायागुणते सदा नियारे। व्यापक सब जीवन हितकारे॥ जिनका नाम रूप सुखदाई। जो नहिं जानै करत ढिठाई २२३ तिनकी माया उन भरमावै। तिनका गुण स्वभाव नहिं पावै॥ जिस पर आप दया सुखधारे। जगबन्धनते होय नियारे २२४ पाय ज्ञान होवै ब्रह्मरूपा। फिर नहिं गिरे दुख भवकूपा॥ सब जीवन उपदेश जनावै। जग तप आदिक कर्म कमावै २२५ या मगमें परहै जनकोई। भवसागर उतरैं जीवसोई॥ ज्ञानको साधन करमको जानी। याते करमकरै मुनिज्ञानी २२६ विना करम नहिं ज्ञान सोहावै। ज्ञानविना सुख मोक्ष न लेवै॥ मोक्षबिना कहुँ आनँद नाहीं। दुख जन्म मरण सब लोकनमाहीं २२७ बहुते सुख जीवनकी ताईं। नाना करम निगम बहु गाई॥ याते नरायणराम मुनीशै। निशिकाम करम सबको उपदेशै २२८॥

क०॥ शुभमर्य्याद जोइ जगके मँझारमाहीं ऋषिमुनि सबहूने बांध्यो है विचारकै। संसार सो अपार सिन्धु दुःखको न पारावार जीवहित कृतपुल दीन्यो है बनायकै॥ याते सब कारकसों दशचार भुवनमाहिं वेदविधि ईश आज्ञापालै मन लायकै। अभास करमकरै सब लोकसे उदासहोय सकाम कत चित सदासो हटायकै २२९ सकाम करम बनीसम जानंततग सब बारम्बार जन्मक हेतु दुखदायकै। अन्तसकी शुद्धीमाहिं कामको बखान करै शुद्ध अन्तसहोय चार साधनाको लायकै॥ श्रवणआदिक निदिध्यासन मिलायकर ज्ञानके सहायकहे जोई मोक्षदायकै। मोक्षके सहायकमें कृतको विचारकरै अन्तरंग बहिरंग ज्ञानके सहायकै २३० श्रवणआदिक सो ज्ञानकैसो पीछेरहै साधन चार श्रवण के पीछे सुखदायकै। यज्ञआदि कर्मचारि साधनाके वहजहै अन्तसकी शुद्धीकरै भले सो बनायकै॥ जैसा अधिकार देखै तैसे उपदेश करै मोक्षपर जो जन सब करमनमें राखकै। चार साधना सहित जब श्रवण बहुतकरै मनन निदिध्यासनको करै सो बनायकै २३१ बाहजकी वृत्ती फिर अन्त ब्रह्माकारहोय करम दुख छूटजावै होवै सुखदायकै। करम औ उपासना सो ज्ञानके सो साधनहैं वासनाको त्याग जब करै मनलायकै॥ वासना सहित करै मोक्ष ज्ञान पावै नहीं करम जाल जगमाहिं राखै भरमायकै। याते वेद

विधि करम जग में बिचार करै जिसका अभीष्ट नहीं होवै दुखदायकै २३२ ईशकृत करमनको त्यागना करावे मुनि जबतक हृदय मान ज्ञान ना प्रकाशिया। ज्ञान जब होय तब ज्ञान का विरोधी जान करमनको त्यागिकै अभ्यास करै ठानिया॥ सत औ असत ते बिलख न परपंच सब झूठ जड़ दुख जानकरै नभ मानिया। बैठके एकांत निज आतमा जो परमानन्द तिसको बिचारै विभू चिद सुखदाइया॥ २३३॥

चौ० ॥ मोक्षमें हेतु ज्ञान को मानी। ज्ञानमें हेतु करमको जानी॥ याते मुनी नरायणरामा। मख ब्रत आदि करै सुखधामा २३४ भक्ती नाम दान की महिमा। ऋषिमण्डलमें बरनै धरमा॥ भगवतसम्बन्धी शुभ ग्रन्था। अगम निगमकै सुनावै अर्था २३५ अज्ञान तिमिर दुख द्वन्द नशावै। मुनिमण्डल में अनँद उपजावै॥ यक दिन मुनि बिचार उर ठाना। नेम निमित मख ब्रत असनाना २३६ निरविघ्न समास भयो हमारा। माधोराम किहिन सब पारा॥ तीरथराज महातम जोई। वेद पुराण कहै सबकोई २३७ सो एक मास हम मज्जन कीन्हे। आनन्द अपार महासुख लीन्हे॥ सुर अस्थान जो तीरथमाही। तिनका दरश करन अब चाही २३८ सब जीवन कृत फलके दाता। सुर तीन लोक पालै विख्याता॥ अज शिव हरी बिना चिद माधो। भवनिधि जीवन तरे अगाधो २३९ यह बिचार कर मुनि सरदारे। ऋषिगण साथमें लिहिन अपारे॥ विविधप्रकार उपायन भेटा। बहु हेम थालन रचे समेटा २४० प्रीतिसहित सुर पूजन गयऊ। ऋषिगण संग में कारक भयऊ॥ जैसी जहाँ विधि वेद बताई। सब देवन पूजे मनलाई २४१ दान अपार याचकन काहीं। मुनिवर दिहिन जो तीरथ माहीं॥ भये प्रसन्न देव सब ईशा। मुनि लखि प्रीति सो देहिं अशीशा २४२ जिमि लक्ष्मीपति को सुर सारे। पाय कामना करैं जोहारे॥ तिमि मुनिकी धर्म्म कीर्त्तिविधि देखी। सुर प्रसन्न सो भये विशेखी २४३ इसमें बुधजन शंका नाहीं। सन्त को दुर्लभ क्या भवमाहीं॥ विधि सन्त अधीन सो देव रहावै। जो कछु सन्त करैं बनिआवै २४४ महाअगाध सो जलधि अपारे। कुम्भज सोखे गण्डुक धारे॥ भयो मधुर नहिं रह्यो सुखारी। सन्तकी इच्छा सकै को टारी २४५ देव दनुज सब सन्तन केरे। सदा रहैं सुखचरण के चेरे॥ सन्त की महिमा वेद न जानै। जेता गुन ते ताहि बखानै २४६ चिदों॰

नन्दघन माधोरामा। तिनका रूप नरायणरामा ॥ प्रतख दरश सुर को सुखदाई। तिनका दुर्लभ कछु न रहाई २४७ ॥

क० ॥ सब देव मिलि मुनिराजकी कीरति गावैं चहुं युग धर्ममूर्ति तुम सुखदाइया। हमरी प्रतिष्ठाविधि करो तू बनाये भले याते सब जीव हमैं माने जगमाहिया॥ जौन करमकारक सो जग में प्रगट करै सोई करम जग में सो करै परजाठानिया। नित सुख मोक्ष लिये जीवन को करम कहै करमकर इच्छा तजि होवै भवपारिया॥ २४८ उभय लोक मायाकर चित जो पदारथ है तिन्हैं लिये जीवनको कहै जो उचारिया। इच्छा धार करम करै भोग भोगै मोक्ष नाहीं तुम्हरी सो दया बिन होवै न भवपारिया॥ तुम्हरे उपदेश बिन हमको भुलाये देवैं जग बुद्धि भ्रष्ट होवै पावै दुख भारिया। याते सो महान पुरुष बुद्धिमान जगमाहिं हमरी सो पूज मान करै नाहीं हानिया २४९ धर्म अर्थ काम मोक्ष सर्व सुख नित भोगै भवसिन्धु घोर दुख तिनका सो नाहीं है। संसार भोग भोगै सब सदा निर्लेप रहै जैसे वारि बिषे कमल सदा वास करे है॥ देवनकी सेवकर बुद्धि स्वच्छ ज्ञान पाय अचल सुमेरु की समान नित रही है। अज्ञान जग दुख मूल तिनके सो और नाहीं ब्रह्मवेता सुख जान तिन्हैं हम सेवै है॥ २५० ॥

चौ० ॥ उभय लोक सुख हित बुधिमाना। हमको सेवैं लिये कल्याना॥ जो जो चाह कर्मन फल होवै। निरविघ्न आनन्द तिन्हैं हम देवै २५१ परकलिऊ के जीव हैं जेते। महा पाप उग्रके वेते॥ ते सब हमरी यजन है जोई। करै त्याग सगले शुभ सोई २५२ अशुभ करम जगमाहिं अपारा। करे गिरे दुखसिन्धु मँझारा॥ विवेकहीन खर चरे समाना। बन्ध मोक्ष नहिं लखै कल्याना २५३ जौन करम ते वेद हटावै। तिसई को सरहठ ते कमावै॥ याते जीव भ्रष्ट बुधि पावै। संसार सिन्धु दुख में बहिजावै २५४ नाना भांति के दराड घनेरे। तिनपै मन्द जान हम गेरे॥ वारंवार अवर बन करई। अन्नादिक भूमें नहिं जमई २५५ सुख सम्पति इसरज प्रभुताई। करमहीन नहिं पावै राई॥ याते कष्ट जीव बहु पावै। देह धरे दुख अन्त न आवै २५६ अधर्म का फल दराड सो पाई। अन्त देह तजि रौरव जाई॥ मख तप दान आदि शुभकरमा। जेहि आश्रम नित होवै धरमा २५७ तहँ नित जीव मोक्ष

गति पावै। कलिके धर्म तहां न रहावै ॥ जप तप मख आदिक है जोई। तिसका सुख फल हम सब देई २५८ जेहि आश्रम अधर्म बहु होवै। कलि तहां बसै महादुख देवै ॥ जप तप संयम वहाँ हटावै। जीवन को अधर्म वर्तावै २५९ अशुभकरम जहँ करै सो डेरा। तहँ कलियुग नित करै बसेरा ॥ जहँ शुभकर्म्म करै जीव उत्तम। त्रियुग तहां कृत होय न मध्यम २६०॥

स०॥ व्रतमान बिपे तनके सहि सुन्दर जीव अपार तहां सुख पावै। स्वर्गादिक मोक्ष अक्षय सुख जेतिक तिनके नजीक सदीवरहावै ॥ जग दान सुर संत जो सेवतहैं तिनका भव कलियुग नाहिं दिखावै। यहिते बुद्धिमान सबै जग में नेम व्रत शुभ सन्तनको नित सेवै २६१ यह पूरब लक्षण नाहिं जिनके उर राक्षस तुल्य सो जग में रहाये। तंग हीन अज्ञानिनको जगमाहिं सो कलियुग होय सदा दुखदाये ॥ अथवा जग दान अनेक करै सुर पितृन में नहिं श्रद्धा लगाये। शुभकरमनके फल बाधक को उर में अभिमान अज्ञान बधाये २६२ मोक्षके साधन द्वार जो पालक देव सहाय बिना नहिं पाये। अनेक कल्पान्तर देहधरे शुभ नानाप्रकारके कृत्य कमाये ॥ जब पावैगो मोक्ष सुदेवै दयाकर नाहीं भवसागर माहिं रहाये। महाइन्द्री बिषे तिनको भरमावै मन बुद्धि चंचल नित्य रहाये २६३ ॥

चौ०॥ याते मोक्ष होन नहिं पावै। मन अधीन मर्कटसम रहवै ॥ जबतक मन अन्तरमुख नाहीं। तबतक जीव परा भवमाहीं २६४ मोक्षसिन्धु सुख अमीकीधारा। कहां पावै मन अरते अपारा ॥ देवदया जिस नरपै जूटे। मन इन्द्रीन बिषयनते छूटै २६५ तबहीं होय मोक्ष ततकाला। भवनिधि उतरे तजि जंजाला ॥ यहिते बुध जन जगमें जोई। सुरको यजै न त्यागै कोई २६६ याते हे मुनि पर्व उदारे। कल्यानरूप तुम ईश हमारे ॥ प्रभु अकृत सुर पूज्य मनायो। कल्यान त्रिधि भवमाहिं जनायो २६७ चिदानन्द नित ज्ञान अजनमा। वेदविधी तुम प्रनहीं करना ॥ ज्ञानहीन जगमें नर जोई। करमदण्ड तिन परि है सोई २६८ तुम त्रिकालदरशी मुनिनायक। जगतजीव सबके सुखदायक ॥ परउपकारी कोउ कलिमाहीं। तुमसम हम मुनि देखे नाहीं २६९ नित सुध परमातम माधोरामा। जिनमें मुनीकरै विश्रामा ॥ तिनके शिष्य तुम परमउदारा। कस न करो जीवन उपकारा २७०॥

क०॥ धनसों पुरुष निज भवके मँझारमाहीं पर उपकार विषे दृष्टी जिन धारिया। जननी जनक जग सबका कल्यानकरै शत्रु मित्र बन्धुआदि करै भव पारिया॥ जैसे बनपरे तैसे मोक्ष सिन्धु सुखदेवै तिसकी समान दान पुण्य और नाहिया। देव गुरु ईशआदि उसमें प्रसन्न सब ईश्वरकी सृष्टी जो करै प्रतिपालिया २७१ शेष भगवान तीनलोकका उठाये भार चन्द्रमा दिनेश नित जगको प्रकाशै है। निशि दिन गमनकरै राहु केतु दुखदेवै जगतके पालनाको तजै कदै नाहीं है॥ दशरथसुत दशचारवर्ष बनबसे मारके निशाचरको उपकार ठान्यो है। वैकुण्ठ जो अपार सुख मात पितु राजतज धर्म के पालनको महासुख जानै है २७२ दधीचि हरीचन्द्र निज देहदुख भारलीने हृषीकेश भारतमें पाण्डव रथहाँके हैं। कुन्तीजी के सुतनको दुख काट सुखदीनो धरमबिरोधिनको पलमें खपाये हैं॥ प्रह्लादका सो पोता सो विरोचनको सुतजोई दैत्य सरदार बलिदेहको न पायोहै। तन धन राजगयो तिसका न शोच कीनो धरमके पालनको एक दृष्टि राख्यो है २७३ बड़े बड़े धर्म्मध्वजा जगके मँ-झारमाहीं पर उपकार सृष्टिकरते नितआये हैं। याते सब जीवनको भला जो मनावै नित विष्णुसमान जग महासुखदाईहै॥ धनि सोइ मात पितु जिनके सो कोखमाहिं नर मानों तनपाय पुण्य जो कमावै है। तिनके उपासनाको हम मुनिराजकरै पर उपकारी के अधीन सब विश्वहै २७४ माधो ब्रह्मकेअधीन सुर नर मुनि सुखलीन्हे जिन मखभारी जगकीनो है अपारिया। जिनकी सो मखमाहिं देवन अपार आये कारक स्वरूपधारि जगको समारिया॥ जिमि विष्णु स्वरूप राम गाधिसुत मख माहिं विविधप्रकार बहु सेवनको ठानिया। तैसे माधौकी सो सब जगमाहिं सबदेव मिल निज इष्टदेव जान सेवा सब्र कीनिया २७५ निज निज भागपाये भये सो प्र-सन्न सुर और किसी मखनको इच्छा नहीं धारिया। तीनलोक जीवनको सुख सो अपार दीनो तिनकी अनुपकृत सकैको बखानिया॥ तबते ना कोऊ मखखेत माहिं करै नाहीं जबते हमारे इष्ट धामको पधारिया। माधोराम विष्णुका सब यशगावैं जग हम सुरमिलगावै नाकके मँझारिया २७६ त्रेताके मँझार दशरथसुत महाराज तिनकी समान कोऊ जगमें न आयो है। अजकी सो सृष्टीमाहीं तिनकी समान करम कवनकर सकै नर जोइ तनधारी है॥ द्वापरके अन्त चितानन्दके कुमारभये बंशीके

बजाइया कहा देखने में आवै है। जिनके अधीन तीनलोक सो अपारबसै तिनके सो करम सुखदायीको न जानैहै २७७ कलिमें सो महाराज माधोराम चिदानन्द तिनकी समान अब ईशहोना दूरहै। नेकही औतार सुख विष्णुके भये जग तिसमाहिं मुख्य माधोरामका अवतारहै ॥ अनेक भाँति तिनके प्रभावका सो वेदगावै नित सुखदायी माधौराम सो वियन्तहै। जिनकी सो आदि गौरी सुर नर मुनिकरै भवसिन्धु दुख माहीं परे पछितातहै २७८ हम सुखपाये अब फिरत जगतमाहीं पारको लगावै सो अनाथ दुखी जानके। माधोराम दरशबिन छग अब जीवनहै कैसे निज दुखकहै सुनै मनलायके ॥ संगमें न गये अब प्राण सो उड़त नाहीं हमका सो छोड़ आपगयो सुखधामको। भवमण्डल अपार सिन्धु दुखका सो थाहनाहीं हमको निकारो नाथ जगमें सो आयके २७९ जिस कालमाहिं राम अवधको त्यागदीने भई सूनपुरी सबको न वसाये हैं। तैसे महाराज माधोराम भव त्यागदीन्यो सम सतसून जग अब कोऊना दिखायो है ॥ मोहरूपी शरलागे शोंच उर मांझमाहीं माधोराम बिना अब कौन पारलावै है। जिमि सूरका प्रकाशपाय जग झँझारमाहीं बिविधप्रकार सब कृतको कमावै है २८० निशिमाहिं जगत भयानक स्वरूप भासै करमभूलै अन्धकार सूरबिन होवै है। तैसे जबतक माधो चिद सगुन स्वरूपधारे तबतक सब करम जगमाहिं गाजे हैं ॥ लीला सुखदायी कर निर्गुण सो होये जब सुख भवमण्डलके करम लोपहुये हैं। कर सब मींजै सो अभागीजान आपनेको सदा पछताव बिधि कछुनावसाये हैं २८१ ॥ ब० ॥ यहिभाँति शोचकरै सुरमण्डल बैठखिती मनमें पछतावै। अबको सुखदायी सोहै बिन माधौकीरति गाय सर शोकमनावै ॥ मानुषकी गति कौनकहै सुखरूप सो देव तिन्हैं नितध्यावै। शोकके सहि गुरु कीरति सो सुनरायण राम मुनी पछितावै २८२ नित शुद्ध प्रमातम हे गुरुदेव भव उत्पति पालन तुहीं खपावै। तुम्हरी सुर कीरति गावतहै भवसागरका जोइ दुःखहटावै ॥ निज सन्मानही रमाय दीन्ह्यो मुही लाजमरी तव हाथ रहावै। सुखदायी तुहीं भवमण्डलके निज भक्तनके नित टेक रखावै २८३ ॥

दो० यहि विध माधो रामको चितवन मुनिवर कीन ॥
जाहि नाम भज नरनको सब दुख होवै खीन २८४

सं० ॥ सुरमंडलको अनुशासन देवै सुरमध्यमें बैठ महाछवि पावै। तपका प्रभाव मुनिराज धरे मानों विश्वपती सुरमाहिं सुहावै॥ श्याम घटा सो जटा शिरमें मानों गिरिजापती उपदेश बतावै। जिनका तप कल्प सो बृक्ष सदा जोइ ध्यानकरै सुख वांछित पावै २८५ देव प्रसन्न समूह भये सुख माधोरूप मुनीको विचारे। हाथ विषय बहु फूलन लै मुनिनायकपै बरषा वरपाये॥ माधौरूप तुहीं मुनिराजन तू सुखदायक ईश मुरारे। यज्ञादिक करम सो देवनके हित वेद मर्य्याद भव करिहौ पसारे २८६ तुम्हरे शुभ ओकन माहिं भले संतसेवन नित महासुखदाये। यहिते सब देव प्रसन्न रहे तुम संतन के हित सुरके सहाये॥ धर्म्मावतार चराचर के सुखदायक रूप धस्यो जग आये। अब जग सोआदि मिलेसुरको कलिमाहिं निराश हम धीरजपाये२८७ चिद माधौके सुख भवन विषे शुभ यज्ञ नितप्रति होत सोआये। यहिते सुर आश करैं नितही तुमहो मुनिराज महासुखदाये॥ तुम्हरे घरकी मर्य्याद यही शुभ करम सबै नितकरत सो आये। तुम ईशनरायण विश्व अधीन सो मायापती जग नाथ कहाये २८८ क्षीरसिन्धु बिषे विभूतिलगे तुम्हरी हम ध्यानकरैं नितनाये। जगपालन के हित देहधस्यो हमरे तुमइष्ट सदा सुखदाये॥ सुर नरआदि सबै जगमें तुम्हरोनित आशकरैं मनलाये। जो जगजीव अनाथ फिरै भवमण्डल के दुखमाहिं रहाये २८९ माधोपुरी वह जाय चले तिनके तुमनाथ होत सहाये। दुःख अपारसो काटिभले चहुँ सुख पदारथ देत मिलाये॥ मन वाञ्छित माधोराम दिये फल तिनके असीन केतु मुनिराये। माधो अरनमें वासकरो सुख धर्म्म मर्य्यादकरो शुभजाये २९०॥

चौ० ॥ यहिविधि मुनि शारदूल पैसोई। भये प्रसन्न देव सब कोई॥ जै जै शब्द सो मोक्ष अलाये। मुनिनायककी कीरति गाये २९१ आशीर्वाद सब सुरमिल दीने। मुनिराजन आनन्द में भीने॥ आशीर्वाद सुखदायक पाई। बोले वचन हृदय सुखदाई २९२ धन्यआजु हमैं जगमें सुहाये। तौ दुर्लभ हम दर्शनपाये॥ जिसपर दया सो होय तुम्हारी। सो होवत जगमें अधिकारी २९३ कोटि जनम जग तप करै कोई। देव दयाबिन सिद्ध न होई॥ दशइन्द्री आदिक बपुधारी। तौ सत लैकृतकरै संसारी २९४ तुम सहाय बिन होत न कामा। अखिललोक राउर सुखधामा॥ चार खानि ब्रह्मांडमें जोई। सुख दुख तिनका जोकछु होई २९५ कृत फल जीवन देख

संसारा । निज भक्तन सुख देहु अपारा ॥ इमिकहि मुनिनायक बुधि ज्ञानी । देवन की फिर अस्तुति ठानी २९६ ॥

छं० ॥ चिदानन्द विभूतं प्रकाशं स्वरूपं । दिक्कालविच्छिन्ना आकृति शुद्धरूपं ॥ भवकृतान्नलेपं अरूपं अवित्तम् । मेरी नमस्तंतुम्हैंनाथ नित्तम् २९७ तुहीं जगत ईशं मनीपाप्रकाशं। अखिलविश्वरूपं तुम्हींमैंनमामिम् ॥ संसारंपयोधिं तुम्हैंसू अधारं। चहुँखानीप्रकाशो जूनेकंप्रकारं २९८ संसारंअसारं महादुःखरूपं । सबजीवनपैगेरे तब मायाअनूपं ॥ तूजापरकृपालं भवानाथभूपं । भवजीवनं तूभादंकरौशुद्धरूपं २९९ नामरूपंअतीतं अडोलैचितज्ञानं। सनीधानमाया तवरचितीत्रिभुवनं ॥ अप्रमानंअजनमं निराकारबोधं । मनइन्द्रीअगोचरं भवातूविभूतं ३०० तुम्हैंजगतकारकं परपंचाधीनं । ओंकारवाचं तूभूमाअच्युतं ॥ शुभाशुभधरमं परमाताकामायं । तिनकेफलदायक सदातूसहायं ३०१ वेदविहितंसुकृतं प्रमातासुखालं । प्रमायाबहुविघनातव करती दयालं ॥ तुम्हैंईशनाथं महाउग्ररूपं । सबअंतरप्रकाशी सुखशुद्धंअनूपं ३०२ तूमाया केनाहिं चराचरनायकं। भवजीवनपैहोउ यदातूसहायकं ॥ तबैशुभकरमं भवजीवन केरं । होवैसुखदायकं लगेनहींदेरं ३०३ भवउत्पातिबाधं सदाकृतपालं । अनाशीअच्युतं अजन्मानिरालं ॥ मनवाकंअतीतं तूभवकेअगारं। षटउरमीरहितं सदानिरविकारं ३०४ यजनतुम्हारी सुखनामंस्वरूपं । मेउरमाहिंबसो तूअनूपं ॥ ब्रह्मांडं सुकूपं आहपरेदुःखं। करौनाथपारं तुम्हींमैंनमस्तं ३०५ जगफाहीतेजीवं नकरौनितउबारं। दयासिंधुतुमको सदामैंजुहारं ॥ अहंलघुतमनीपा जगतपालईशं । अलखअपार वारिधं तुमहोउप्रसीदं ३०६ ॥

चौ० ॥ यहविधि मुनिवर करीबड़ाई । भये प्रसन्नदेव सुखदाई ॥ सुरनर मुनि जिस जनपर सोई । होयप्रसन्न आनँद लखजोई ३०७ बड़भागी तेहि इससरूपा । तिसके दरश मिटै भवकूपा ॥ नारायणराम की बुद्धिअपारा । महासिन्धु को पावैपारा ३०८ अचल सुमेरु सुसम गंभीरा । भवनिर्लेप कमल जिमिनीरा ॥ मान अपमान विध्वंसन कीन्हें । सुरतिपुरान सकल जिनचीन्हें ३०९ जगव्यवहार कुसंग दुखखानी । तिनते बचै चतुर मुनिज्ञानी ॥ और सोजीव करम जगलागी । बंधमोक्ष नहिं लखै अभागी ३१० इन्द्रीविषयन माहिं रहावै। तिसते जनम मृत्यु दुखपावै ॥ दशन मध्य

जिमिरसना होई। तैसे रहै मुनीवर सोई ३११ याते चतुर नरायनरामा। शुभ करमन के हैं सुखधामा॥ दैवीसम्पति जिमि मिलआई। मुनि तनुधरे मनों सुखदाई ३१२

स०॥ यहिभांति सुदेवन हृदयबिषे मुनिराजनकी सुख कीरतिगाये। शुभ मूरति उरबिलोकि भले मनमध्य अपार महाहरषाये॥ हेप्रभु देवन कीर्तिकस्यो तुमहौ बुधिमान महासुखदाये। तौ महिमा अपार वगेसुरन जानै लघुबुद्धि नरा जग क्यालिख पाये ३१३ यहि अस्तुति आपकस्यो मुनिराजन देवनकी जगमहिमा बँधाये। याहिपढ़ नर जो जगमें पुनि जोइसुने गुरुके ढिगजाये॥ शिष्यभाव सो रीतिरक्खे मनमें गुरु की नित सेवकरै मनलाये। मन बुधि इन्द्री जो आदिकहैं भव विषयन माहिं जोनित्य लोभाये ३१४ तिनको बुधि अन्तर सुखकरे भवदुःखन ते उरमाहिं डेराये। नितवैराग्यकी टेकरक्खै जेहिते सुखमायाकी इच्छा नशाये॥ नितही यह अस्तुति पाठकरै अथवा जहाँ होय सुनैं मनलाये। तममूल अज्ञान भवकारन जो दुख सिंधुअपार सो जात पलाये ३१५॥

दो० नित्य मोक्ष सुखरूप जो माधौ ब्रह्मअपार॥
तिनको पावै त्याग दुख नहिं आवै संसार ३१६

स०॥ ज्ञानविना न मिलै माधोरामहि वेदकहै नित योगी बजाये। यह अस्तुति पढ़ैनर जोफल पावत अवर वेदपढ़ै नित प्रेम लगाये॥ सो नरज्ञान वैरागको पायकै भव दुखबंधन देत मिटाये। अन्तसमय माधोराम बिषे वह जाय मिलै जहँ योगी समाये ३१७ अज्ञान अधीन सोमायाबिषे फिर नाहींपरै चिदब्रह्म सुहाये। तुम्हरे पदपंकज बाकसुधा कल्पबृक्ष समान सदा सुखदाये॥ जोनर ध्यानकरै नितही जगवांछित सुफलासिधर पाये। यहिते तुम्हरी प्रभुता जगमें सो अपार अलख भवताप नशाये ३१८ कलिमें पदाम्बुज जीवनको दै माधो परमानन्द कातु मिलाये। वर्तमान सो भूत भविष्य बिषे सब जीवनको मोक्षहेतु सुहाये॥ भरम तूरकीवार तूजीवन के भवसागर छिनमें तूदेत लँघाये। अज्ञान अधीन संसार अहै सो अविद्या नशैनहीं देत दिखाये ३१९ जिमिरज्जु अज्ञानते सर्पदिखै फिर जिवरी के ज्ञानते जातनशाये। तिमि माधोराम जो आतमहैं तिनके सुखबोध बिनजगत भयदाये॥ जब माधोचिद

ब्रह्मको ज्ञानहोय तब भरमको तोरिके माधोको पाये । जिस माधोको पाय भवनहीं आवे तिसमें मुनि जीवन तू उदीम लाये ३२० ॥

चौ० ॥ भूत भविष्य वरतहै जोई। तिसको तुम प्रभु जानत सोई॥ त्रिधाकाल का लखिकर भेऊ। तस उपदेश जिवनका देऊ ३२१ नामरूप जग सब विभुचारा। तुम साखी तिसमाहिं अधारा॥ लिङ्ग शरीर सँयोगहि पाई। जीव कुटस्तु तुमैं सुरति कहाई ३२२ जाग्रत स्वप्न सुखोपति माहीं। मन गन विभू सूतजिमि आहीं ॥ कारन सूखमथूल विनाशी। सदा एकरस चित अविनाशी ३२३ बैराट विश्व तैजसहिरन गर्भा। यह ईशनाम तुम धरेअगर्भा ॥ परगनाम कारन तनधारे। तुम त्रिकाल व्यापक मुनि अपारे ३२४ प्रनोब्रह्म जीव सुखरूपा। द्वादशपद सुरति इसमें निरूपा॥ लखरूप तिनमें सुखदाई। वेदपुरान धुंस दै गाई ३२५ सोलखरूप अमीसिंधु अपारा। तुमहौ मुनि मनवाक ते न्यारा॥ अष्टांग जोकर जोगीसारे। सुख नितध्यान करे तो अपारे ३२६ बाचक बाच तुमहिं मुनिराजा। उपादान कारण जिमिकाजा॥ अज्ञान दृष्टि रज्जू जिमिसरपै। तैसे जगमुनि तुममें कलपै ३२७ सजाति बिजाति सुगत है जोई। तिनसे सदा अतिरिन्तक होसोई॥ इकरस देशकालते न्यारे। चिदघन व्यापक तू मुनिसारे ३२८ जड़प्रान अपान पिंगहै श्वासै। तव सतलै सबकरम प्रकासै॥ जिमिभानु प्रकाशते जगत मँझारा। सर्वकरम जीवकरै पसारा ३२९ तैसे सूखमथूल जो कारन। तिसहि प्रकाशिक तुम मुनिराजन॥ निराकार निर्लम्ब अद्वयत। तव दरशन ते मम अघ दहित ३३० हमरे इष्ट जो माधोरामा। तेहि चिदरूप धर्यो सुखधामा॥ सुख अवधपुरी अब जाहुपधारे। धरम मर्य्याद राखहु शुभसारे३३१ वेद विहितकृत जगत मँझारा। तुम बिन कौनसो करै पसारा॥ अशुभ करम ते जीव न हटाई। करो मोक्ष मुनि तुम सुखदाई ३३२ माधोबन सुख करहु निवासा। हमपर कृपा रख्यो लिखदासा॥ यहि बिधि सुरसब बचन अलाये। मुनिराजन हिरदय शुभ पाये ३३३ देव मुनी युग परम प्रवीने। मिले परस्पर आनँद भीने॥ तब मुनि पाणि जोर निज दीने। सुरउत्तम जानि दण्डवत कीने ३३४ मृतलोक मानों तन पाई। तहां की मर्य्याद करै मुनिराई॥ याते सुरनको किहिन जुहारा। नातो चिद घन आप अपारा ३३५ आशीर्वाद सब सुर मिल दीना। मुनिवर दै भे

अन्तरधाना ॥ रवि शशि जिमि अकाश छपि जाई। तैसे छपै देव सुखदाई २३६ ॥

क० ॥ यहि अमी कथा अतिपावन पवित्र महा जोई सुनै नर नित चित में विचारे है। अज्ञान पट तुरी मोक्ष ज्ञान सहित सुख पावै चतुर पदारथ सो करतल आवे है॥ माधौ सू नरायणराम नित सुखहायकरै जिनका सुनाम अघतापको नशावे है। तिनहीं की कथा यह जग सिन्धुपार करै जोइ सन्तजान पढ़ै शंका जो न लावे है २३७ नरायणराम मुनिराज विष्णु अवतार जग जिनका सुयश सुरनर सन्तगावे है। जिनका सुनाम दरश कोटि जन्म अघदहैं त्याग भवसिन्धु ब्रह्म माधोका सो पावे है॥ जिनका सम्वाद सब देवनके साथभयो वारी पद जिनका भवसागरमें सेतहै। जिनका उपदेश जोइ भजै मनलाय उर ज्ञानसहित मोक्ष तीनलोक सुखपावे है २३८ ऐसे मुनिराजनके अमीपाद वार सुख कवि उरमाहिं वसो नित शुभ आयकै। नारायणराम यहभाँति मख सुर पूज सब निमती काम वेदरीति की है सु बनायकै॥ तीरथ परागराज एकमास वासकरै मकर सो कुम्भराशि मनजै हरपायकै। अवधपुरी मोक्षधाम जामें सुखहै अपार जानेका विचार तहां करै मुनिनायकै २३९॥

चौ० ॥ माधोराम नाम उर लीने। ऋषिगण सँगमें लिहिन प्रवीने ॥ ऋषिसुख मगदेते मुनिराये। आनँदसहित अवधपुर आये २४० शुभ अस्थान महा सुखदाई। माधो विपिन वसै मुनिराई॥ ऋषिमण्डल अपार सँगभ्राजै। निज निज आश्रम सकल विराजै २४१ तहाँ की सुख शोभा व्यवहारा। अमीसिन्धु जगमाहिं अपारा॥ सुर नर मुनि जेहि देख लोभावै। कवि वरनत चितमें शरमावै २४२ शुभमंगल सुख अवध मँझारा। बहुत उत्साह शुभभयो अपारा॥ जात बरन आश्रम नर नारी। मुनिदरशन आये सब झारी २४३ अवधपुरी कोलाहल छाये। मानों रघुकुल तिलक सुहाये॥ विविधप्रकार वाद्य बहु बाजै। सुर समान नर नारी छाजै २४४॥

क० ॥ महामंगल अपारभयो अमीसिन्धु माधोवन नर नारी तरंग समान छवि पावै है। नाना सुखदायक शुभ माधोकी सुकृत गावै मानों सावन भादों घनशब्द सुहावै है॥ गुरु सागर नहावै मुनिराजनको दरशकरै कोटिजन्म शुभकृत सुख फल पावै है। उदासीन ऋषिगण सो करै हजार जहाँ तिनका दरश सो अधिक लाभ होवै है २४५ जितनेकु तनधारी दरशनको आये सब तिनका सो दान मान दिहेन

मुनिराइया। मुँहमांगे फल दीनो जैसे कोऊ मांगलीनो बलिकीसमान सब आशको पुराइया॥ यहिभाँति नर नारी आनँद को पायभले मुनिकृत कहते सो नन्ते गये हरषाइया। ऋषिमण्डल सहित सु निवासकीने माधोवन जगमें सु मुनिराज महा सुखदाइया ३४६॥

दो०॥ नित नवीन सुखमंगल कृत दानकरै सो अपार।
सब माधो धरम निवाही कलिमें मुनि सरदार ३४७॥

क०॥ नरायणराम अगमन अवध प्रवेश जोई इहांका प्रसंग अतिभारी है अपारिया। कथाका लंकार बांधे ग्रन्थकी प्रबन्धी होती चितमें संकोचकर लीनो उर धारिया॥ आलस बिचार उर दोनोंको सँयोगकर ताते कबि इहां नाहीं कीना सो विथारिया। श्रोताजन बुद्धिमान तिनका सो भयराख्यो वहुत प्रसंग सुखदीनों मैंने ढांकिया ३४८ यहिभाँति मुनिराज तीरथ विविधकर माधो वन बसे जहाँ सुखहै अपारिया। तहांकी सो लीला अतिअगम अगाधमहा चितमें न आवै कबकरत बिचारिया॥ चारसो पदारथ जहँ लक्ष्मी निवासकरै सुरगसमान माधो बन सुखखानिया। भववारिधअपार दुख तहांगये नाशहोय भ्राता सो कलेश अगमूलहोवै हानिया ३४९ दश चार भवन विरञ्चि सो बनाये भले तिसमाहिं अवधपुरी मुख सो सवारिया। मन वाक्यते अतीत सुख सुध जो सनातनहै ऐसो ब्रह्म आये तहाँ मानो तनधारिया॥ तहां के निवासी सब विष्णुसमान शोभैं निकट सलोक मोक्षभोगै सुख प्रानिया। मनुरजधानीकी सु शोभा सुअपारमहा तिसके सो मध्य सुख माधो बन ठानिया३५०॥

चौ०॥ नन्दनवन सम विपिन सोहावै। कबिन्दभनै सब थाह न पावै॥ इक योजनभर चारिउ ओरा। अतिउतंग परकार सो घेरा ३५१ तापर वंश सरकंड सो लाये। बनभार बैर चहुँदिशि छाये॥ नानापलों सहित महिरे मानो। नभको घन वहुघेरे जानो ३५२ निमन प्रवा जलका फिरई। दुश्मन आय तहाँ भय करई॥ धर्म्म जगत कल लखं परभावै। तहँ वसै निरभय सुखपावै ३५३ तिसके मध्य अमर बनबागा। वापीकूप थड़ बने त्रिभागा॥ जहाँ तहाँ प्रणकुटी सोहै। चहुँदिशि रौसवनी मनमोहै ३५४ पनसा कदली वकुल सोहाये। सिरफल इंगुद निम्बु सोलाये॥ कोविदार कचनार कदम्बा। अपार वृक्ष तहँ लगे हैं सर्बा ३५५ भोजपत्र

तर जामू अशोका। परमल लागे जिमि सुरलोका॥ नाना पंख लसे चहुँओरा। नादकरै मानों घनघोरा ३५६ विविध प्रकार वेल अमराई। वृक्षनचढ़ीं महा छविछाई॥ सरयू सुरत निकट अनुकूले। जहँ तहँ कुन्द विटप वहु फूले ३५७ गुञ्जत चंचरीक मनलाये। माधोवन सवका सुखदाये॥ द्रोमनको जुलताहै घेरे। जिमि माया सुख ब्रह्मको अवरे ३५८ सब महीर मै लगे कियारे। जिनको घन सींचनहै हारे॥ फल सो फूल रहा चहुँ कानन। दुःखरूप जहँ नहिं पंचानन ३५९ फलके भारनकर सब तरुवर। भूमिलटे जिनमें रस अमवर॥ जिमि नर शुभगुण ज्ञानहि पाई। तिमि वन सब शोभै सुखदाई ३६० हर्ष गयेनके नकर सोहावे। वैररहित विचरैं किलकावें॥ हरीघास लागी है सुखदाई। शशा कुरंग चुनै मनलाई ३६१ कीर मोर कोकिल पक रहावे। शब्दकरैं मानों कोउ गावे॥ चकोर कपोत त्रष्टकहो मैना। माधोवन पिषसर मै मैना ३६२ द्वादशमास हरा चहुँ ओरे। मानों चतुर मास घनघेरे॥ माधोराम का विपिन सो भागा। तिसके मध्यमें बना तड़ागा ३६३ मानों मानसरोवर आई। तेहि बनलगा अमी सुखदाई॥ नीलप्रमान सो चारोंओरा। सुन्दर घाट सो बना कठोरा ३६४ सीढ़ी अपारलगीं सुखदाये। गऊघाट चहुँदिशि में सुहाये॥ अजस्वरूप चिद माधोरामा। तेहि बनरचे जगत सुखधामा ३६५ जहाँ तहाँ बुरज लगे वहुसोहै। सुमेरु शृङ्ग मानों मनमोहै॥ सरमें आय मिलै वन नारा। अति अगाध जल भरा अपारा ३६६ मोति समान प्रकाशै पानी। जिमि देह इन्द्री सहि उज्ज्वलज्ञानी॥ सुन्दर वहुत सेवार सुहाये। पुरइन सघन चहूंदिशि छाये ३६७ विविधप्रकार कमल सर फूले। अलगुंजैं वहु जिमि घन वोलै॥ नाना जाती पक्षी जोई। जल में वासकरैं वहुसोई ३६८ विविधभाँति की वोली वोलैं। सुनि सुनि मगन मोह मनडोलैं॥ खंजन स्याडिल जल तटपाई। कौड़ करे विचरैं मनलाई ३६९ युग युग जहँ तहँ सारस जोई। सुख अपार लै वैठे सोई॥ वग ध्यान करै मनकिहे अकागर। जिमि कपटी नर जगमें उजागर ३७० पुरइन ओट सघन जल छावै। कमल सँयोग सुगन्धी आवै॥ माधोवनके ऋषिगन जोई। सांझ सुवे वैठे तहँ सोई ३७१ वेदपुरान की कथा जो पावन। कहैं सुनैं ऋषि दुःख नसावन॥ माधोराम विष्णु भगवाना। तिनकी कीरति लखै कल्याना ३७२ यह प्रसंगसुन नर

बुध जोई। नहिं शंकाल्लावै उर सोई॥ गुरुकी कीरति महिमा गावै। शिष्यको धरम है दोष न आवै ३७३॥

क०॥ विविधप्रकार मीन जलमें सो बासकरै बंधिक सो अघरूप तहाँ नहीं आवे हैं। सरके सो चारिउ ओर सड़क सो नीकलागी बट पाकड़ पीपर आम गुलर सुहाये हैं॥ नाना शुभ वृक्षनके तहाँ सो तीरखड़े कदमकी डार बहु तालमें झुकाये हैं। सोमरेल सोविमान तहाँ शुभ नितआवै खड़े माधोका सो सर देख चितमें लोभावे हैं ३७४ तिसके दरश हित मानुष अपार आवै सरपर निशिदिन भीड़ सुरहावे हैं। सैकड़ों हजारों मानों रेल से उतर जावै अघनाशी सागरपै वास निशिकरे हैं॥ तीरथ सो पावन में माधोजी की कीरति गावै जिन सब करमन के फल देनेहारे हैं। उज्ज्वल सो मिष्टसो सुगन्ध शीत वारि नीक अमी मोक्ष सिन्धु माधोराम ईशलाये हैं ३७५ यहिभाँति नरनारी निशिमें विचारकरैं प्रातःकाल उठके सोव्रत सब राखे हैं। मनजै पान करै सर सुर नर मुनि आदि नेक जन अघहानि माधौ मोक्षपावे हैं॥ पुत्र परिवार हित उज्ज्वल सो वारि अमीघट माहिं पथिक सुभर सब लेवे हैं। घने पंच पलो छाया माहिं सो निवास करै पान फूल लैके आदि सागर को पूजे हैं ३७६ विधि सहित मज्जनकरै रेल सो विमान बैठे सैकड़ों हजारों कोस पलमें सो जावे हैं। सूमनकी वाटिका सो चारिउ ओर सागरपै तिसके सो बीच सेवानाथ का शिवालाहै॥ ब्रह्म सुखरूप जागहेतु सो कृपाल व्यापी तिसमें बिराजै शंभु नितसो अकालहै। पशुपतिगौरी सहित शिव स्वरूपध्यानकरै तीनलोक जिनकी सो मायाका प्रभावहै ३७७ माधोबनबास करै जगकृत फलदेवै दार सहित देव जाके दर्शन को आवे हैं। कल्यान देनहारी शुभ अस्तुती बनाये सुर भूतपती अग्रकर बांधे ठाढ़े गावे हैं॥ जैसे शब्द सुर मुखते उचारकरैं स्वर्ग के फूल लैके शम्भु पै बरषावे हैं। विष्णु बिरंचि गणनाथ आदि शोभैं भले देवनसो आये सो अपार सुखपावे हैं ३७८ नारद सों आदि लैके देवऋषी जितने को शम्भुजी के आस पास बैठे सुखपावे हैं। देवन सहित तहां इन्द्र सो विराजमान शिवका प्रभाव सुख अधिक विचारे हैं॥ गण गंधर्व सब आदि तहां शिव आगे शोभैं भले साजको टंकोरै मुनि चितको चुरावे हैं। सुरराजकी सो आज्ञा पाय गंधर्व गावैं सब सुरको उचार तूर तालको बजावे हैं ३७९ बिविधप्रकार से अप-

सरा सो नाचकरैं मुनिनके चित्त तहां देख ध्यान छूटे हैं। अपसरन बीच दैके गंधर्व नाचैं सब वाद्यको बजाय सो शरमको उचारे हैं॥ यहि भाँति देवगण देखैं बैठ चक्र बांध बीचमें शशाँक सम गिरिजापती शोभे हैं। हाथजोरे देवी बैठी शम्भू बांये अंग भले तारन के बीच सोमसूर शोभे हैं ३८० ताल गंगकी अवाजसन देव सब मोह फँसै विष्णु सो लोयनते बनवान को बगावे हैं। शिवकी सो कीरति सो तीनलोक सुखदेवे जिनका सो ध्यान मधुसूदन लगावे हैं॥ सोई वारि पावन पवित्र अति शुद्ध महा अमी मोक्ष हेतु माधो सागर में पूरहैं। फागुन मास कृष्णपक्ष जनकसुता नौमी आवे तादिन सो पर्व तहां लागे सो अपारहैं ३८१ साल पीछे सुरनर मुनि सव जितने को माधो सर मज्जनको देश चलि आवे हैं। होय भीर भारी प्रति संवत अपार महा जग व्रत दान नरनारी सो कमावै हैं॥ अवधपुरी जावे जो ना सागर अस्नान करे तिसका करम निष्फल सब जावे हैं। सब तीरथ महातम सो अश्वमेध फल सम माधोसर मज्जनसे नर सुखपावै हैं ३८२ ब्रह्महत्या आदि लैके पाप जो अपार होय ताहि दरश मज्जनते सकल नशावे हैं। जो कामना को धरनावै ततकाल फल पावे चार सुपदारथ सों करतल आवे हैं॥ वेद विधि नाना करम जौन पाप दूखनको किसी तरह दुख वांध सुख जौन देवे हैं। माधौ वन आवै नर माधौसर मज्जने ते दुख पाप डारके अपार सुखपावे हैं ३८३ पुण्य फल मानों तन भारतमें पाय जोई माधो सर मज्जन सो कदे नाहीं कीनहै। ज्ञान मोक्ष सुरनर कदे पावै नहीं ज्ञान मोक्ष सुख नरकदे नहीं पावै भला तन भांडे मद सम अशुद्ध रहावे है॥ एकवार सागरके मज्जनको फल जोई शारद सो शेष सुख कहे सके नाहीं है। ऐसा फलपावै नर जोइ माधो सर नावै तीनलोक माहीं सो अपार शोभा पावे है ३८४ जीवजेइ तनधारे सागर अस्नान करे पाप धोय तन त्याग मोक्षमें समावे है। फिर भवसागर सों तन धार नहीं आवे एक सो अद्वैतचिद ब्रह्मसों रहावे है॥ ऐसे गुरुसागर पै देव सब बासकरैं भोलाकी सुकृती सुख नितप्रति गावे है। विन शिवभक्ती सुख जगके मँझार माहीं देव नर आदि होवै सुख नाहीं पावै है ३८५ शिव अविनाशी चिद्रूप सो असंग सदा आपने स्वरूप माहिं नित गलतानहैं। देवनकी भक्ती सो देखके अपार महा प्रेमके अधीन शिव नितप्रति पाले हैं॥ देवभक्त लायक जान सदाशिव प्रसन्न भये अपनी

विभूती जगकारक दै बनाये हैं। जगपालनके हित शिव देवनको आज्ञादीनो डमरू बजाये वेद सूतको सुनाये हैं ३८६ याते शंभुजी के चरणोंका निशिदिन ध्यावै देव शिवनाम भजि सब निर्भय सो रहावे है। विष्णु सो आदि लैके देव सो प्रसन्न रहै जगतके पालनमें सदा सो समरथहै ॥ तीनलोक जीवनको कारन एक नित एक शम्भु सबको प्रकाशै सो अधार अविनाशी है। ऐसे सेवानाथजी को भजे सब देव मिल जिनकी विभूती त्रिधालोक सो अपारहै ३८७ हिमाल जास हित नित सागर अस्नान करै माधो वनबस सुख शैल नितकरे है। महाकाल रूप रुद्र भैरों सो अकार महा तीनलोक जिनके सो तीन नयन माहिं है॥ महाकाल अग्नि सो जिनके सो नयन माहिं अंतके समयमा तीनलोक को नशावे है। हिमसुता देवी जगकारण अकाल महा कालरूप रुद्रपाय सदा सो प्रसन्न है ३८८ जिसका सो सत सो बैराट सो अपार महा लोकालोक जिसके सो घटमें बसतहै। चाँद औ सूरज जाके नेत्र प्रकाश करै दशोदिशा हाथ विषय चराचर बसे है ॥ तलातल महातल द्वीप जाके बसै सदा महा सो अकाश शीश सागर पिशावहै। रोम सो बनासपती असती सो समूह शैल नदी रूप नाड़ी सब देशमें अपारहै ३८९ तारागण आदि जाके माथे में सुहावे बिन्दी मारुत वन जाह कोटि जाके श्वास चले हैं। देव कारकादबली जितने को जगपाल जाकी लम्बी भुजा निज देहको समारे हैं ॥ ब्रह्मांड सो अपार मनियत शब्दहोवे सो ओंकार धुनि मूल सो बैराट केर बोलहैं। काली रूप रुद्र रानी भैरवी अकार महा करम बैराट सुत नित सुख लावे हैं ३९० कल्प के अन्त माहिं सुधाके सँयोग होयकर खपर धर जग निजपूत खावे है। क्षुधाकी निवृत्तिकर होवै सो प्रसन्न महा रूप सो विराट धार हाहाकार हँसै है ॥ अट आट शब्द अपार सो कराल करै काररूप भैरोंजीका निरत सो देखावे है। कालकाली दोनों फिर सूक्षम स्वरूप धारि आप में तदातम होइके रहै सो अबाध है ३९१ जैसे बृक्ष रूप निज बीज में समाय जावे तैसे जगकारण अकाल नित रहे हैं। जीवकृत फल के सो सन्मुख होवे जब विविधप्रकार जग रचिके फैलाये हैं॥ चारखानी जीवन को नितप्रति पालकरै जैसे जाके करम होवे तैसे फल देवे हैं। जीव करम फल जब देने से विमुख भये आपस में दो हँसीकर जगनासे हैं ३९२ याते जीवन के करम सब जगत का मूल जानों

उत्पति पालन सँहारन में हेतु है। और नाहीं कारण भवमंडल के होने माहिं नादी कालका प्रवाह जग होत करम आये है॥ गिरिजापती चिदाका जो ज्ञान होय भली विधि जन्म मृत्यु करम फल जग छूट जावे है। ऐसे भोलानाथ जग कारण काल ज्ञान माधो बन बसे जीव करम फल देवे है ३९३ नरायन राम मुनि माधो वनके निवासी नित माधोराम शम्भु विषे भेद नहीं माने है। एक रूप जान मुनिराज ध्यान करे नित सत चित आनँद अवाध विभुजाने हैं॥ जिस गिरिजापती माधोराम के उपासी मुनि तिनके सो ध्यान बिन जगत नशावे है। जैसे रज्जू के सज्ञान कर सरप नशाय जावे तैसे आतमरूप लखि माधो सुखपावे है ३९४ माधो भवन से निकस पहिले प्रातःकाल उठ नित मुनिराज माधोरूप शम्भुको मनावे हैं। मुनि बुद्धिमान ब्रह्म विद्यामें प्रवीन अति जिन सब वेदन को पार भले लीने हैं॥ जिनका उपदेश चले गंगाकेरी धार जग तीनलोक पाप काट जीवन तरावे हैं। ऐसे मुनिराज माधो रूप शंभु आगे नित प्रेम अचल स्वरूप बहु अस्तुति बखाने हैं ३९५॥

छन्द॥ गिरिजापती भगवानं दामं। नाथं पदाम्बुज सदा मैं भजेहम्॥ तुम्हारी सुदया बिना जग दूखं। नहीं बाध होवे मिले नहीं सूखं३९६ याते नमामी तुम्हैं त्रिपुरारं। सदा सुखदायकं भव कष्ट के आरं॥ पद वारिजं तुम्हारे जो भगती सुखदायकं। देवहु सुधा सिन्धु लोकं के नायकं ३९७ तुम्हरी जो भगती ते बेसुखं मनुसं। जनमं मृत भाव दुखं नरपावे विनासं॥ भव उत्पति पालं के कर्त्ता संहारं। तुमको नमामी जग ईशं अपारं ३९८ शुद्ध साखी कुतष्टं अजनं अनाशिं। मायाधव सुखं चित गोयं प्रकाशिं॥ जिमि अदितं प्रकाशी संसारं अपारं। तिमि प्रकाशं तूत्रधा शरीरं अधारं ३९९ नाम रूपं अपारं वैराटं तु रूपं। गिरिजा के नाथं त्रिनैनं अनूपं॥ संसारं दुखं निधानं परे जो। अज्ञानं तिनके अघनाशी करो तू कल्यानं ४०० शिवनामं कैवलं सुख बोध हेतुं। पंचकोसं प्रकाशी तुरी तू अतीतं॥ मन बाकं परेशं अपरमें अपारं। सगुन अनेकं धरे तू अवतारं ४०१ तुमको नमामी जगत पाल ईशं। नित्यं समाधी धरे ध्यावै योगीशं॥ सुख शांतं स्वरूपं त्रिलोचनाय वारिदं। शिवनाथं प्रकाशी विभूतू अनादं ४०२ उत्पत्ति पालं भवाभाव हेतुम्। समुरारी त्रिषकेतु सदा दयालम्॥ निज तुम विभूती हरी दै मागम्। भस्मांग धरियं वैरागमतुलीनम्॥

४०३ नगनागरहितं सब जीवन कथितम् । नाहं वैरागिम समं सुख कोयम् ॥ समसानन रहितं सदा तू दयालम् । भव मिथ्या जनावै तू जीवन कृपालम् ४०४ चरमं कपालं धरे त्रिपुरारं । उत्तम मध्यम समं तू विचारं ॥ काशीपुरा सदा बरतम तू धारे । सजो जन्तु मुकती भवजीवं दै पारे ४०५ जठरा गगरभं नहीं कष्टु आवं । शिवं समानं नरनारी तन पावं ॥ अद्वयतं उपदेशं तु तिनको जनावै । तजि तन लिंघम तुमहिं में समावै ४०६ ऊंचं सु नीचं नहीं नाथ देखं । मुकती सबनाको तू देवे एक लेखं ॥ यहां भव बंधनते रहिता अकालं । अनाथं पर होवे सदा तू कृपालं ४०७नाम रूपं त्रिलोकी तुम्हारे है आशं । तिनके सुखदाई करो दुःख नाशं ॥ भजेहं सुखदाते सदा तू अलेखं । भक्तन अभगतं तुहीं जग राखं ४०८ सुरनर आदि करै तोहिं ध्यानं । तिनके दुख बाधी अभय देवहु दानं ॥ सुखदायक स्वरूपं धर माधो रामं । मेरी नमामी तुमहिं सुखधामं ४०९ ॥

दो० ॥ त्रिपुरारी सुख सिन्धु तू तुम्हरे रूप अनेक।
तो पद अम्बुज बार को मैं धारत हौं टेक ४१० ॥

क० ॥ त्रिपुराके आरी जटाधारी गंगा शीश माहिं वज्रकोपीन अंग भस्म रमाये हैं। आस पास भूत बैठे भालमें शशांक धरे डमरू त्रिशूल सिंगी हाथमें बिराजे हैं॥ गणपति मातुपति नन्दी के सवार भले नागन के कटक सो अंगनमें धारे हैं। केहरी के छाल बैठे रुण्डन की माला शोभै गौरी से पिसाय भांग पिये हरषाये हैं ४११

स०॥कामके आरसू भूतपती तुमहो कमलासन विश्व उपावै। भवपालन नित्यकरैं तुमहीं लक्ष्मीपति होय के विष्णु कहावै ॥ अंतसमय ब्रह्माण्ड भस्मकरि आप विषय सब लेत मिलावै । मन बुद्धि सों बानी न जान सके श्रुति वाक सदैव तुम्हैं नित गावै ४१२ कैलास के नाथ अडोल अभै तू शचीपति आदि तव सेव कमावै । अभै पद दान सो देहु तिन्हैं सु आराति रिपुहन मार मिटावै॥ तव जट पाइके गंग सोहै मानो इन्द्र शरासन खेह सुहावै । तुव पद पाइ प्रभावन ते भवसागर में सब जीव तरावै ४१३ ॥

चौ० ॥ त्रिपुर दैत्य को दाहन कीना। मारि जलन्धर को गति दीना ॥ भस्मासुरको दै बरदाना। आप पलाय चल्यो भगवाना ४१४ पर उपकार सदा तुम कीन्हा।

हित अनहित सबको सुखदीन्हा ॥ जब जब देवन भये दुखारे।तुम्हरे शरणहिं चले पधारे ४१५ तब तब नाथ तुम्हैं सुख दीन्हा। असुरमारि निर्भय शिव कीन्हा ॥ भूपर पाप होयँ जब भारे। तबतुम नाथधरे अवतारे ४१६ मारि अधर्मी जगत मँझारी।धर्म स्थापन करो पुरारी ॥ मंथतसिन्धु निकस्यो विषभारी। लगा जरन सब विश्व दुखारी ४१७ लक्ष्मीपति सुर दानव जेते। भये परस्पर दुखी सु तेते ॥ तब सब मिलिके कीन पुकारा। तुम बिन कौन सो नाथ हमारा ४१८ नामरूप विश्वकर जोई। तिनके तुम साखी प्रभु सोई॥ जग इस्थिति उपजावन हारे। पाल्यो बहुरि करौ संहारे ४१९ केचित अब आकृत मंझारा। नामरूप जगकहे अपारा॥ तदपि सुतन्तर मायानाथा। भव रचने महँ नहिं समराथा ४२० ज्यों चुम्बक जड़ लोहा पाई। चेष्टाकरै प्रतक्ष दिखाई॥ तब माया जग चेतन पाई। कर नेकवार जग देह मिटाई ४२१ सतचित आनँदरूप तुमारा। मायाको नहिं लेश विकारा ॥ व्यापक सबघट अन्तरयामी। निज भक्तन दुख नाशत स्वामी ४२२ इच्छारहित सदा निष्कामा। तीनलोकके तुम सुखधामा॥ तुमरी आज्ञा धरि उर देवा। करैं जगतकी हम सब सेवा ४२३ विषकर जरत जात संसारा। तुमरी दयाते होत उबारा ॥ औ रण समरथ को जगमाहीं। भवदुख वधि सुखदेवे ताहीं ४२४ ताते हमपर होहु दयाला। करौ अभय भवसीव कृपाला॥ मन बानीते सदा नियारा। अस्तुति केहिविधि भनै अपारा ४२५ तुमबिन कौन सो होत सहाये। सबपर कृपाकरत नित आये ॥ ऐसे सुर जब कीन्ह बखाना। भयो कृपाल शम्भु भगवाना ४२६ अनूपरूप प्रगट्यो तिहिकाला। भव भयहरण जो करै नि-हाला॥ तौ पद दरशि अनँद सुर पावा।अभय भये भरोसही आवा ४२७ बिषकर जरत विश्व जो सारी। खायो हलाहल शम्भु खरारी॥ तब तुम सबको कीन सहाये। अभयभये जग सुर सुखपाये ४२८॥

दो०॥ भयहारी त्रिनैन तू खाय हलाहल लीन।
जयजयकार सो जगकर्‌यो देवन मंगलकीन ४२९॥

स० ॥ शम्भुकृपाल सो को जगमें जिनके गुणको कमलासन गावै। देवपती अहिनाथ भजै लक्ष्मीपति नारद ध्यान लगावै ॥ शिवसिंघर प्रसन्न तो हुये भले तुम्ह पद माहिं जोई मनलावै।मायक नाना उपचार जोई त्रैलोक विषय सुर भोग

सुहावै ४३० तिसके सहजीव भजे तुमको परहेतु मनीसा अशुद्ध रहावै। तेहिते तुम नाहीं प्रसन्नहोय चाहे भोग असंख अनेक लगावै ॥ अशुद्ध त्रिलोकी सो मायक मिथ्या यह जान भले तू उदासी रहावै । अनेक जनमात्र जो जीवघातक तौ पद सुधहोत नाम जो गावै ४३१ व्रतमान बिषे सुखदेव तिनहिं अंतमाहिं गिरिजापति आनँदपावै। याते प्रधान सब देवनमें भवसिन्धु चराचर शम्भु तरावै॥ एक सीव सो नाम कल्यान अभै तिसकी तुल्य और न नाम सुहावै । यह नाम भजे भवसिन्धु लँघै तन धार नहीं भवमण्डल आवै ४३२ यह जानि भजों पदपंकजको गिरिजापति नाथ हमैंना बिसरायो । हमको भवसागर माहिं भले तो दयासिन्धु नाथ सो थाहमिलायो ॥ विघुना हमरे शुभ काजनमें तो मायाके प्रेरे बहु जीवन पायो। हमरी सहाय तू नाथकियो हमरे शुभकारज नेकु सवाँरयो ४३३ ॥

दो० ॥ गिरिजापति आनन्द बन मोक्ष ठौर सुखधाम।
तिसके सहि सुरनाथ जो तुमको सदा प्रणाम ४३४ ॥

स० ॥ यह अस्तुति जो नर नित्य पढ़ै उठ प्रातसमय कर प्रेम बढ़ाये। चार पदारथ आदिक सो तिसके घर आयके नित्य रहाये ॥ सुखदायक जो गिरिजापति हैं तिसके दुख काटिके होय सहाये । सुख आनँदके सहि ज्ञानको पायके अन्तसमय चिद मोक्ष सो पाये ४३५ ॥ क० ॥ यहि भाँति केरी स्तुति सो बहुत बखाने मुनि फेरि माधोवनकी सो नित सो लगावै है। जिसमें सो बड़े बड़े भवन सो अपार बने मानो विधि आप निज हाथसे बनावे है॥ बहु विस्तार में सो दीर्घ सो पत्ररचने मध चारिउ ओरमें सो स्थान बहु सोहावे है । निकेतनके माहिं शुभ खम्भा सो अपारलगे चित्र सो विचित्र मानो चित्तको चुरावे है ४३६ पौरनके आगे बहु दीरघ सथन डलाय तटमाहिं नानाविधि पुष्प लगाये हैं। निवेसनके दरमाहिं लोहेकेसो सींकलाय राजऋषि मण्डल सो तिसमें रहावे है॥ मानो शिवलोक बसे मृतलोक माहिं भली शिव की समान ऋषिमण्डल सोहावे है। पवनको समध माहिं शुद्ध सोमबेड़ा शोभै तिस माहिं उपवन सुन्दर सुहाये है ४३७ पहिन रचित शुभ चारिउओर रोसफिरे जलके फुहारे मेहँदी दूव फूललाये हैं । मानो नीलकाश माहिं नानारंग घने शोभै तिसकी समान मध्य चौक छबिपावे हैं ॥ भाँति भाँति बृक्षनके तहाँसो कतारेखड़े मौलश्री

कटहल अनेकन लगाये हैं। फल फूल भारकर तरडार भूमिलागी रम्भनकी पांति मानो श्यामघटा छाये हैं. ४३८ बापी कूपकहुँलाये वेदिकासोकहुँ शोभै जहाँ तहाँ सुन्दर प्रसाद सो बनाये हैं। चम्पक अशोक सब भवन आगे छाये सुन्दर अगस्त वृक्षक-तहूँ फूललाये हैं॥ सैकड़ों हजारों राजऋषी सायं प्रातःकाल अशोकछाया वेदिनपै बैठे सुखपावे हैं। माधोभवन की सो लीला कवि कहत लजावे सब सुरपति भवन विश्वकरमा शरमावे हैं ४३९॥

चौ०॥ मध्यचौक गुरुभवन सुहावै। वेदरचित अपार छविपावै॥ निखिल सो संक्रमार बरभ्राजै। अन्धकार तहँ कहूँ न छाजै ४४० जिमि ब्रह्मविद्या अंगको नाशै। तेहि-सम माधो भवन प्रकाशै॥ रतनसमान खम्भ चितकारे। मणि मुकता बहु जड़ित सवाँरे ४४१ हेमबिन्द तन खड़े चौफेरे। चिंकत हरे गवाख घनेरे॥ नानाविधि चि-तकारी जोई। देवालन महिं खचितहैं सोई ४४२ सुर मूरति तहँ बहुत विराजै। झाड़ फनूस लाट बहु छाजै॥ उडुगन मानो नभके झँझारा। झलमलाय चौफेर अपारा ४४३ चतुरभवन शोभै चहुँओरा। हेमशृंग जिमि शोभै सुमेरा॥ सदन अग्र में वृषहि सो-हाये। घन पल्लव जिमि तम्बुतनाये ४४४ सांझ सुबे बन्दीजन आई। शब्द उचार करैं सुखदाई॥ माधोरामके गुण सुख गावे। झांझ मृदंग तमूर बजावे ४४५ शुभ गुण पूरण भवनहै सोई। जेहि पिप दुखनाशै सुखहोई॥ रवि समान झलकै चहुँ फेरा। श्रीपति सदन समान उँजेरा ४४६ संगमरमर विविधप्रकारा। कुसना सकुल वरन नहिं पारा॥ चितकारी सहि फरश बिछाई। चहुँदिशि सदन बीथ छबिपाई ४४७ तिसपर सुन्दर पट सो बिछाये। ऊपर बहुत चँदोवा लाये॥ अति दीरघ अकाश मै सोहै। सुमेर सीघ मानो मनमोहै ४४८ किंगुरसमूह लगे चहुँ सारे। हेमजड़ित झ-मकैं जिमि तारे॥ अतिशोभित गुरु कलशहै जोई। मध्य शिखर झलकै चहुँ सोई ४४९ बीच खेहमें सोम सुहावै। मानो मारतण्ड छवि पावै॥ ऋषिन की मूरति चहुँदिशि छाजै। कैलास शिखर जिमि शम्भु विराजै ४५० विचित्र सीक चहुँ कोने ठाढ़े। जिम हेम थंभ चितकर सहि गाढ़े॥ ऊरध भवन की छवि सो अपारा। कवि गण कहैं न पावैं पारा ४५१॥

क०॥ बीच महि भवनकी सुशोभा सो अपार छवि तिसमें न आवे याते बानी

न प्रकाशे हैं। हाटक समान चारिउ ओर से दिवाल छाजे बेल बूटा पती पुंडरीक तामें लाये हैं॥ श्रुत समीर तहां विविधप्रकार लाये मनको चुरावै मानो वानी को उचारे हैं। अनल समान उरध चाँदनी सुभगलाई मोतिन के झब्बे चारिउओरसे झुलाये हैं ४५२ नानाचित्रकारी हेमसुत्र खचित सभ रूपनके कुराडन में चारिउओर कोन बँधे है। सुवर्ण छत्र तामें भारी विस्तार शोभै हेमडंडी हीरा मोती जड़ित सोहावे है॥ मीनके अकार तामें वज्रादि जड़े सभ प्रातःकाल सरवत महाछविपावै है। पद्मसमान तामें तरी सो अपार लाय मारतराड कृष्णपत सो मानो नशावै है ४५३ माधो सो मच्छ तरकासे और सो दृष्टान्त नाहीं एक रमापती कान कुराडल सुहाये हैं। नरायनराम मुनिमत मानसो प्रवीन महा सोइ मानो लाय माधो रामशीश शोभै हैं॥ रमापति माधोराम सदा सो अभेदरूप ईश्वरको बाचक सो माधोराम पदहैं। वाचक सो वाचमाहिं भेद कदाचित नाहीं जैसे घटरूप देखो सदा सो अभेदहै ४५४ रमापति माधोराम युगपद सुखदाई बाचलखको जनावे चिदानन्द व्यापी शुद्धहै। याते ईश शुद्ध माधोराम जगत गुरु ब्रह्म त्रिधालोक मूल माया तिनकी बिभूती है॥ याते माधो भवनकी सु लीला सो अपार महा जहाँ माधो आपईश तनधार बसे हैं। हेमको सिंहासन सो कनक जड़ित शुभ सोई सोम छतुर सो उरधमें प्रकाशै है ४५५ भवनके मँझार माहिं सदा सो अडोल सुरराजका असीन तेहि देखि लाज खावे है। भाँति भाँति पटशुभ तिसपै बिछाय शोभै हेमनकी सूतनकी मीनाकारी लावै है॥ बींचबीच रजित कि कुन्दनकी जरलाई मानो हरे बारिधमें तड़ता सो फिरै है। हीरा मोती मूंगकर जड़ित सिंहासनहै जरद अकाश मानो उडुगन छाये है ४५६ भाँति भाँति रंगवाले नगके समूह जड़े जहाँ तहाँ रतनसो मनमान लावै हैं। नानारंगवाले शुभतको आस चारिउओर जिस ओर देखै मन तहँ फँसजावे हैं॥ जड़ाव सो जड़ित सोने चांदीकेसो पंखधरे सूरज शशांकसम महाछबि पावै हैं। अनेक फलकंद सब तासनमें तिष्ठ शोभै जहाँ तहाँ फूलनके गजरे झुकावै हैं ४५७ खसखोइकी सुलाट कर भवन सो अपार भरा सारीसमग्री सुगन्धी होके भासै हैं। मेवा मिष्ठान्न सुर भोग पकवान नाना हेमथाल संचबहु जहाँ तहाँ धरे हैं॥ रसना अधीन सुरभवन फेर माहिं बैठे गंधीप्रसाद लेवे माधो गुणगावै हैं। हाटक रचित महा सुभग सो पीरवना

हेमसूतमुक्तावल जाली तहाँ लावै हैं ४५८ रजतकी फुल्ली बहुतकन में लाई नीके तारनकी पंगती सुमानो चित्रकारी है । चांद औ सूरज दोऊ बैठे दोऊ ताखमाहिं मानो हरेबादर महिकृष्ण फैलावै है ॥ त्रिलोकी के सुनाथ माधोराम महाराज चिद तिनका सो नाम अभी उरमें लगावै है। नदसे जड़त पट सोमपौर माहिं शोभै मानो रमानाथका पितम्बर सुहावै है ४५९ बिष्णु विभूति सब माधोभवन माहिं शुभ चारिउ ओर भरा सुख महासो अपारहै। कनक सिंहासना जो वरणन कीने पीछे मध्यसो भवन धरा शोभित अपारहै॥ मायाके स्वपति माधोराम शुद्ध ब्रह्मचिद शीशमाहिं छत्रभूले तापर विराजैहै। जिनके सो तनकी सो प्रभासो अपार महा कन्दर्पकोटि सोमदेखके ल-जावैहै४६०कलिराजका वजीर काम असुरी सो चमूलेके तीनलोक चारखानी मारवश करे हैं। माधोका स्वरूपदेख शम्भू अरजाने नित पाणिजोर माधोकी सुकृत नितगावै हैं॥ जिनकी सुलीला सुखसिन्धु सो अपार महा बड़े कवि हंस फिरै पारनहीं पावै हैं। मैं तो मतिमन्द निज अक्षर सो वोधनाहीं गुरुसागर कथा हम कहा पारपावै हैं ४६१॥

चौ० ॥ जिनके दरशन जगदुख नाहीं । बैठे हेमसिंहासन माहीं ॥ कुन्द छत्र शिर उरधभराजे। वैकुण्ठनाथ तनुधरे विराजै ४६२ द्वादश आदि प्रभा रवि जोई । माधोराम प्रकाशै सोई॥ हेमवदन मुख चन्द सुहावै। नीलजटा मानो घन छावै ४६३ अथवा स्वयति सुभग शिरसोहै। सूर्यकिरणि मानो मनमोहै॥ तनकी द्युतिकर भवन सोहावै। बनी तहाँ अभावको पावै ४६४ वारिजनयन जगत सुखदाई । कुन्ददशन छवि किमि कहिजाई॥ भरवट मानो भृङ्ग सोहावै। इक दश बात कंठ छविपावै ४६५ मस्तकमें शुभ परमल लाये। सुधा शशांक द्युत जिमि छाये॥ सुन्दर जिनके लागे सरवन। हेमरूप जिमि शोभै कवलन ४६६ पदमासन बैठे मनमोहै । मानो गण-नायक सुखसोहै ॥ लम्बोदर जिसमें ब्रह्मण्डा। सतचित आनँद शुद्ध अखण्डा ४६७ पद वारिज जगमें सुखदाई। नखकी प्रभा सिंहासन छाई ॥ शेषनाग सम भुजा वि-राजै । कर जग पोखन पदम सो छाजै ४६८ रक्तबसन सुन्दर तनुधारे । इन्द्रधनुप जिमि चक्करडारे ॥ ब्रह्म कमण्डलु बगल सुहावै। जगकृत फल जिन हाथ रहावै ४६९ हाथ विषय शुभ वेदहै जोई । माधौ के गुण गावै सोई ॥ परमानन्द विषय नहिं माधोरामा। त्रिधालोक के हैं सुखधामा ४७० ॥

क० ॥ अधरसो बिम्बकीर चोंचकी समान नास तीनदेव मिल छबि माधौरूप धारे हैं। हेमके असीन चिद मध्यभवन माहिं शोभै जिन कासोपेख क्षुधा प्यास दुखनाशै हैं ॥ कल्याण शांत सुखरूप जीवनपै दयाधारि सुखसो बैकुण्ठ तजि बेत भवन राजै हैं। बिष्णूकृपाल माधौराम जगईश मोक्ष तव पद वारिजको कबिनित ध्यावै हैं ४७१ संसार सिन्धु दुखभारी तिसमें उधास्योनाथ नेकजनम हारि आयो थाह नहींपायो है। करमके अधीन सव लोकनके माहिं फिस्यो शुभाशुभ फल भोग अंतपात पायो है ॥ अज्ञान दुखमूल शाप उरमें निवासकरै असुरीकुटुम्ब दुख तिसके अपारहै। दैवी सुख सम्पदाको मूलसे उड़ायखाय घटीयन्त्र जीयन में वियन्त में भरमाये है ४७२ तुम विन नाथ भवसागर लँघावे कौन महासो अनाथन को दुखकाट मोरयो है । क्षणमें दयालु तुम जीवनपै होयनाथ नेकजन्म अघकाटि निजपद दीनो है ॥ त्रेतायुग माहिं तुम दशरथ भवन भये नामरूप रामधारि तुही जगपाल्यो है। मधुपुरी माहिं तुमनंद जीके लालभये नख गिरिधारी तुम गोपसुख दीनो है ४७३ मन्दरचल भूधर सूतुमहीं उठायकर क्षीरसिन्धु महिरख तुमहीं मथायो है । सुधाको निकार तुम देवन को सुख दीनो तुम्हरे प्रभावलैके सुर अरघाये है ॥ अरातिन से छीनराज सुरनको सुखदीनो माधो तू कृपाल फिर दोनों मोख कीनो है। गजराजके सो फंदकाट्यो फूलके अधीन होके सेवरीके बेर लोभ महासुख दीनो है ४७४ बसनको छोड़ तुम नंगे पावँ नाथदौरे द्रौपदी अनाथभई लाज सभा राख्यो है। सुग्रीव सो बिभीषण प्रह्लाद हनुमान आदि सज्जनो को दुन्दुभी बजाय मोक्ष दीनो है ॥ बड़े बड़े पतित जटायू आदि गति दीने हमरी सुबेरनाथ काहे देरलायो है। शम्भु सुरनाथ बिधि लक्षमी के पति चिद नामरूप करम तुम्हारे विविध प्रकारहै ४७५ नारायणराम कृत भवन बैठ्यो सुधानाम धारे कवि की सो गतिकरौ तुम्हरी नमामी है। जिनके सो पारखद नरायनराम हरिशरण नन्द सूनन्द दसम माधौपद सेवे है ॥ धन्य उनकी कृतशुभ तनको सुधारजग माधौभवन वस पुन माधौ यशगावे है। माधौ जीकी प्रजासुख विविधप्रकार करे जैसे वेद बिधि कहै तैसे नितकरै है ४७६ रूपनकी चौकी पै ले तहासो बिछाय देवै मज्जनस्थान जो अकान्त सुखदाई है । पाहिन रचित भुमसुध शुभायमान दुख देनहारी पंकनित सो अभाव है ॥ दतुनी सो आदि लैके मज्जनकी बिधि सब सांगो पांगो शुद्धरच पहले

सो तहां लेराखे है। शुद्ध चिदानन्द बिभु माधोप्रत्यक्ष नित हाटक असीनतज चौकी पै बिराजे है ४७७ नरायनराम हरीशरण हेमनके भांडनमें भागीरथी वारिलैके मंजन करावे हैं। सुमनके साथ प्रेमबपुको सँभारे भले सोमसुध पटसाथ जलको उतारे हैं॥ रतन खराऊँ पदपंकज में पायँ देवैं हेमके असीन आये तजिके बिराजे हैं। विविध- प्रकार राज ऋषयनके पट जोई हरीशरण मुनि रायरचके पहिनावे हैं ४७८ सुगन्ध वाले नेक भाँति चन्दनसा उतार शुभ माधो सुखभार माहिं बिधिसे चढ़ावे हैं। फूल पत्ती अक्षत सुगन्ध नई वेद शुभ फूलनके हार शुद्ध कंठ में पहिरावे हैं ॥ यथा योग अंगन सँभार भलीबिधि सब हेम धूपदानी बनी गंधीको जगावे हैं। तिसकी सुगंध उठि साराभवन भरजावे देव तहां देख सूँघनाक सुख भूले हैं ४७९ नानारंगवाले झाड़ तोरन फनूसलादू तिसमें सनेह पाय बनीको प्रकाशे हैं। मेवा मिष्ठान्न आदि देवनको भोगजोई हेमनके थालन बनाय संचराखे हैं ॥ विश्वधारी जगपाल हृषी- केश माधोराम उरमी सुखट नित जिनमें सुबाधहैं। भक्त प्रेमके अधीन नित सुख फल देनेहारे तिनका निवेद मुनिराय नित लावें हैं ४८० नदथाल घृत वाती से सँवार बहु हरिशरण तिसमें हुताशन प्रकाशे हैं। हरीशरण महाराज पानेसे उठाय लेवे मानो प्रातःकाल उरध सूर छालमारे है॥ वायेंहाथ घनट धुनै दहीने माहिं धूपदानी माधोजी की आरती वेदमन्त्र उतारे हैं। नरायणराम मुनिराज चौंरडोलावे बिधि मानो सन- कादिक शम्भुपै डोलावे हैं ४८१ और ऋषिमण्डल अपार माधोभवन बसैं घंटा शंख भेरी नेक बादको बजावे हैं। गोमुख सो तूर बिधि छैनै सो अपार बाजे बिजयघंट नागफनी दूर शब्दजावे हैं॥ धूसनपै चोबलागे मानो महा मेघगाजे भैरों सो शब्द सब नभपूरजावे हैं। करबायू आले बाजे नानाभाँति करवाजै निरपक्षमू बीचवाले माधो आगे बाजे हैं ४८२ आगे आगे हरीशरण आरती उठाय फिरै मानो मारतंखड फिरै महा छबिपावे है। जटाधारी ऋषिगण पाछे सो अपार फिरै विविध प्रकार सब बाजेको बजावे हैं॥ अडोल सोकुपीनलाय अंगमें भसम शोभै मानो निर्बेद बहु रूपनको धारे हैं। माधो सुत सुतकर आरती सो छबिपावै जैसे श्याम बारिधि में चन्द्र छबिपावे हैं ४८३ सुन्दर शब्द ऋषिमुखते उचारे सब जैसे बालाखिल सुर आगे श्रुतिगावे हैं। यहिभाँति आरती उतार सब देवनको शुभ अस्थान पुनि लायके टिकावे

है ॥ अरघ पाद्यमाहिं शुभ गंगाबारि लैके कर वेदमन्त्र साथ बिधि आचमन फेरे है। ब्रह्मबेत्ता बुद्धिमान हरीशरण हरीरूप कर कमल माहिं सो उठाय फिर लेवे है ४८४ भवनके समीप ऋषि मण्डल उदार खड़े अंग तम नाशिनी सो आरती दरशावै हैं। ऋषिगण तहां सुख आरती को लेवे बिधि शब्द जैकार सो उचार धुनिकरै हैं ॥ नमामी शुद्ध आपस में करत वनाय सब यथा योग्य जिनका सो तैसे नितकरै हैं। पद्म असीन माहिं माधो भवन आगे शुभ चक्र बाँध ऋषिगण बैठ सब जावै हैं ४८५ तम्बूरको बजावे कोइ तन्दरी बजावे ऋषिछैने को बजावे सुख माधो गुनगावे हैं। जिसके सो ज्ञानकर जग सिन्धु तुच्छ जानै जिसमें अज्ञानी पर थाह नहीं पावे हैं ॥ रामदास आदिलैके ऋषि सो अपार बसे सैकड़ों जिज्ञासु को उधार नितकरे हैं। वेद को पढ़ाये सूल अघ कु विध्वंसकरै ब्रह्म विद्यादान देके महा यश लेवे हैं ४८६ ॥

दो० ॥ याहिविधि माधवरामकी ऋषिन सहित मुनिराय।
पूजनकरि फिर अस्तुतिकरै पाद पद्म शिरनाय ४८७

छन्द ॥ नमामी नमामी मेरी नाथ नित्यमनाथं। पदाम्बुज केरे मैं भ्राँतम् ॥ जन। कोटि पुण्यं जो प्रकटे उदारं। तौ पदरेणू का होवै अधिकारं ४८८ जगतपाल इसमतू जापर कृपालं। जन्म मृति दाही तू करता निहालं ॥ निगमागम अधीनं करै कोइ क- र्म्मं। तपादि विधायक करे वहु जनमं ४८९ तौ पदभक्ती ते होवै बिहीनं। नहीं सुखपावे नरावे मलीनं ॥ संसारं पयोधिं गिरै वे दुखारं। घाटीयन्त्र जो इनं दुखभरमै अपारं ॥ कोमल शीलं कृपालं तुरूपं। दुखारत भवजीवा तुकरता निरलेपं ॥ मेरी तू रक्षाकरै सर्वकालं। चहुंखानी भवमंडल करो प्रतिपालं ४९० निरीहं निराकार ओंकाररूपं। नामरूपं विराटं धरे तू अनूपं ॥ खटं परनामं ते रहता निरालं। मनबाकं अतीतं सदा तू अकालं ४९१ कारण सुक्षं स्थूलं अधारं। शुद्ध बुद्ध साखी चिदानंद न्यारं ॥ अ- कृतम् अनाशी विभू मायानाथं। मेरी नमस्ते अनाथ के नाथं ४९२ बिघोना अनेकं तु मेरी खपायं। निज असीन माहीं तुमोकुरमायं ॥ निज भगतजानं करौ प्रतिपा- लं। तौ बिननाथं को जगमें दयालं ४९३ वेद विहितं सुखदायक धरमा अवतारं। धरम थापि यह आश्रम करौ प्रतिपारं ॥ भवजीवन अधीनं नहीं कच्छनाथं। जसा जस तुही दै करता सनाथं ४९४ नाथं परत्यागी अहं करतामानं। वह तुमारी माया

विषय अज्ञानं ॥ जठराग्नि गरभं खपैहो अपारं। गुरुभक्ती बिहीनं करै को उबारं ४९५ तू जापर कृपालं होयौ भवनासं। तव पद वारिजं सुखे विश्वपासं ॥ माधोरामं ये नामं सो धायं। करै ध्यान उरमें न राजे मदियायं ४९६ भवसिन्धु काहीकरे वह निवारं। महा मोक्षपावै नरा वे उदारं ॥ याते यह नामं महाउग्ररूपं। मेरेउ माहिं बसौ तू अनूपं४९७ त्रिगुणसहितं त्रिदेवं अकारं। भव उतपत्ति पालं तू करता संहारं ॥ लोके दिगपालं तुही है दयालं। ब्रह्मा।एडं अपारं के धामं अकालं ४९८ इच्छापर यतनं तू रहिता निष्कामं। शुद्ध ज्ञानरूपं गुरंरमतीरामं ॥ जगजीवनअचारजं धरमपालकारकं। अखंडं अद्वयतं तुहीहैअनेकं ४९९ वाकपाणिपादं उपायूउपस्थं। लोमंतुचारसना प्राणस्रोतं चित्त प्रमानं ॥ मनीसामनानाहंकारं सूखमकारं। अस्थूलंकोशंअधारं ५०० शुद्धसाखीस्व- रूपं सदानिर्विकारं। चिदानन्दंगुरवंकृपालंअपारं ॥ यहिभाँतिइसं तुमहिजोनाजानं। जीवनस्वरूपं दुखासहमानं ५०१ वहनरभ्रष्टं महापापरूपं। संसारंपयोधिंदुःखपावेअ- नूपं ॥ जबहोवहुकृपालं करौ ताहिपारं। ईशमाधवरामं तुमहिं नित्यजोहारं ५०२ ॥

दो० यह अस्तुति माधौराम की भनीनरायणराम।
जोनर गावें सुनैंनित लहैं मोक्ष सुखधाम ५०३

क० ॥ यहि भाँति मुनिराज हरीशरण सुखदाई जिनका सुमाधवराम धनद बनाये हैं। तिनकी जनन नितनई सो अपारकरे कहांलौं बखाने कवि अन्त नहीं पाये हैं ॥ चतुर प्रकार मोक्ष माधोलोक माहिं लीने संतसेव गुरुरीति नित्य प्रतिपाले हैं। मेवा मिष्ठान्न आदि माधोका प्रसाद सब ऋषिगण सबहीको प्रेमसाथ बाँटे हैं ॥ रविमास माधौवन ऋषि समुदाय बसैं पावसके माहीं पुण्यबस्तु अपारहैं ५०४ मुनिराज दान मान ऋषिनको पटदेवे संतसुख माधोवन नितसो बसावे हैं। देशकाल आदि कवि चितमें विचारकरैं धर्मकी वृत्ति रहना कलिमें अपारहैं ॥ नरायनराम मुनिकी समान ऋषि राजनको कहे कवि हाथ जोरि हमरी नमामी हैं। धन्य सो पुरुष जोई जगमें सो तनुधारी माधोवन वसि सुख आयुको वितावे हैं ५०५ तिनकी समान पुण्यवाले और ओई नाहीं जगसिन्धु मोह तजि माधौपद सेवे है। कालकाप्रभाव दुख तिनके नजीक नाहीं ऊभैलोक आशा तजि ज्ञानसहित होवे है ॥ ताते बुद्धिमानों सब मा- धौवन माहिं वसौ जगसिन्धु दुखभारी तहां अंत पावे है। वैरागसो विवेक षटसम्पति

बसाय उर गुरुकी सुसेवा तहाँकरै बुद्धि जोई है ५०६ जाति कुलकाभिमान तजि गुरु की शरण रहे तीनलोक भोग मिथ्या जाने सब मायके। संसार सुअपार तामें दुखको न पारावार तिसकी निवृत्ती पूछे कर कु मिलायके॥ निज अधिकार जान गुरु उपदेश करै तिसको कमावे सो सु मानो तनुपायके। अंतके समय माहँ पंच भूतनको त्यागि तनु जगदुख नाहीं फिर पावेभग आयके ५०७ विष्णु बिरञ्चि शम्भु इन्द्रकी समान होवे गुरुबिन भवनिधि तरे नाहीं कोई है। नामरूप चारखानी जीव जेइ तनुधारी जग में सो गुरु विन किन सुख पायो है ॥ गुरु मोख देनेहारे तिनहिं सुख जानि त्यागे तिसकी समान मन्दभागी कोई नाहीं है। जन्म जन्मांत्र सो जगदुख देनेहारी माधो पंद त्यागि मन्दमाया ध्यान लावे है ५०८ कल्याण हेतु मानो तनु दुर्लभ पाय जग मोख साधन त्यागि विषय बासनामें खोवे है । वेदगुरु ज्ञान बिन अगहोसून फिरै चोप देशमान जग समाको बितावे है॥ संसारकी सो माया माहिं जन्मै अनेकबार घटीयन्त्र जूनभरमें महादुख पावे है । बासनाको धारमन्द कृतकू कमावे विधि जन्म मृति फांसी निज गलमें सोपावे है ५०६ करममें अभिनिवेश रहित सदीउत्र अपनी खुआरी अघज्ञान बिनकरे है। माधोराम दयाबिन सुख नाहींपावे जग किसकी समान तिनै मायासू भरमावे है ॥ जाग्रती स्वप्न में स्वतन्त्र नाहीं होनपावे मायाके गुलाम जग महादुख पावे है। तन इन्द्रीसुख लिये मायाको व्यापारकरै तिनकी समान जड़ कौन जगमाहीं है ५१० मलमूत्र नाड़ी त्वचा श्वेतपित्त कफरेत मांस लोह अस्थी-कर पूरित शरीरहै। थूंक राल आतीमेद रोम मीड बुरीबास अंतनासी महादुख नरक भंडार है॥ ऐसे तन पालनको मूरख उपावकरै अहंत्वं जगमें सो अधिक मचावे है। महा ऐसे पामरनको वेद धिग धिग करै कालमुख परैसुख जगमें मनावे है ५११ अस जड़दुख मिथ्यातन दुर्गन्धि पाये कोबिद गलानि करै आश नहीं लावे है। जबतक अहंदेह उरमें अध्यास प्रास तबतक जीव सो कल्याण नहीं पावे है॥ अहंदेह बुद्धी यहिनाम सूं अविद्या कहै सकल कलेशन को मूल दुखदाई है । सत चित आनन्द व्यापी अविनाशी अजशांत सुखदाई ज्ञान तिसको अछादै है ५१२ नामरूप तीन काल सकल प्रपञ्चमिथ्या जिमि रज्जू सीप माहिं अहिरूप जोइ है। चारखानी जी-वनको तिसमें भरमायाकरै जिमि मारूवार पेखिमृग दुःख पावे है॥ अजचीटी आदि

लग कालके कलेवा सब ऐसेजग तनुधारि किन सुख पायो है। संसार सिन्धु दुख माहिं मायारूपी खारजल चारखानी जीव तामें मच्छ कच्छ बसे हैं ५१३ अत-मान माहीं नित मायाजाल माहिं फिर मोहरूपी भँवरपर मुक्ति नहिं पावे है। मनके तरङ्गनमें डिगकर धक्काखाय दुख सुख संचितको थाह नाहीं पावे है॥ जठरा अगिनि कर सदासुत पायमान त्रिसुना धिकाये वनी बिषयवार पीवे है। बिपतारूपी बायूदुख नितसू सहाय करे लघु मच्छी कामी क्रोधी नीच तामें जरे है ५१४ पांच सुकलेश सिन्धु झाडी भागलावे मन पुत्र परिवार सहित भोगमलखावे है। मन बुद्धि चित्त लाय इन्द्रके व्यापार माहिं निशिदिन भरमे उरशांत नाहीं लावे है॥ जन्म मृत्युकुंडी लागि आमिख संसार भोग हीन सो विवेक भक्खे गालजनम मृतुफारे है। पुत्र परि-वार सव दृष्टि आगे नाशपावे भोगमें रतवन्त रहे सार नाहीं पावे है५१५ कालझीवर कठोर दुख करमरूपी जाल लैके चारखानी जीव लैके फैलायके फसावे है। वासना सुरसी माहिं जीवन को बांधिलेवे निजती अकाल काकोलाय करदेवे है॥ जगहेतु सापनीय सुमोक्ष माय पाय लेवे अहंत्वं दसनहै छुराको चलावे है। काली नारि नागिनी के मुख माहिं परे रोवे भोग माखन को धावे झिझकोर दुख देवे है ५१६ जीरन अवस्थाकर जीवन बिदमकरे हीन पुरषारथ अवाच दुख गावे है। अधिकन जूनकाल देके प्राणकूंनिकारलेवे फिरकर जीवनको भोजन बनावे है॥ कालकाली दोनों मिल निखिल ब्रह्मण्डखाय जैसे सांप साँपिनी कुटुम्ब निज खावे है। नामरूप चारखानी वेदसहित पंचभूत चिरकाल पाय मनोराज फिर करे है ५१७ मिथ्या मनो-राजगज अग्निके उरमा सुमेरुकी समान सृष्टि ज्ञानको दवाये है। जाते सुख कृतांत के अधीन होय बारम्बार माधो दयाबिन दुख अंत नहीं पावे है॥ माधो के पदाम्बुज माहिं कवि जोरि हाथ खड़ो हरोदुख नाथ तुम बिन मेरो कौनहै। निष्काम दयारूप जीवनके प्यारे आप संकट हरण तुम्हारे नामका प्रभावहै ५१८ भवकष्ट सब जीवन को नाथ पद नाहीं बांधे तिसे तीनदेव आदि कोईना सहाई है। याते गुरू जिसपर अधि तू दयाकरो जग ग्राह बदनते सोई छुट जावे है॥ अज्ञान मूल तम फिर तिसे उरनाहीं आवे साखी तु कुष्ठ सुध तुही उरभासे है। चिदघन तुमरे सरूपका सो ज्ञान कर आडसे रहित जग मोख सुखपावे है ५१९॥ स०॥ माधोराम नरायणराम अमी

सुख सिन्धुजुग नामसुहोई। जीवनके कल्याणलिये भवसागरमें शुभसेतहै दोई॥ अजामिल आदिसे लैकै महा जड़ पारभये क्षणमें बहु सोई। माधो नरायणनाम सुधा कविके उरमाहिं बसौ सुखदाई ५२० पद बांचलिये सुख लक्ष जनावत बुद्धि विचारकरै मनलाई। जगकारन मायाको नाथ अधार जो सर्ब स्वतन्तर धारत जोई॥ फिर क्षीरसमुद्रहि ऐनबनायके शैनकरै कमला अज दोई। सब अन्तरयामी सो प्रेरक मैं जिसमें पुनशक्की अपार सो होई ५२१ जगत उत्पति पाल संहारकरै षट लक्षण केसहि व्यापक जोई। माधव नरायण पादनमें यह बाँच सो अर्थकहै बुध सोई॥ और सो अर्थ अपारहै वाचक भय विस्तार बखानो न जाई। लक्षअर्थ दोहूं शुभपादनमें नितत्तग विचारभने सुखदाई ५२२ एक अखण्ड अद्वैत चिदानन्द देश सो काल उपाधि बिहीने। नाम स्वरूप अधार सदा घन नित्त प्रकाश जेहि बेदबखानै॥ ज्ञानस्वरूप निरपेक्षक व्यापक कूटस्थ अजंना परमानै। नाम न रूप नहीं जिसमें पुन मायाविकार नहीं सब जानै ५२३ त्रिपुसे बिना अजरा सो परे जेहि योगीसमाधि लगायके जानै। माधो नरायन पादनमें श्रुति लक्ष सुवारथ रोही बखानै॥ यह गोप सो अर्थ अनूप महा ऋषिमण्डल माधो अरण्यमें जानै। नरायनराम तहाँ ऋषिराज अष्टांग सो योगकीरीति बखानै ५२४ समाधि बिषय परत बन्धक जुरसा स्वबादक खाय बिषेप नशावे। बिसीआ सकारज वृत्ती सुबाहिज अन्तर लायके ताहि दबावे॥ गिया अकार सो बृत्ती भले सहे बिकलप होत ब्रह्माकार ठहरावे॥ निश बिकलप असंग प्रति ज्ञात विषे पद माधो सुखलख बिषे टिकजावे ५२५ दुखमूल अविद्या सबै हनिके मुनिनायकराज सो योगकमावे। यह माधोरामका लख स्वरूप समाधि बिगर नहिं जान्यो जावे॥ माधो अरनके माहिं भले अधिकारी ऋषीबहु आय ठहरावे। नरायनराम तहाँ मुनिजी उस समाधिकी रीति बिशेष बतावे ५२६ प्रतिपाल करै सबकी कलिमें कलिका प्रभाव तहाँसे बिडारे। जो कोउ आयपरै पदमें शीघर शब्द सुनायके पार उतारे॥ ऋधी सुसिद्धी सुज्ञान वैराग मिलाय किये सदा व्रत सो जारे। माधोपुरीकी सुरीति यही मनवांछित सो फल पावत सारे ५२७॥

चौ०॥ माधोराम बिष्णु भगवाना। जिनकी महिमा सब जगजाना॥ सबलोकन सुखदिहिन अपारा। जेहि जप नामहोय भवपारा ५२८ अवधपुरी प्रकटे ब्रह्मरूपा।

जिनकी लीला जगत अनूपा ॥ पर उपकार जगतमें जोई । माधो समान कस्यो नहिं कोई ५२९ अश्वमेध आदिक शुभकरमा। वेदविहित पाले सुखधरमा॥ भाग-मान जगमें तनुधारी। माधोपद सेवे अधिकारी ५३० जगत मोह दुख जोइ भुलावै। कल्याणहेत माधोपद आवै ॥ निज अधिकार देख प्रभुलेवै। भव दुखहरण अमीपद देवै ५३१ वेदअर्थ निज शिषन पढ़ाये। ऋषिमण्डल बहु जगत बढ़ाये॥ वेदमर्य्याद धर्म सब जोई । प्रकटकीन जगमें सुख सोई ५३२ जामें लागि जीव सुखपावै । अन्तसमय माधोपद पावै ॥ जिनके शिष्य सखा बहु सोई । माधव वनरहें विचरैं कोई ५३३ धर्मबिबेक विराग जनावै । जीवन को कल्याण बतावै॥ सबलोकन बिचरैं निष्कामा। ज्ञान बपू लीने सुखधामा ५३४ रागद्वेष तजिकरैं उपकारा। सदा शान्तसुखलिये अपारा ॥ माधो उपदेशैं ऋषिगण माहीं । नाम सुसन्तऋषी इक रहहीं ५३५ द्विजतनु प्रेम विवेक सुधारे। गंगातट ऋषि बसैं उदारे॥ तापस उदासीन जागिरहईं । सुरसरि मंजे निर्भय रहईं ५३६ इन्द्रिय दमनकरैं मनमारे । जगत मोहते रहैं नियारे॥ माधो गुरुपद वारिजमाँही । ध्यानकरैं सुखभगत अथाही ५३७ गंगातट ऋषि यहिविधि रहईं। काल बितावे तपतन कसईं॥ एक समय ऋषसन्त उदारे। गुरु दरशनहित करन बिचारे ५३८ बहुदिन भयो न दरशन पायो । जिन केवल अज्ञान नशायो ॥ ज्यहिं द्वारा सुख ज्ञानको पावे। कृतघ्नहोवै बुद्धि सिखन भुलावे ५३९ ॥

क० ॥ यहभाँति ऋषिसृष्ट चितमें बिचारकर सुन्दर संकल्प सू उरमाँहि धारिया । बड़ी अभिलाष गुर देखने की छाई उर अवध सूबेधाम कासू चलै सो पधारिया॥ मगमाँहि चितवत गुरु माँहि ध्यानलाये अनन्द जुगत आये पूरी के मझारिया। म-धुमास रामनौमी परवी अपारलगी तिसदिन ऋषि सरयूकीन अस्नानिया ५४० ॥

चौ० ॥ प्रेम विधी भक्ती सुखदाई। तिस महि ऋषि मंजै मनलाई॥ जहँ तहँ सुर अस्थानन गयऊ। दरश परश लै सुख उर भयऊ ५४१ गुरु आश्रम आये ऋषधाये। जेहि कारण सुरसरि तजि आये॥ नरायण राम मुनिवर राई। ऋषिगण सहित बसै सुखदाई ५४२ चहुँदिशि कानन सुभग सुहावे । स्वर्ग बिपिन सम छबि बहुपावे ॥ ऋषिगण कर मण्डित बन सारा। कबि बरनै पीछे विस्तारा ५४३ नरायण गुरू बपु

धारे । माधो भवन में बसै उदारे ॥ माधो नरायन यक सुखरूपा । भेद रहित जिमिनद कट रूपा ५४४ ॥

क० ॥ हेमके सिंहासनपै बैठे मुनिराज सुख मानों ब्रह्मलोक चतुरानन सुहावे हैं। सनकादिक समान ऋषिगण चहूंदिशि बैठे मानो चन्द्र माँहि परिवार छबिपावे हैं ॥ वैराग सू विवेक ज्ञान जिमि तनुधारे बैठे तपोकांत भारी अघ तमको नशावे हैं। शांत सो उदार चित्त दयाहै अपार उर ब्रह्म विद्या ऋषिनको बैठे उपदेशे हैं ५४५ जीव ब्रह्म भेद टार अभेद सुख बोधकरै मुदरा कल्याण धारै द्वैतको नशावे हैं । शुद्ध शांत ऋषिगण तहां सुअपार बैठे श्रवण आदिक निध आसना कमावे है ॥ पान को मिलाये सब मुनी अग्र माँहि सोभै शंका समाधान सुनि संशयको मिटावे है । कहै कवि हाथजोरि सुनो मुनिराज अब हमहूँ को पारकरो तुमहीं कू लाजहै ५४६ ॥

चौ० ॥ मध्य सिंहासन मुनिवर छाजे । तपोकांत पिख पावक लाजै ॥ करम लाय निमरसन घेरे । कुश आसन शिप बैठ घनेरे ५४७ नारायन राम मुनीवर राई । निज गुरु भवन वसे सुखदाई ॥ ज्ञानरूप मानों चतुरानन । संत खिती बहुकरै कल्यानन५४८ निष्काम शुद्ध शिष्य को करिकै । संसार सिन्धु से राखै कसिकै ॥ कल्याण हेतु वैदिक शुभ करमा । वीज संत महि बोवै धरमा ५४९ दया वहुत कर जल बरषावै । विचार विरख सिख भूम लगावै ॥ षट सम्पति आदिक सुखदाई । शाखा तिनमें दिये लगाई ५५० भक्ती मैत्री करना दाया । पत्ते यही रचे सुख छाया ॥ बसंत ऋतु महा वाक्य सुनावै । श्रवणहिं मानों फूल लगावै ५५१ मोक्षरूप फल जो सुखदाई । शिष्य श्रवण में दिये लगाई ॥ आपोक्ष ज्ञान निसेनी रचिकै । सिक्खन हृदय सुराखै कसिकै ५५२ समाधि रूप निदिध्यासन जोई । सने सने करवावै सोई ॥ मोक्षरूप फल अंत वतावे । सिक्खन को सुख सिन्धु लुटावे ५५३ सुख फल मोख असीचख भागै । अंत समय तनु छिलका त्यागै ॥ माधोराम ब्रह्म सुखरूपा । तिनमें मिलै त्यागि भव कूपा ५५४ जीव जल में जल आय खटाना । तिउ जोती संग जोति समाना ॥ अनूप प्रमान गुरु नानकदेवा । वेद मंत्र भनेरखउनभेवा ५५५ याते मुनिनायक सुखदाई । तिनके पद पंकज सिखपाई ॥ जन्म मरण नहिं जगमें आवे । चिदानन्द होवे कबि नहिंगावे ५५६ ॥

दो० ॥ संतऋषी गुरदरशहित जो आये थे धाय।
सो प्रसंग अब आयऊ संतसुनो सुखदाय५५७ ॥

स० ॥ संत ऋषी मतिमान महासुख माधोरामके सेवक प्यारे। माधव सरोवरके तटआयकै मंजन कीनभली परकारे ॥ कलिमल नशावन तीर बिपय ऋपिदरभसु आसनलीन सुडारे। सिद्धासनमारिकै बैठे भले चिदमाधौ इष्टको ध्यानसुधारे ५५८ नितनेम सो कीनभलीविधि सों गुरुदरशनको विधलीन उपाये। दरसेमाधो अरण्य बिषयगुर पर्णकुटी शुभदीन दिखाये ॥ रीठसो जामूके वृक्षलगे तहाँ मौलशिरी पनसा घनछाये। नानाप्रकार के फूलन की फुलवारी लगी चहुँओर सोहाये ५५९ शिंशिपपरास अशोकलगे सुखआममहीरघनेत्रलाये। माधवराम कुटी सुखदायक पलउमाँहि दूरीछबिपाये ॥ मुनिनायकके सब शिष्यनकेत्रडारन में बहुचीर सुखाये। बलकल ऐनसोछालसुके जेहिआश्रम पेखिसुदुःखपलाये ५६० संतऋषी बुधदूरन से गुरुआश्रमदेखि महाहरषाये। निमर भावधरे मनमें गुरुपर्णकुटी ढिगदौरि के आये॥ गुरु आश्रमपौरिसमीप भले ऋपिठाढ़भये युगपाणि मिलाये॥ गुरुपरनकुटी के सो चारिउ ओर सथंडिलपै मुनीबाल सुहाये ५६१ मानोसनकादिक ब्रह्मपुरी महिरूपकोधारिकै बहुतरहाये। संतीऋषी एक विद्यारथीसो बोलाय के कान में बाक अलाये॥ शुभ सुन्दरबालक जाहु अभय गुरुकेढिग जो भवमें सुखदाये। जिनकेपद पंकज पाय बिना चिदमाधौ ब्रह्मते दूरिरहाये ५६२ मुनिराजनके पद पंकज में भले अगमनमोरात सुधजनाऊ। जस सुन्दर अज्ञामुनिराजनकी बुद्धिबालकपायकै मोढिगआयो ॥ यह भाँति कह्यो ऋष जो तबहीं बालक बुद्धिमें लीनसोधाख्यो। शब्द हीन सुताकसो खोल भलीविधि धाय गयो गुरकेढिगठाढ़्यो ५६३ हाथसो जोरि नवाय शिरो मुनिराजनकी भतिबन्द सुनाये। भगवन धरम औतारमही अजनाथ चराचरतू सुखदाये ॥ कल्याण सरूप महामुनिजू तुमसंतऋषी तव चरणमें आये। राउरपदाम्बुजदरशनके हित बाहरठाढ़े सो अञ्जलिकाये५६४ नाथकी आज्ञाप्रतीखत हैं ऋष ठाढ़भये चिरसेबहुआये। गुरु मायापतीशुधब्रह्मचिदा जिसमाधौ रामने जगत उपाये ॥ जिसकी महिमा नित वेद पुरानसोगाये भले सबलोक जनाये ५६५ सोई माधौ रूपभयो मुनजू तुमनाम सरूपहू फेरधराये। गुरु माधव नरायण पादशकी अर्थ

एक समान दिखेसुखदाये ॥ कविपूरब वेद कलायमते युगनामनके अर्थ एकजनाये। जो नाम सरूपमें भेदरखै वह मूरख में सरदार कहाये ५६६ जुगपाद अभेद सदा सुखदायक सन्तऋषी जिस सेवकआये । तुम्हरे पदके शुभ सेवकहैं मतिमान शरणागत चाहत पाये ॥ भवमण्डलमें बुद्धिमान वही नर जो तुमरे पदमें मनलाये। अगमूलहनो तिसके उरमें चिद माधव सरूपमें देत मिलाये ५६७ जिनके तुम नाथ अचारजहो तुमरे पदको बुध क्यों बिसराये। जगमाहिं सो मूरख वही फिरे तुमरे पद पाय त्वदीन भुलाये ॥ जग सिन्धु गिरे सोमि अन्तसहै दुख तुमबिन नाथ तिन कौन सहाये। सन्त ऋषीपद सेवकको अब नाथकृपा हम देहुली आये ५६८ ॥

चौ० ॥ यहिविधि गुरु प्रति बालक कहेऊ। सुन चित महँ मुनि हर्षित भयऊ ॥ प्रेमगिरा अमृत शुभवानी। निज शिषके प्रतिकीन बखानी ५६९ बुध बालक तुमरी कल्याना। ऋषिवर लावो मम अस्थाना ॥ धन्य आज दिन सुफल सुभयऊ। सन्त ऋषी मम आश्रम अयऊ ५७० धन्यदेश जहाँ सन्त सुहावे। जन्म मरण भय दुःख मिटावे ॥ भागमान् शिष्यसू जगमाहीं। सन्तबसैं जिनके घरमाहीं ५७१ जगमें कौन पदारथ होई। जो सन्त शरण नहिं पावै सोई॥ जेहि घर सन्त भगत नहिं आवे। प्रेत मशान तिव जीव रहावे ५७२ राक्षस तुल्य न रहै वह देशा। जहँ सन्त निरादर पाय कलेशा॥ मूरख पशुवत जगमें रहई। सन्त निरादर पिषभै करई ५७३ सन्तसँग शास्त्र बुद्धिकर हीना। वेनहोय सन्तनमें लीना॥ सन्त निरादर जहाँ सो पावै। धर्म विरोध राज गलिजावै ५७४ छपनकोटि यादौ नृपसागर। रावण कुम्भकर्ण सो उजागर ॥ जिनकी महिमा अगम न गावै। कुन्दभवन बसि बहु सुख पावै ५७५ तिन सन्तन दुखदै भरमाये। शाप अधीन नाश दुखपाये ॥ महान्त वेदवित जगमें जोई। सन्त निरादर करै न कोई ५७६ सन्तदरश. लखि होय निहाला। चार पदारथलिय ततकाला ॥ जो नहिं सन्तनके गुणजानै। दुख भवनिधि लैहोय हैरानै ५७७ माधोरामजु इष्ट हमारे। तिन सन्तनहित रक्खै प्यारे ॥ सन्तन के गुण लक्षण सेवा। यक माधोराम लखै सब भेवा ५७८ धर्मपालन की रीती जोई। तिन बिन जगमें लखा न कोई ॥ सन्त भगत गुरुरीति सदाई। यहि आश्रम होते चलि आई ५७९ गुरुकीरीति सदा सुखदाये। महापुरुष सब

करत सुहाये ॥ यहिविधि मुनिनायक बुधजोई । धर्मविधी कहि बोले सोई ५८० ॥

क० ॥ जाहु बुध बालक सो सन्तऋषी पास बेग हाथको मिलाये प्रेम मोरेढिग लावोना । गुरुके निकेत जहाँ सुख सो अपारहोय आदरसहित तहाँ डेरा सो कराउना ॥ चरणपखार भले माधवका प्रसाद अमी प्रेमसाथ हाथजोर ऋषीको खिलावना । सन्त ऋषीआदि सन्त मेरिही सुरूप जानो माधव भक्त प्यारनको कहा जग पावना ५८१ माधव भगवन की सो रीति यहि आश्रम विषय सन्त ऋषि मुनिन से भेद नहीं लावना । जहांतक बने तहां सेवा सुअपार करें ईसर समान सब संतनको जानना ॥ गुरूकी सो बाकसिधि वेदकी समान जानै ब्रह्मरूप जान सुख दीहानको लगावना । अंचारजकी सिख जोईमानै सोउदास सिख ब्रह्मरूप पावै,भवमंडल न आवना ५८२ ॥ स० ॥ नरायनराम महामुनिजू यहिभाँतिसू सिखपै सिखय सुनाये । गुरुभक्त महाबुधबालकसुगुरुवाक्य हृदय धर धन्य मनाये ॥ हाथ से जोर नेवाय गिरी ऋषिके ढिग बहुतसेताबसे आये । माधव कुटी के सुचारिउ ओर सुथंडिलपै मुनिशिष्य सुहाये ५८३ वुधबाल गायो सोसजातिन में सबकोपिन टेरकेलीन मिलाए । मुनिराजनके सब विद्यार्थी हंससंत ऋषीशको लीन उठाए ॥ चलिए मह राज गुरु भवन विषय धन्य भागभई तव दरशन पाए । चहुँओर सों बालक आनँद से पुनि बीचमें संत ऋषी कुम्हिलाए ५८४ ॥

चौ० ॥ माधौ भवन सो सब मिलिआए । चहुँदिशि बालक सुभग सुहाए ॥ स्रोनित बसन कोपीन चढ़ाए । अखण्ड भस्म सब बाल रमाए ५८५ मानो श्याम घटा सो सोहावे । छटा समान बसन छबिपावे ॥ सिद्ध जटा सो सुब्रण सम जोई । बालक शिरन कलापे सोई ५८६ ॥

क० ॥ रुद्र अवतार श्रीचन्द्र भगवान जोइ मानो बहुरूपधर मनको चुरावे हैं । माधौ भवन पतिके चौफेरे सब बाल आवे बीचमें सो संतऋषी महाछबि पावे हैं ॥ नरायण राम मुनिराज गुरु निज आसन में हेमके सिंहासन पै माधवरूप छाजैहैं । संतऋषि मतुवान दूरहीसे पाए दरश आपना सो जन्म धन्यकर लेखे हैं ५८७ यहिभाँति संत ऋषी बालकसो साथ लीने मुनिराज के समीप पहुँचे महा हरखावे हैं । हेमका सिंहासन सुचारिउओर घेर लीने बीच में नरायनराम महाछबि पावे हैं ॥ ऐसे मुनिराजन

को बलहारिजावे कवि सूरज में मानो सोममण्डल सोहावे हैं। माधौजीकी अस्तुती सो गावें सब बाल खड़े स्वरको मिलाए सोमराग में अलापै हैं ५८८ मानो देवऋषि गण शम्भुजी के आगे ठाढ़े बिबिधप्रकार तानतूर मनहरे हैं। संत ऋषी साथ मिलि बालकसमूह बुध गुरूकी सो पूजन बिबिध सब करे हैं॥ मुनिराजन के चरण पखार लीने संत ऋषी सजातिनको बाट निजमाथ पै चढ़ाए हैं। पान फूल अक्षत सुगन्ध को मिलाए विधि धूप दीप आरती बनाए सब पूजे हैं ५८९ ऋषि मतिमान सुखबिधि कर सबन मो कीन दंडेकी समान हरषाएके। गुरूभक्ती के अधीन महायुग पाणि जोर कर निमिर भाव चित में सुलीन सुख धारके॥ यथायोग गुरूकी सो अस्तुती बनाए लीने नरायनराम माधवरामका चित्तमें सुधारके। जिनकी सुलीला सबवेदके मँझार माहीं ऋषिमुनि समभने सुखदाएके ५९०॥

चौ०॥ उठके हाथजोरि अनुरागे। गुरु अस्तुति ऋषि करन सो लागे॥ हे गुरु तुमरे चरण मँझारा। मेरी नमस्कार बहुबारा ५९१ तुमप्रभु रतन ब्रह्म सुखसागर। नामरूप में व्याप उजागर॥ मनके बिषयसूत जिमिहोई। तिमि गुरु बिभु न्यारे तुम सोई ५९२ नाम जगत ब्रह्माण्ड अपारा। ताके शिव तुम परम अधारा॥ चार प्रकार जीव बहु जेते। करम अपारकरें बहुतेते ५९३ तुम सहकारी तिनके नाथा। इच्छारहित तू सदा अनाथा॥ जगत शुभाशुभ किरपा जोई। तिसके फलदाता गुरु सोई ५९४ इसरूप गुरुभव नित कारन। जगत जीव दुखकरो निवारन॥ देशकाल उपाधि है जोई। तुम्हरे महँ कल्पित हैं सोई ५९५ निर्मल चिदघन यकरसरूपा। मनवाणी ते परे अनूपा॥ माधव नरायण शब्द दुआरे। बुध सुख तुमको नित्य विचारे ५९६॥

क०॥ जगत चराचरके उरसो ब्रह्मांड माहीं साखी चिद्रूप धार तुहीं वासकरेहै। निश्चल अखंड शुध व्यापी सुखदाई नित प्राणवाक इन्द्रिन को बोधिक कूटस्थहै॥ बिबिध प्रकार देह इन्द्रिके विकार नाथ तुम्हरे सरूपका सो लेप नहीं करे है। जैसे रवि तोई ताराछटा वायूघन चांद नभ माहिं गवनकरे नभ एकरसहै ५९७॥

दो०॥ माधो नरायन शब्द जो वेद मंत्र सुखदाय॥
ममउर आयन कीजिये अगहनो दुखदाय ५९८

छं० ॥ सदानन्दरूपं नरायणं सो रामं । गुणातीत विभुवं अखिल विश्वनाथं ॥ बिना उपाधि व्यक्तं मनवाणी अगोचरं। चिदानंदं ब्रह्म अज्ञानाशी गुरुवं ५९९ अमाया परेशं तू साखी अनामं। जगतमूल माया प्रकृति जेहि नामं ॥ जडाभाव मिथ्यं तौ आसरे बिभस्तं । तिसके तू प्रेरं सदा गुरु अकृतं ६०० प्रानं अपनिसहकारी तु गुरुवं । गोये अभिंनं तू भासै निर्लेपं ॥ अस्ती सोभाती प्रिया जगतरूपं । अलिख ब्रह्मवेतं तुमहि ध्यान धरतं ६०१ त्रितमायावसिष्टम् नाम माधो नरायणम् । शिव मायाप्रछिनम सदा मैं भजेहम् ॥ स्थूलं सो कारण सुक्ष्म मतस्यरूपं । इनको प्रकासी तुरीतो निर्लेपं ६०२ भवाकार ग्रीहं अहं दुःखनाथं । करो मोहिं पारं गुरुवं भक्तवत्सलं ॥ संसारं पयोधिं जो होवे अनाथं । तिसके सुखदायी करो नित साथं ६०३ दयाशीलरूपं तू धरमा अवतारं । अनाथं के दुखन तू करता निवारं ॥ निरीहं अकृतं सदा शुद्धबोधं । चिताज्ञानं अपारं तू अचलापयोधं ६०४ उत्पातिपालं भवकृतासंहारं । गुरूरूपधारी तू करता भवपारं ॥ नारायणं अच्युतं जीवनसुखधामं । हमारे तू इष्टम् सदा माधवरामं ६०५ माधव नरायणम् सुधानाम नित्यम् । अहंऊर तिष्ठैसदा मैंभजेहम् ॥ संसारपयोधिं सुगूढं अथाहं । गुरुपोतं अलम्बं तू देवेकर पारं ॥ नित जन संतन करौ प्रतिपालं । तुमबिन नाथं को भवमें दयालं ६०६ ॥

चौ० ॥ यहिविधि सन्तऋषी मतिमाना ।.गुरुकी अस्तुति कीन बखाना ॥ मुनिनायक नारायणरामा । बहुत प्रसन्नभये सुखधामा ६०७ माधोबन ऋषिमण्डल जोई । तिनमें हैं सुखराशी सोई ॥ कुशआसन शुभ तुरत मँगाये । शिष्यन हाथ दिहिन बिछवाये ६०८ सन्त ऋषीले बालक जोई। दरभासन बैठे सब कोई ॥ भक्ती दीनदया उरधारे । गुरु सम्मुख शोभैं करजोरे ६०९ मध्य सिंहासन मुनिवर छाजैं । जिन्हैं पेषि सब अघगण भाजैं ॥ ऋषिगणकर सोहैं परिवारे । कैलासपती मानो तनधारे ६१० धरम मर्य्याद गुरूकी जोई । शिष्यनको दिखलावे सोई ॥ जामें जगतजीव सुखपावे । जगत जन्म भयते छुटिजावे ६११ सन्तऋषी प्रीतमको पाई। बहुत प्रसन्नभये मुनिराई ॥ दुख भयहरण सुधासम बानी । क्षेमकुशल पूंछै मुनि ज्ञानी ६१२ सन्तऋषी गुरुरीति सो देखी । मनमें हरषित भयो विशेखी ॥ पाणि जोरि शुभ शीश झुकाई । निज गुरुसे बोले ऋषिराई ६१३ क्षेमकुशल आनँद

प्रभुजोई। देखि चरन प्रभुपायो सोई॥ व्यापक सबघट अन्तरयामी। जीवनसम पूछौ तुम स्वामी ६१४ भगवन भूत भविष्य है जोई। वर्तमान जानौ सब सोई॥ जिस जगतन लै नहिं कुशलाई। जान बूझि मोहत मुनिराई ६१५ निजमायासे लेहु बताई। मैं पदसेवक तव शरणाई॥ जो तुम्हरे पद शरण मँझारा। सुखलौं उतरैं भवनिधि पारा ६१६ दुख आपदा जीवनकर जोई। गुरु सुखदै बांधै भवसोई॥ माधोभवन सुखदायक देशू। धर्मसूरति तहाँ वसै हमेशू ६१७ ब्रह्मरूप चिदगुरु तप आले। जगत मोहते सदा निराले॥ हमारि कुशल पूछौ सुखदाई। तुमबिन नाथ सो कौन सहाई ६१८ दयासिन्धु माधो चिदजोई। सो सुख बपुधार्यो प्रभु सोई॥ कसना पूछौ भवजन हितकारे। तुम सुखदायक ईश हमारे ६१९॥

क०॥ जीव सो चराचरके तुम सुख आयेन प्रभु माधोका सुयश गुरु तुम धर्मपालिया। शील औ सन्तोष समदरशी क्षमा जगमें सदैवी सुखसम्पदा सो तुहीं उरधारिया॥ वेदरीति जगमें सु बहुत अस्थान देखे जहाँ तहाँ गुरु मैंने कान निज सुनिया। वेद की मर्य्याद धर्म करम प्रतिपाल जोइ माधोकी समान कहुं रीति नहीं जानिया ६२० अवर सो कलिका प्रभाव व्रत चारिउओर अशुद्ध करम जगमें सो करै सब ठानिया। कहुँकहुँ जगसे सो वेद अनुसार कृत सोभीसुन श्रद्धाहोके करै अभिमानिया॥ देखा देखी करमकरै तातपर्यजानैनहीं सुरति से बिरोधचले मायाकी हंकारिया। वेदविहित सन्तसेव माधोपुरी माहिं व्रतै नातो और थान कलु लीनोहेत काइया ६२१ तुच्छ दुख मायापाय कलिमाहिं नर सब भये मतिमन्द सन्तसेव नहीं जानैं हैं। अन्तके समय माहिं फिर कालके अधीनहोके मायाके प्रतापकर अधोगति जावैं हैं॥ माधव नाम के प्रताप बिन कष्ट सो अपार पावै तनधारि जीवको सुकलेश नाहीं है। अज के प्रपंच में सो कुशल सो नाहीं नाथ तुमरे सो माया सब लोकन भरमावे है ६२२ हमारी कुशल तुम पूछौ दीनानाथ जोइ जानतहौ गुरु तद्यपि कहियो से सुनाय कै। तुमरी सो माया के भरमाये होय नाथ मेरे तुमरे चरण आयो सुखमें तकायकै॥ जन्म मृतु पेखि प्रभु जगमें सो दुखी भयो हमरी सो लाज गुरु राखौ तू बनायकै। संसार दुखपार लिये तुमरी शरण आयो हमैं उपदेश करौ दुखी महा जानिकै ६२३ पंचभूत देह धारि जनमो अनेक बार घटी यंत्र जोय न भरमौं अंत नहीं पाइया। तीनलोक

आदि सब माया का प्रपंच दीखै सुखलेश नाहीं महादुखहै अपारिया ॥ अंतके समय में सब तीनलोक नाश होय खाक होके गिरै ब्रह्मा सहित सृष्टि सारिया। आश लावने योग कोउ जगमें सो नाहीं नाथ अलम गुरुदेव नित सुख जो अपारिया ६२४ ॥

चौ० ॥ यहि बिधि संत ऋषी मतिमाना। निज गुरुपद महँ कीन बखाना ॥ नरायण राम जगत गुरुज्ञानी। भवनिधि दुखनाशन सुखदानी ६२५ शुभजि ज्ञासु ऋषी सुखदाई। सुनकरि प्रसन्न भये मुनिराई ॥ कह मुनि धन्य २ ऋषिबानी। जाकर पूछौ दुख की हानी ६२६ तुम उपकार बड़ो यह ठाने । परहित प्रश्न सो करैं सयाने ॥ महापुरुष होवे भव जोई । पर उपकार करै बुध सोई ६२७ ज्ञानवान तुम परम सयाना। जीवन हित पूछौ कल्याना ॥ याते ऋषि तुम दया कि खानी। परहित प्रश्न करै कोउ ज्ञानी ६२८ ॥

क० ॥ सरिता बिटप गिरि धरणी अकाश संत पर उपकार करै दुख निज पायकै। तिनके समान ऋषि तुम मतिमान महा परहित जीवन को चाहो सुखदायकै ॥ वैराग सुखदाइ ऋषि तुमको सुनाओ जो संसार मोहजाल दुख जावें सो पलायकै। जन्म मृतु हरष शोक आपदाके बीच में वैराग एक सुखदाई और न उपायकै ६२९ ऐसे निरवेद सुखदाइ जीव त्यागि देवे तिसके उपदेश विन नहीं मोखलायकै। इन्द्रैभोग दुखरूप सुखजान सेव नित मोक्षसुख नित सब दीन सो भुलायकै ॥ जिस आतमा को ज्ञानकर जगसिन्धु पार पावे तिसका उपाय नाहीं करै मन लायकै। संसार हेतु बिसह काह निशिदिन ध्यानकरै होय न कल्याण बिनु दया माधौरामकै ६३० मोक्षसुख माहीं पुन जितनको साधनहै सबके सो बीचमें वैराग शुभ नायकै। वैराग सो बिबेक जिस अंतसमय आवे भले षटसम्पती समाज सब आवे सुखदायकै ॥ गुरुद्वारा मोक्षज्ञान सीघरसो आवै नर जिसउर साधन सो बसै सब आयकै। चार साधना जुगुत जबतक नहीं होवै नरज्ञान मोक्ष नहीं पावे नित सुखदायकै ६३१ ब्रह्मानन्दको जिज्ञासी कोई एक माधौवन आवे माधव पदपाए जग महासुख पावे है। नातो धन सुत भूमि लक्षिमी के भूखे आवै अनातमा पदारथ कुरंक स्त्राल पावे है ॥ निजगुरु आशरम सुखका अवध महा जैसे जीव बासना सो करै तैसे पावे है। नंगा भूखा रोगी फिर माधौपद पावै नाहीं गुरु अज्ञा छोड़ निज योगको नशावे

है ६३२ उपदेश गुरू देवैनाहीं आत्माको पावैनाहीं अनआत्माको सेय के कंगाल सदा रहे है। मोक्ष सुखदानी अमी सुरसरि वारि जैसे तिसै त्याग अग जीवकूप जल पीवे है॥ तैसे मोक्ष सिन्धु मेरे गुरुका भवन सुधा यहां मोक्ष त्याग माया दुखमांगे है। ऐसे मूरखन समानसो दृष्टांत नाहीं जग कोई गुरूतत उपदेश तजि बिष पीवेहै ६३३ रागद्वेष इरपाकर दुखी रहै जगमें सो गुरूज्ञान बिनु खरसूनवत फिरेउ है। संसार रोगभारी गुरूज्ञान बिनु छूटे नाहीं इसवाक वेद नित डोगीदै बखानै हैं॥ गुरू बिन ज्ञान नाहीं गुरूबिन ध्यान नाहीं गुरूबिन आत्मा संतोष न लहतहैं। ऐसी ऐसी वाक बहुग्रंथ के मँझार माहीं तिसके सोज्ञान बिन भूल दुख पावे हैं ६३४ गुरूसो ग्रंथमाहिं देखौ सो विचारकर गुरूपद गुरूसेव अधिक बखाने हैं। पाठकरै तातपरज समुझै सुधारै नाहीं घर माहिं निधी दबी देखे बिन भागे हैं॥ हर हर नाम पूजी सत गुरु हाथ कुंजी मनका सुतका गुरूबिन नहीं खूले हैं। यही निज कारनते वेदबानी पढ़ैसभ गुरू की सो दयाबिन ज्ञान नहीं पावे है ६३५ यही भेद जानिके अचारजके सेवनमें ऋषि मुनि सबहूने प्रथम बखाने हैं। ऋषि मुनि बाक त्याग आत्माको ज्ञान चाहै तिसका उपावमानों बेतहीन रंकहैं॥ जैसे करमहीन सुरराजपद पावे नाहीं माया मिथ्याजानै जग नाहीं सतभासै हैं। तैसेनर जगमें सो गुरुभक्ती हीनहोके आत्माको ज्ञान सुख कदे नहीं पावै हैं ६३६ सामराज महामोघ सुख कैसे पावै नर आतम बोध जिनका सो गुरू विन नाहीं हैं। माधोपद का जिज्ञासी ऋषि कलि में सो नाहीं अब मायाके सो भूखे जगमेरे पास आवे हैं॥ ब्रह्मविद्या को अधिकारी पुन तिनको न जानसके महान पुरुष जगमें सो तुसनी रहावे हैं॥ मोक्षज्ञान मारग सो तिनसे छिपाय लेवै भातबिन भाखै नाहीं हवनको राखै हैं ६३७ संसारके पदारथके भूखे अधिकारी जान दयालाग गुरुदेवै बहेरमुख होवे हैं। ऐसे महामन्दन को कहा अधिकार ज्ञान मायाके गुलाम होके मंद कृतकरे हैं॥ बितके बैपार लिये देशनमें धावै सब तृष्णा अधीन निशि दिन कष्ट पावे हैं। मायाको अकत्रकरे मोक्षहू तूलावे नाहीं पुत्र परिवार खोटे मारगमें लावे हैं ६३८ दारासुत धनधाम मोक्षके प्रतिबंधी महाजगतमें दुख दैके तिनहिं नित पाले हैं। देवद्विज गुरूमान शुभकरम त्यागि देवै पापको पहार निशिदिन सुकमावे है॥ बिबेक सुखदायक सो तिनके नजीक नाहीं दारा एक जगमाहीं तिनका सो इष्ट

है। अधोगती कुंड दुख वामसो अगाध महा तिस माहिं अघजीव परे सुअपारहैं ६३९ विष्ठा जन्तुकी समान महामोहित गँवार अंध दुख सिन्धुतीया माहिं सुख नितमाने हैं। पुत्र परिवार उरग तिनको सो काटे नित दुसहि आदिष्ट ते महान दुखपावे है॥ पुण्यकर्म हीननर सुखनाहीं पावै जग गुरुदेव आगे सो अवाच दुखगावेहै। कन्दपा बीसूचिका सूजीवनको घेरपाये तियाकुंड में सो पकर गिरावें हैं ६४० थोषित अधीन होके हरवत नाचै नित राक्षस सरूप मांस मद दुखखावे हैं। तियाहाथपरे पिया वैलह्वैके फिरै जग खानपान लिये तिनै रातदिन जोतै है॥ धनधाम खानपान बसन कटक आदि नहीं पावे सारंग महान दुखदेवे है। लोक कुल लाज तजि वित्तहित पुरुषधावे सभा शुभकृत कोटि निशंक फिरकरे हैं ६४१ आदिष्ट पुण्य उदयभये कोइ एकलाभते दम्पती अनित्य सुखमाहिं सुखमाने हैं। नातो तिया पुरुषनको घुनकी समान खाये हीन सो वैराग नर महादुख पावे है॥ साँप औ छछून्दरसमान घर त्यागैं नाहीं जन्म जन्मांत्र सो तिया दुखदाई है। लोक परलोक शुभमूल से बिगारदेवे नारिके ऐब जोई चितमें विचारे है ६४२ कुशल सो वई नर जिन जग बाम त्यागे धारिकै वैराग सुबिवेक ईश भजे है। नातो तिया कागदकी पुतरी समान गजी मानो नेक गजमोह फंद दुख सहेहै॥ जनमभै दुखकुंडा बामको सहारै शिर अंत माहिं तनु त्यागे अधोगती देवे है। याते महामन्दनको लाजनाहीं आवै जग त्यागिकै बैराग दुख देनहारी सेवे हैं ६४३ नरक सुथैला बाम सिरेपै उठाये रहै अभरन आदि तामें लाये देव पूजे है। मानोमात्र संग या झूठ तिनको सुजानो सदा तियासेवे मूरखन को मेरी सो धिकार है॥ शूकर परिवार सम जगमें फैलावे कुल बेदके बिरोधी होय आप नाशपावे है। जादो परिवार सव जादोको नाशकीने जरे बाँस बनसम महा दुखपाये हे ६४४ ईश्वरको भगतहोय सूरकी समान कुल नातो सप्तधातू के सूमूतै प्रमान है। जैसे इकगैल माँहि सोमसूर जगपालै उडुगण सम परिवार किस काम है॥ ध्रुव प्रहलाद शुकदेवकी समान होय एक सुत जगमें सुजग सुखदाई है। नातो कलिमाहीं माधो जीका प्यारा कोई एक खितभार देनेवाले सुखुत अपारहै ६४५ नालति उन पुरुषन को वृथा माता कुक्षिजने माधोनाम त्यागि जिननारी में लोभाये हैं। छल अरु कपट की देवदार जगमें सो कामदास नरनारी भगत कमावे है॥

चिदानन्द रामचन्द्र नारीका अवाच्य दुख गुरू के समीप नानाभाँति से बखानै है। निन्दारूप नाहीं जग जीवनको ग्राहलगी जीते मुए मूरखनको नरक भोगावे है ६४६॥

चौ० ॥ युवती नरकरूप है जोई। इनमें मोहकरै जो कोई॥ ते मतिमन्द जगत में लागी। रौरवनरक में परैं अभागी ६४७ परमानन्द सुखनपर त्यागे। सुत परिवार हितन अनुरागे॥ तिन पुरुषनको धिग धिग मोरा। मुनिगण यह सबदेत ढिंढोरा ६४८ सन्तगुरूसे करै दुरावै। श्रुती पुराणन दोष लगावै॥ पतिवञ्चक स्त्री जगनाना। तिनमें मन्दकरैं अभिमाना ६४९ नरकरूप स्त्रीको देखी। मूरख जानै हृदय वि-शेखी॥ योषित अग्नीरूप समाना। अधम सुजरे पतंग समाना ६५० जीते देवे भय दुख जनका। अन्तसमय लैडारै नरका॥ ताते तजै बामको संगा। स्वपने में दुखदेत अभंगा ६५१ जिन मूरखन स्त्री शरमारा। ते कैसे उतरैं भवपारा॥ नरक अज्ञानमें जरै सो मन्दा। तिन पुरुषनको धिगहै निन्दा ६५२ नारि बुरी बेश्या अरु परकी। तीजी नरक निशानी घरकी॥ ताते हे ऋषि बाम कू त्यागे। कालसमान पेखि दुरभागे ६५३ तबहीं होय हिये कुशलाता। नातो जन्म जन्म दुखदाता॥ रावण कुम्भकरण ते भारी। तिनको स्त्री कीन्ह खुआरी ६५४ दुर्योधन पाण्डवसुर दानो। तिन संग्राम परस्पर ठानो॥ द्वादश योजन छत्र सो छूट्यो। देही जिनकी गृद्धन लूट्यो ६५५ सो सब जानो वाम प्रभाऊ। श्रुतिपुराण औ ऋषि सबगाऊ॥ कपट कूट छल दुख तियखानी। महाकठोर जानत जे ज्ञानी ६५६॥

क० ॥ देव दैत्य सिन्धुतट सारँग अधीनभय सुधाको दिखाय जिन युद्धको करायो है। दशरथ शिशुपाल सुन्दशुभसुन्द हने सुरपति शापभयो भगमें लोभाये हैं॥ परसपित जनमेजय तियाधीन भय तीन पट दिजमार शाप दुखपायो है। दाराप्रभाव जोई जान तज जगमाहिं कालरूप देख बुध माधोपद भागे हैं ६५७ नातो तिया मोहफंद जगसिन्धु माहिं पर घटीयन्त्र जोइनभरमैं अन्तनहीं पावे है। अजकीट आदि लग तनुधारे सुखनाहीं आत्माके ज्ञान बिन सून पछितावे है॥ नरायनराम मुनिराज जगके पदारथमें आत्माके ज्ञानलिये दशन दिखाये है। जगमें कनिष्ठ खानपान तिया माहिं फिरै तिनहि वृक मारिकै वैराग सो जनावे है ६५८॥ क० ॥ सर्वससुख बैराग बिषय नित ज्ञानबिना नर मोक्ष न पावै। भवमण्डल माहिं असूतर फिरै यहि तेजत

पियाविना नहिं आवै ॥ प्रभुता धन धाम असव जंगनतें सुरराजालिये जोइ भक्त कमावै। बुधिमान अहै नर जो जगमें सब त्याग बैरागलै मोक्ष कमावै ६५६ सन्तऋषी मतिमान भले गुरु बाक हृदय धरके हरषाये । संसार सो दुःख अपार महा तिसकी पुनि ओरसे चित्त हटाये। निर्वेद भयो ऋषिके उरमें गुरुकेढिग प्रसन्न कौन अलाये॥ आतम ज्ञान में कारण जो गुरु आप कृपाकर देहु सुनाये ६६० भगवन ब्रह्मसरूप कृपानिधि तुम सर्वज्ञ महेश समाना। मैं मतिहीन अजान महा जन्मादिक संशयमे दुखमाना ॥ आप दयाकरिहो जबहीं गुरु तबहीं हम पावब परम कल्याना । निज आतम बोध सो चाहतहौं जन्मादिक दुःख हरौ अब नाना ६६१ ॥

चौ० ॥ यहि विधि ऋषिके शुभ सुनि बानी। हर्ष सहित बोले मुनि ज्ञानी॥ आतम ज्ञान में कारण जोई। हे ऋषि तुमहिं बतैहौं सोई ६६२ जगत जाल माया प्रभुताई। महा अपार अलंघ दुखदाई ॥ कोटि ब्रह्माण्ड पंख जिमि जैसे। मायाजालमें फसा है तैसे ६६३ चेतन आतम अमल अनूपा। भूलि पखो माया भवकूपा॥ क्षार सिन्धु मायामें भरमै। निजपद भूलगयो मरजन्मै ६६४ करम अधीन लोक सभजावै। देह धरै दुख अन्त न आवै॥ सुख दुख आतम चिद्के माहीं। भेद ज्ञान बिन पावै नाहीं ६६५ सुख दुख जन्म मरण सब करमा। मिथ्या देह इन्द्रिके धरमा॥ ज्ञान विना नर आतम माहीं। धरम परायो अरोपै ताहीं ६६६ सीप रजत गुनमें अहिजैसे। जनम मरण आतम में तैसे ॥ तदपि निवृत्ति आप नहिं पावै। गुरु बिन अधिक जन्म फसि जावै ६६७ जिस अज्ञान ते कल्पै जोई। ताके ज्ञान से बांधै सोई ॥ निज अज्ञान ते जगत देखावै। आतम ज्ञानते भय छुटकावै ६६८ जिमि प्रभु बिन तम नहिं जाई। कोटि उपाय करै चतुराई॥ तिमि अघतम आतमको अवरे। आतम ज्ञान दहै दुख सगरे ६६९ गुरु देशकाल शुभ शास्त्र जोई। ईश दया बहु पुण्य जो होई॥ यह संयोग जीव जब पावे। ज्ञान पाय भव दुःख मिटावे ६७० निज अनुभव आतम सुखपाई। अवाध नित्यम आनन्द सो रहई॥ अब ज्ञान विधी मैं कहौं बखानी। ऋषि मुनि सकल कहत जो ज्ञानी ६७१ जासों आतम सुख निज पायो। जन्म मरण भयते छुटकायो॥ जग मिथ्या कल्पत है जोई। फिर तुमको नहिं व्यापै कोई ६७२ ॥

क० ॥ मायाकृत जगत अडम्बर अपार सिन्धु तिसमें बैरागकरै रागको मिटायकै।

गुरुकी शरण आवे आत्माको ज्ञान लेवै गुरुपद माहिं टिकै चित्तको लगायकै ॥ ब्रह्म श्रोती ब्रह्मनिष्ठी बाणी जाकी वेदसम कीजै ताकी सेव दुखमानको हटायकै। ईश्वर की सेवाते अधिक गुरु सेवकरै दृष्टी सो अदिष्ट फल देह सुखदायकै ६७३ अचारजको देख सिख डंडे के समान धरि ढिग पद बन्दना सो करै मनलायकै। चरण सरोज ऋण तिसको उठाय कर उत्तम सो अंग माथे लावै हरषायकै ॥ तन मन धन बाणी गुरूको चढ़ाय देवै उत्तम यज्ञ आशा राखै चित्त में बढ़ायकै। गुरू सेवा यहि भाँति करै सो बनाय सिख आत्माका भेद तब पावै सुखदायकै ६७४ गुरू की सो आज्ञामाहिं निशिदिन वासकरै निजतन लाय सेवाकरै बिस्तारिया। ब्रह्मकी समान जानै मनमें सो प्रेमराखै गुरुकी प्रसन्नता को राखै अभिलाषिया॥ दोषदृष्टी मनमें सो कदाचित नाहीं राखै शिव हरी अज गंग रबि सम जानिया। एकान्तदेश बैठ ईश गुरूका ध्यानकरै ऋपि सिख जगमाहिं पावै कल्यानिया ६७५ दारासुत भूमि पशू दासदासी द्रव्यगृह दुखजानि त्यागदेवै मनको हटायके। नातो गृह करनेवाले गुरू को चढ़ाय देवै उद्दालक जागवल्की समान गुरु जानिके ॥ त्यागी गुरुदेव धन धाम दुखनाहीं लिये तन वित जग नाशवन्त निज जानिके। महिमा अचारजकी शिष्य सो अपारकरै शुद्ध मन अस्तुति सो करै सुखदायके ६७६ जगमें कल्याण सिख आपना जो चाहै सुख तन मन धन बच अरपै यह भांतिसे। गुरु ढिग कष्टपरै त्यागै नाहीं बासकरै तन लिये भिक्षाकरै शुभ सुखदायसे ॥ सोभी भिक्षालाये सुख गुरु निज आगे धरै आपने सुखाने लिये माँगै ना उतालसे। तिसकी परीक्षा लिये गुरु जवनाहीं दिये दूजीबार नगर में जावै ना बिचारसे ६७७ भिक्षा शुद्ध अंगन जब गुरु निज हाथ दिये सिखदौर पान लिये खाये उत्साहसे। यहिभाँति बुद्धिवान गुरु सेवै निशिदिन गुरूमें गिलानी नहीं करै रहै त्यागसे॥ आपने सो उपर जब गुरुको प्रसन्न देखै पानि जोरि ठाढ़ होय सिख निजभक्तसे। अस्तुती अचारजकी करै सो अपार सुख भव के निवृत्ती फिर पूछै निरभावसे ६७८ मोक्ष कामना सो बाल निज अधिकारी जान भलीभाँति गुरू सिखलेवे सो निहारिया। मोक्षमाहिं साधन जो उकुत ज्ञान वेदन में सोइ उपदेशै शंकाकरै दुख हानिया॥ परमानन्दके स्वरूप माहिं सिख कू मिलाय देवे जीव ब्रह्म भेद टारदेवे सुखदानिया। करम औ उपासनाका शिष्य

अधिकारी जान ब्रह्मविद्या तिसकाहि देवे नाहीं दानिया ६७६ बे बिचार मन्दकाहि आत्माका बोधकरै बुद्धी सुमलीन माहिं ज्ञान ना प्रकाशिया। नभ प्रतिबिम्ब जैसे पंक सहितवारि माहिं चंचल मलीन माहिं कदे नाहीं भासिया॥ तिमिमन्द सिख उर ज्ञान मानहोय नाहीं करमन को त्यागदिये बुद्धी भ्रष्टपाइया। याते शान्त शुद्ध बुद्ध जबतक नाहीं होय करम उपासना करावे गुरु ठानिया ६८० शुद्धबुद्ध सिखहोय गुरू जब जान लेवे फिर उपदेशै ज्ञान फल सहित होइहै। गैनका अभास जिमि शान्त शुद्धवार परै सिघरसो ज्ञान तिमि सिख उर होइहै॥ अज्ञान अंधकार दुःख उर माहिं छीनहोय वेद उक्त गुरू जव करे उपदेश है। बोधै गुरूसिख तुम व्यापी चिदरूप नित दुखलेश रहित ब्रह्म अज अविनाशी है ६८१ जन्ममृत्यु आदिबन्ध मोक्ष ते नियारे बोध मन इन्द्रीवाकनको सदा तू प्रकाशी है। मल औ विशेष जग बन्धक बिकार जोई तुमरे सरूप माहिं लेश कहूँ नाहीं है॥ नित्त शुद्ध ज्ञानरूप विभू सबलोक माहिं नामरूप रहित षट भावन बिकारहै॥ बन्ध दुख तामहि होय मोक्षता की सम्भवै है बन्धमोक्ष तुम्हें नाहीं सदा तू अद्वैतहै ६८२ जन्ममृत्यु आदि जो संसारका बिकार जोई तिसकी निवृत्ती ऋषि उरमें तू चही है। नित्त परमानन्द जो अबाध सुख वेदकहै तिसकी प्राप्ती की इच्छा उरआई है॥ ऐसी शुभ बासनाको मूल सुअविद्या जानो सुखचहै दुख बाध भ्रान्त कर हुई है। जिसके सो लिये ऋषि करत उपाव विधि सोई नित प्रमानन्द तुमरा सरूपहै ६८३ याते नित्त अपना सरूप जो प्राप्ती है तिसकी प्राप्तीकी विधि नहीं बने है। आगे जो अप्राप्ती वस्तू ताहीको विधान बने नितवस्तू प्राप्तकी बने न उपावहै॥ अपना सरूप चिद नितही प्राप्तहै तिसकी प्राप्ती लिये भ्रांति बिना नाहीं है। जनम आदिलैके जो संसार सू अपारदीखे कहौ सतहोय तो निवृत्ती ताकी बने है ६८४ स० सो संसार जन्मादिक जो दुख तेरे विषय ऋषि लेशन कोई। अनहोय जो दुःखनकी सुनिवृत्ती की इच्छा सूभ्रान्तबिना नहिं होई॥ याते जन्मादिक भासरहित ऋषितू शुद्ध ब्रह्म चिदानन्द सोई। याते जन्मादिक दुःख जोई चिद आप विषे नहिं मानत कोई ६८५॥

दो० ऐसे जब तुम जानिहो पैहो अनँद अपार।
जन्मादिक जो उरधरे गिरेदुःख संसार ६८६

स० ॥ संत ऋषी अतिमान महा गुरुकी यह वाक हृदय सुखधारे । हाथ सुजोरि नवाय शिरो गुरुकी शुभ अस्तुति कीन अपारे ॥ सुख मोख महि साधन ज्ञानगुरू ऋपिजान भलीविधि लीन विचारे । निज आतमरूप जो आनँद है तिसमें ऋपि शङ्का सो कीन उदारे ६८७ भगवन आप कह्यो सुख आतम मैं भल जानलियो उर माँही । तदपि शङ्का सुआवत है तुमरे पदमें अब कहत सुताही ॥ जो चिदानन्द आत्मा होय गुरू विख्यात सम्बन्ध सुख भासन न चाही । संसार विषय सनबन्धन ते यहते सुख आतमहै तनमाहीं ६८८ भव भोगनके नित आनँद को प्रत्यक्ष गुरुजीव मानतसोई । यहिते भव भोगन माहिं भले वैराग न धारतहै नर कोई ॥ संसार सुभोग सखोपत में सन्बन्ध सु आतमका नहिं होई । सुखसून सुखोपति आतम है जड़ रूप समान सो भासत सोई ६८९ ॥

चौ० ॥ यहविधि ऋपि की संसृति बानी । नरायनराम सुने मुनि ज्ञानी ॥ चितमें बहुत प्रसन्नता लाये । भवभय नाशक वचन अलाये ६९० कहमुनि सुन ऋपिमेरी बानी । जाते होय सकल दुखहानी ॥ अज्ञवत आतमहै जोई । तिसते जीव दुखमाने सोई ६९१ बहुत उपाव विषय मनलावे । बिनाज्ञान अनर्थ नहिं जावे ॥ निष्काम करम उपासन जोई । मैल विशेप नशावे सोई ६९२ सकामकरे बन्धनको पावे । तिर्य्यग्योनि जगमें भरमावे ॥ याते होय ममोखू जोई । निष्काम करम ठाने बल सोई ६९३ फिर ज्ञानहोय उर अंग नशावे । जिमि दिनेश तम मार भगावे ॥ सम्बन्ध विषय आतम सुखदाई । अब तुमसे भाषौं ऋपिराई ६९४ ॥

क० ॥ ब्रह्मविद्या श्रवनकर तिसके अभ्यास बिन आत्माके नन्द काहि पुरुष नहिं जाने है । जन्मजन्मान्त्र मू विषैमा अभ्यासकर विषैकार वृत्ती सुख दुख नितरहे है ॥ रजो तमोकी बहूलताते सतोगुन दबौरहै ब्रह्माकारवृत्ती ज्ञान सुख ढपिजाते है । आतम सुख विपयमाहिं आप नाश नाहीं माने अज्ञानकी अधिकताते विषय माहिं माने है ६९५ आत्मा निसुख बुद्धी जेहि कालमाहिं होय भोगनकी इच्छा चित उठै उर आनिये । इच्छाका संयोगपाय चंचल सुहोय वृत्ती आत्माका सुखभास होवै तामें हानिये ॥ जब अभिलापत पदारथको पावै जीव अंत्रसुख वृत्तीहोय चंचलको नाशिये । क्षणमात्र विरती पुनि अन्तर माहिं टिकजावे चिदका अभास तामें परै सुख

जानिये ६९६ तिस आतमा सरूपके अनन्द प्रतिबिम्ब काहि अनुभवकर पुरुषन को भ्रान्ती नितहोवे है। मेरीकाहि विषयका सुलाभभया जगमाहिं तिसका सुसुख मैंने आज भले पायो है॥ ऐसी ऐसी भ्रांती नित्य होयसू अविद्याकृत आतम सूख ज्ञानबिन बिषै सुखमाने है। जिसपर गुरु ईशदया होय जगमाहिं आतमसुख चिद नित वही नरजानै है ६९७ समाधी सुसुखोपती मैं ब्रह्मानन्द सुख जोई तहाँ ऋषि योगीका सुहोन वही चाई है। विषय सुखमान उत्तम विषयका अभाव तहां योगी सुअपार सुख तहाँ नितलेवे है॥ जाग्रत अवस्था माहिं उठकर कहै नर आज सुखसोय मैंने कछु नहीं जान्यो है। सुखपूरस अनुभवकरै आत्माका रूप जानो नहीं जानै कछू सुअविद्या तहाँ रहैहै ६९८ समान सुख चेतन अविद्याका बिरोधी नाहीं त्रिधा सो अवस्था मैं अविद्या सिद्धकरे है। ब्रह्माकारवृत्ती जब उरमाहिं थिरपावै तिसमें अरूढ़होके अघको नशावे है॥ जैसे वनीदारमें समान विभू चारिउओर मथनते अधिकहो अन्धकार नाशे है। तिमि योगीसू अभ्यासकर ब्रह्माकार वृत्तीकर अघतम नाश सुख आत्माको जाने है ६९९ सुखमस्थूल त्रिधालोकके मँझार माहिं सबके अवात्र सुख आत्माका व्यापी है। यही निज कारनते आत्माका सुखलैके बिषय भोग जगमें सो नन्द नित भासै है॥ विषय माहिं सुख कीधौं आत्माका सुख मेरे गुरुते विवेकविना नर नहीं पावे है। यक बिषयभोगै नित दूसरेकी इच्छाहोय चल वृत्तीमाहिं सुख भास न रहावे है ७०० बिषय माहिं सुखहोवै एकै विषय माहिं टिकैं विषय माहिं सुख नाहीं याते नित भरमै है। जिमि एण नाभि में कस्तूरि गन्ध वास करै मृग निज रूप जानै बिन और न भरमै है॥ तिमि आतम सुख ज्ञान बिन अग जग वन माहिं माया कृत भ्रांति वस विषय माहिं धावै है। भोगनको सेवै नित होत सो अनित जाये निशिदिन उद्यम सो करत बिहावै है ७०१॥

चौ०॥ मुरखन सुख माया में मानै। ज्ञानवंत सब मिथ्या जानै॥ सीपरूप गुण मैं जिमि भोगी। तिमि सम माया जानत योगी ७०२ सतचित आँनँद आतम जोई। तिस्में माया कल्पित सोई॥ याते जगत रूप सब माया। आतम ते नहिं भिन्न जीउ छाया ७०३ जिस अद्धिष्टांट में कल्पित जोई। अदिष्टां रूप वह होवै सोई॥ नाम रूप जग मायन दानौ। आतम में कल्पित ऋषि जानौ ७०४ याते

ब्रह्मविदा जो देखै । अहं रूप सो सब जग लेखै ॥ जैसे जल में उठे तरंगा । जलै रूप फिर होवै भंगा ७०५ तैसे जग आतम मैं जावै । विश्व अंत लै आत्म रहावै ॥ आदि अंत जो वस्तू नाहीं । संतन मध्य लखै मनमाहीं ७०६ जीउ मरन मैं अंत घटनाहीं । नामरूप कल्पित मनमाहीं ॥ घट नाम रूप मिथ्या बुधमाने । आदि अंत माटी मधुजाने ७०७ तैसे नाम रूप जग जोई । तीनकाल नहिं भया सो कोई ॥ तद्यपि मनमें मधु जग भासै । मनुषै भये जगत सबनासै ७०८ ज्ञान वैराग ते ऋषि मन वाधो । जिसमें भवनिधि तरै अगाधो ॥ नामरूप संसार असारा । सखौपति माहिं न रहै पसारा ७०९ मन लै होय अविद्या माहीं । याते दुख जग भासै नाहीं ॥ मन जगतीन अवस्था जोई । अविद्या रूप पछानो सोई ७१० अविद्या जड़ दुख मिथ्या जानो । आतममें कल्पित कर मानो ॥ याते अविद्या कल्पित जोई । आतम को नहिं व्यापै सोई ७११ जैसे मारूथल जल होवै । भूमि गील कबहूं नहिं खोवै ॥ तिमि अदिष्टांततक कल्पित जोई । बांध बिगाड़ सकै नहिं सोई ७१२ याते तीन अ-वस्था माँही । एकरस आतम रहै सो ताही ॥ नाम रूप संसार अडम्बर । तीन अवस्था के है अन्दर ७१३ तीनों आपसमें व्यभिचारी । ज्ञानवंत सब ढूंढ़ विचारी ॥ याते तीन अवस्था भाने । आतमनन्द को न्यारे जाने ७१४ विषय सम्बंध न आतम होवै । उल्टा विपय में सुख निज देवै ॥ जिमिहरी अबध निज वपु देवै । बारभूमि सबरस गँध देवै ७१५ तिमि विपय संयोग आतम को पाई । सुख रूप भोग भासै गुरु भाई ॥ याते विपय सुख बुध देखै । अपने आनँद तिसमें लेखै ७१६ ॥

क० ॥ ब्रह्मवेत ब्रह्मरूप देखत जगत जोई आपने स्वरूप ध्यानकरै मनलायके । मन बुधि इन्द्री आदि सबको प्रकाश करै साखी शुध सुख ब्रह्म आपने को मानके ॥ मृग वार ठूंठ चोर खेह जिमिनील भासै तिमि मिथ्या जग भासै मेरे में सो आनिके । सत-चित आनँद अचल अविनाशी अज हमरे स्वरूप सब भजै मनलायके ७१७ ब्रह्मवेता पुरुपनको ऐसी निश्चय होवै ऋषिनाम रूपमाहिं व्यापी अहं नितमाने है । देहजगधार सुखजीवन मुकुतिलेवै अक्षय सो विदेह मोक्ष अन्तसुख पावे है ॥ मन बुधि बानी आदि तिनको न जानिसकै ज्ञानके प्रभावकर ब्रह्ममें समावे है । ज्ञानकी समान ऋषि कोइ नाहीं साधनहै जिसके प्रभाव माधौरामका सुपावे है ७१८ मोक्षरूप आतम

माधौ सदासो अकृत अहै वेदकृत आत्मा में नित सुन खेदे है। देशकाल नामरूप आत्मामें मय नहीं कहूं आप तेजवायु तामें पृथ्वी न अकाश है॥ राति नहीं दिन नहीं चन्द्र सूरतारा नहीं खानी बानी तिसमें न आवन ना जावहै। खंडसू पतालनाहीं सागर सो नदी नाहीं अधोगति नाकसुख दुख तामें नाहीं है ७१९ अजाशिव हरी नाहीं नारिसो पुरुष नाहीं जातसो जनम मिथ्या यती सती नाहीं है। साधक सिद्ध योगी जंगम वेष आश्रम कोऊ नाहीं जपतप संयम पूजा व्रत नहीं करै है॥ वेदबानी पढ़े नाहीं किसीको सुनावे नहीं आपने सरूप व्यापी आप चिदानन्द है। तुलसी माला पहिरै नाहीं गोपीकान ग्वाल नाहीं तंत्र मंत्र तिसमें न कुवंशी कुबजावैहै ७२० करम धरम माया नहीं ममता कलेश दुख काल जालरहित आपकिसे ना ध्यावे हैं। नादविन्द जीव नाहीं जिन्दोज्ञान ध्यान नाहीं देव देवल गात्री न जाप नाहीं करै हैं॥ होम जगकरै नाहीं तीरथमें जावे नाहीं भावभक्ती शिवशक्ती चिह्न नाहीं धारे हैं। वेद सो कतेब नाहीं श्रुति सो पुराण नाहीं बोधरूप खटनको इच्छा नहीं करै हैं ७२१ कथै सुनहिं आपपुन आपसो अगोचरहै अलख अपार चिद सबको लखावै है। उदय अस्त रहित तीनों देवोंका उपावे फिर मायामोह जालरच जीवन फँसावै है॥ पंचभूत खंडद्वीप तीनलोक सागरसो दशचार भुवन सो मायामें बनावै है। अस्थूल सूक्ष्म चारखानी नामरूप गोपदृष्टि तीनलोक नामरूप न्यारे न्यारे थापैहै ७२२ अचल अखण्ड सो अच्युत अबिनाशी बिभू भूतनकरै आप उत्पति रहितहै। कुलाल जिमि घटकरै घटनते न्यारेरहै उत्पति नाश घट साथ नाहीं पावे है॥ तैसे चिद यज्ञ करै न्यारे तामें बिभूहोय उत्पति नाहीं जिमि घट नभ व्यापी है। साखी शुद्धरूप होके सबको प्रकाशकरै आपने स्वरूप माहिं स्वयं प्रकाश नितहै ७२३ ऐसे निज आपने सो आत्माको जानो ऋषि तुही शुद्ध नित ब्रह्मजगत प्रकाशी है। तीनलोक सहित नामरूप जो बैराट दीखै तुमरे सो आत्माहै नानारूप धारे है॥ जैसे एक मृत्तिका के नानारूप घट होवैं तैसे नामरूप जग तुमरे तरंग है। जीवसाखी नाम धार सूक्षम स्वरूप होके सूत मन गणकी समान तुही व्यापी है ७२४ द्वैतबस्तु कोई नाहीं आदि अंत जाने नाहीं वेदबानी तुमरी हेतु महि को जनावै है। जाल मकरीसमान तीनलोक का बटोरतही आपने स्वरूपमा अभेद तुही करैहै॥ बीज

वृक्ष की समान जग तुमरे मा बनारहै काल पाय तुही सो वैराट फिर धारे है। परमारथ स्वरूप त्रिकाल सो अबाध व्यापी व्योमकी समान चारिउ ओर निरलेप है ७२५ अद्वयत सुखचेतन अखंड ज्ञानरूप नित त्रिपुटी से रहित ऋषि सदा तू अडोल है। ताते ऋषिदेवत त्याग सदा तू अद्वैत मानो यही ज्ञान मोक्ष माहिं कारण सुखदाई है॥ अज्ञान दुख चिह्न तुम यही जानो उरमाहिं द्वैतकर आपने मैं कृत जोई माने है। सोई ज्ञानी सुघर स्वरूप जग पूज योग अहंब्रह्म मानिके कर्तव्यता जो त्यागि है ७२६ अहंब्रह्म जबतक आपनेको नाहीं मानै तबतक दीन सो दुखित पछितावे हैं। भेद सो प्रतीति याते महादुखदाई जानो कठौली माहिं धर्मराज सो बखानै हैं॥ ताते भेद वाद दुख जान चित त्यागै ऋषि योग अनुराग सो अद्वयत वाद सुख हैं। दुतियाको मतधारे भये ताको वेद कहै गेधे आपने ते जुदा जोई माने हैं ७२७ देवनके पशु बने करमन में लागेरहैं सुखलेश नाहीं तिन्हैं नित दुखपावे है। कृतका जनावनवाली देतवानी दुखदानी ब्रह्मविद्या सुनी होय तिसको नशावे है॥ द्वयतवाक जबतक हिये माहिं वासकरै होय न साछात सुअद्वयत दुख पावे है। द्वयतवाणी जेहि घरी चितमें सो आदि होवै प्रत्यक्ष ज्ञान सहित पुरुस मरतीको न नशावे है ७२८ ॥ ल० ॥ यहिभाँति सो द्वयत सो बाक सुनै ऋषि कोमल ज्ञानको देत नशावै। परपक सो ज्ञान बिना उरमें करम सिद्ध विषय फिरके लगि जावै॥ विधुनापरे वह करमन में सुसकाम सुजाल विषय फँसिजावै। अधिक पंच क्लेश उठे चितमें फिर चंचलह्वै दुख शांत न पावै ७२९ शुद्ध बुद्धी सुनाहिं रहै उर मैं सुबैराग विवेक उभय न रहावै। नरहोय परबरती शुभाशुभ में पुन होय धर्माधर्म उरठहरावै॥ जग सिन्धुअपार सुमाहिं गिरे पंचभूत का देहनको फिर पावै। अज्ञान अधीन चौरासीफिरे दुख योनिन में नहिं अन्तसुपावै ७३० कल्पप्रयन्त जठरागिनमें दुख करम अधीन स्वतंत्रनआवे। ज्ञान बिना नरमोक्ष न पावत बहुरोकल्पान्त प्रकृतिसमावे ॥ अनेक युगान्त माया विपय वृक्ष बीजसमानसू तहांरहावे। उदय संचितपुण्य जूहोय कबै सतसंगी कूले कहजन्मकूपावे ७३१ गुरुज्ञान वैरागको पायभले सुखमोक्ष गेती कहुँ जायके पाये। कुल उत्तम जाति सतसंग विषय तनपुण्य अपार होय नरपाये॥ नाहिंकरम अधीन सुनीचनके घर माया पंचभूत-

कदेह उपाये । अंधकार अविद्या सुघेरलिये सुविवेक शुभाशुभको नहिं पाये ७३२ कुलनीच सम्बंधीनके संगमें नितनीच अपार सुकरम कमाये । राछ तूंलसूवृती रहे यज्ञ भक्ष अभक्षकरै दुखदाये॥ भखभोजनके अनुसारनते बुद्धी भरिष्ट महासुकठोर रहाये । वासना मलीन अपारउठै मन आसुरी सम्पति चितमैं छाये ७३३ ॥

क० ॥ वासना जमीनमें अशुभ करमनार चले मोहजलरूपी दुखतामें सुअपारहै। षटचार इन्द्री मीन जल में सुवासकरै चिन्तारूपी तटलौं लोभ वगुला लोभाई है॥ निन्दा हिरस चुगली सू झाड़ी सुसघन वन राग द्वेष पाटभारी सदा सुअलंघहै । कामरूपी चोरबसै वासना सुबायूचलै इच्छारूपी कांटा दुख सदासू वखेरे हैं ७३४ हिंसारूपी विच्छ जामें क्रोध सो पिशाच बसै आशा सिन्धु दुखदाई जगको चबावे है । हंकार दुखदाई सांपवसत सो झाड़ी माहिं तृष्णा सूडाइन नित भक्षनेको धावैहै॥ सुरहारी पारमरस मासअहारी बिषयी सुराक्षस सरूप नार बनमें वसतहै । छल अरु कपट सूचूहा जहाँ बासकरै ज्ञानसू वैराग सू विवेक वेलकाटै है ७३५ चोरीयारी झूठ जहाँ किसनित वासकरै बिपता महीरनपै बास नितकरै है । हँसी मसखरी तहाँ बायस नीच रोलाकरै द्रोह सो कठोर बिल्ली झाड़ी में लुकानहै ॥ शब्दस्पर्श रूप रस गन्ध विषय जोइबनी तहाँ लागी दैवी सम्पदाकू जारै है । चंचलताई वितलिय नागिनी सूझाड़ीरहै ममता सुनाग दुख नित्यप्रति रहिहै ७३६ जगतके भोग तहाँ अमिष सुअस्तीपरै पुत्र परिवार सदा जम्बूसू पुकारै है । संसार के पदारथको देख सुनि जहाँ तहाँ मनरूपी इल्ल तहाँ वैठके तकावे है ॥ कुबुद्धी विघाड़ी तहाँ निशि दिन वासकरै कुदया विघाड़ सब जीवन सतावे है । सिंहनी अस्मतासु तहाँ दुख-दानी वसैं वंदी झूठ दम्पती सुऋक्ष टोलरही है ७३७ तमोगुण वलवान नृप तहाँ राजकरै काम क्रोध आदिलैके प्रजनकू पालैहै । रजो अहं भूपति के घरमें व्यवहार होय मूरख प्रमादसू वजीर अज्ञाकारहै ॥ अज्ञान अन्धकार तहाँ झाड़ी मन्द खुशीरहै कालकूट हाथी तिनै छेद छेद खावै है। ऐसे वनमाहिं जीव आयके वसेरालीनो ज्ञान सुवैराग बिन महादुखपावे है ७३८ मीन अलगज औ कुरंग औ शलभ देखो एक एक बासना अधीनहोके नाशे है । जिनमें सुपांच बिषय निशिदिन बासकरै तिन-का कुशल सुख कहां जगलाभहै ॥ ब्रतमान माहीं टेढ़ी जोइनपाप पुण्यकरै तिस

का सुफल शुभ भिस्त नाहीं पावै है। पंचविषयके अधीन जीव बारम्बार दुखपावे भव सिन्धु वनमाहिं बिषयसू सरसावे है ७३९ माधवराम दयाकरै जिसपर जगमाहिं सोई याते वनते निकर सुखपावे है। माधवपद मोक्षभजै ऐसा वनं तुच्छ जानै जगसिन्धु दुखभारी मृगवार भासै है॥ माधवराम चिद जोई तिनकी उपासनाते अन्तमाहिं तनवान तजि चिद होवै है। माधवराम इष्ट मेरा तिसपद पाये जीव जगसिन्धु नाहीं तरै ताको थाह नाहीं है ७४०॥

दो० हरष शोक ऋषिवर भयो सुन उर माहिं बिचार।
उपदेश सुनै गुरुते हरषि असुरी सुन दुखभार ७४१॥

चौ०॥ यहि विधि सन्त ऋषी मतिमाने। गुरुके वचन सुसुनि हरषाने॥ पाणि जोरि ऋषि विनय सो कीने। गुरुभक्ती सुख उरमें लीने ७४२ कह ऋषि हे गुरु तुम्हें नमामी। तुम सब जीवनके सुखधामी॥ असुरी सम्पति कर व्यवहारा। आप कह्यो गुरु दुःख अपारा ७४३ याते छूटन की विधि जोई। आप कहौ भगवन मोहिं सोई॥ यह असुरी सम्पति दुखदाई। सबजीवन के हृदय लुकाई ७४४ जननी जनक सो हिरद परिवारा। सब दुख लखि जीव तजै व्यवहारा॥ पर असुरी सम्पति नहिं छूटै। ज्ञान वैराग विवेकहि लूटै ७४५ छूटन उपावकरै इक कोई। अधिक अधिक उरधारै सोई॥ राजस तमोवृत दुखदाई। तिसमें विचरै मन चितलाई ७४६ छुटन उपाव कहौ गुरुदेवा। जिसमें होय सकल दुखछेवा॥ तुम त्रिकालदरशी मुनिनायक। भवनिधि जीवनके सुखदायक ७४७ दुखमूल अज्ञान महा अँधकारे। तासों गुरु तुम राखनहारे॥ गुरु समान दाता नहिं कोई। वेद पुराण कहै ऋषि सोई ७४८ यहि विधि ऋषिवर कीन वखाना। भये प्रसन्न मुनी भगवाना॥ निष्कामरूप जग रहत उदासी। धरे ज्ञान तप तन परकासी ७४९ माधोरूप नरायनरामा। भय दुखहरण बोले सुख-धामा॥ धन्यहो ऋषी धन्य वुधनागर। तरन उपाव पूछो भवसागर ७५० असुरी दुख में तुम प्रतिगाये। तुम समझै ऋषि सत दुखदाये॥ अज्ञान अधीन जीव जगमा-हीं। एक ज्ञान विध्वंसक जानै नाहीं ७५१ कामक्रोध आदिक हैं जेते। मोक्षपंथ के विघ्नहैं तेते॥ आशा नृप असुरी चमूलैके। वैराग आदिकोहने विवेके॥ ७५२॥

क०॥ जबतक असुरी सम्पति सू हिये माहिं तबतक ज्ञान सु वैराग नहीं पावे है।

ईश्वर की माया माँहि निशिदिन भरमा करै गुरु उपदेश विना सुख नहिं पावे है ॥ करम अधीन नर जहां तहां तनु धारै दारासुत धन धाम परिवार पावै है । मोहरूपी शृंखलसू पगसे सो पाए देवै भवनिधि दुखपार कोई नहीं करेहै ७५३ ताते बुद्धीमान सब इनका सो त्याग करै उदासीनहोके सुख वनको तकावे है । एक तिया त्यागे तो अपार सुख पावैनर इकदारा के संयोगते असंख्य दुख पावे है ॥ जैसे इक मन माहीं जग दुख है अपार मन नाश भए जग दुख सु नशावेहै। जनम भरका नरनको मोलसू लैलेवे दारा चरन गुलाम सो बनाए दुख देवे है ७५४ तिसके प्रताप करनर मोक्ष पावे नाहीं डडूकूप सम फेर फार जग रही है। याते ऋषि गुरूकी समान दाता कोई नाहीं जग ग्राह मुख माहीं जीवनको छुड़ावे है ॥ असुरी सुसम्पतिकी छूटनकी विधि जोई गुरु उपदेश सेवै सुखए उपावहै। जगमें प्रमादिनको संग तजे दुख जानि देश सुखाकान्त माहिं बसै मोक्ष हेतूहै ७५५ जग दुख देनेहारे दोषसू अभाव तहां जग मन उलट जोड़े आतम सुखदायके । अद्वयत बोधक ग्रंथनको नितसू विचार करै फिर आतम ज्ञानसू वैराग बसै आयकै ॥ काम क्रोध संगति सो दुरजनकी त्याग रहे साधना युगति होय दश इन्द्रे बाधिके। सुख दुख सम मानै मान अपमान त्यागै हरषि शोक चित उररावे सो भुलाएकै ७५६ निन्दा अस्तुति त्याग करै माया सुख नेहतजे निर्भय भर भजे हेम काचसम मानिकै । लोभ मोह अभिमान सब को त्याग देवे जगते निराश होवे मनआशा बांधिकै ॥ लोक परलोक के पदारथ में दोष दृष्टी बारम्बार करै मनरावे नितहटायके । अहिंसाधार सत्य बोलै आस्तीक सो बुद्धी राखै ब्रह्मचरज त्याग जमकरै सो बनाएके ७५७ शोच औ संतोषतपईश्वरको ध्यानकरै सोय ध्यायन जमको सेवे मनलायके। अज चींटी तृण आदि सवका सो सेवमानै हित अनहित समजाने सो बिचारके ॥ वरन सो आश्रम कीकृतकहै वेद जोई तिसको कमावे नरमोक्ष हेतु जानिकै। निज इष्टदेवकी उपासना को राखै विधु गुरु उपदेशजपै उर ध्यानधारिके ७५८ ॥८०॥ यहि विधि देशसुकाल मिलै सतसंगति संतनकी गुरुसेवै । ईशकृपाल सो होय तवै असुरीदुख सम्पद फिर छुटकावे ॥ शुद्धअंतस कोमलपाये भले फिर दैवी सम्पति चितमें आवैं। फिर आ-ज्ञानमहासुखदायक शिघरसू उरमें प्रगटावे ७५९ जगबन्दन हेत दहेसगले जिमि

दावाअरन्य बिषय लगिजावे। जीवन मोक्ष निरसंशयहोय जगबंधन दुःख नजीक न आवै॥ चिदानन्द सो माधवराम बिषय अंतलीन होय भगमें नहिंआवे। वह सत्य त्रिकाल अवाध विभूतिसके सुख ते जग आनँद पावै ७६० यह मोक्षमें कारण ज्ञान जोई तिसका ऋषि हेतु मैं पीछे सुनाए। और सुसाधनबोध लिए तुमरी प्रति आगे मैं देहुँ जनाए॥ बिधिथेरेन में उर ज्ञानहोए परमारथरूप सुशीघरपाए। जग मूल अज्ञान सुभ्रांत सबै हनि पूरबरूप चिदा सो रहाए ७६१॥

चौ०॥ संतनकी संगति हैं जोई। तिसकोकरे नित्य प्रतिसोई॥ छल अरु कपट मोह जगत्यागी। संत अचरन सिषय बड़भागी ७६२ भक्ती संतनकी सुखदाई। ताको करे सदा लवलाई॥ शम्भु समान सुसन्त दयाला। थोरेन में होवैं कृपाला ७६३ जीवन भक्ती के आधीना। साधन बिन सिख संत मैं दीना॥ सिखजग दुख लखि संत दयाला। आतम बोधकरैं ततकाला ७६४ भवबंधन छिनमाहिं सो खोवै। निज सुखरूप तिसे करलेवै॥ जाको कहुँ नहिं जगमाहिं ठिकाना। ताको संत करैं कल्याना ७६५ यद्यपि मल बिषेप हे जोई। सिख मैं संतजान लिए सोई॥ मंदजान ब्रह्मविद्या पावन। नहिं उपदेशै दुःख जलावन ७६६ तद्यपि संत चरनकी भगती। तजै न बुद्धिकरै नित विनती॥ मान अपमान असुर मति त्यागी। संतते मोक्षचहैं बड़भागी ७६७॥

स०॥ ज्ञानके साधन जू सुखदायक संतनमें बहुपावैं सोई। फिर ज्ञानकेसहिमिले माधो बिषय जिनको विरला जगपावत कोई॥ नातो पूरब अद्रिष्टनके बलते करम ज्ञान जो मोक्षके साधन दोई। तद्यपि जीव अज्ञान अधीन है संतन माँहि परारहै सोई ७६८ अंत विषय वह माधवराम में संतप्रभावते जाय समावे। जिमि सरिता सु गंग में आए मिले वह गंगहै नहिं भिन्नरहावे॥ पुन गंग सूसरितन संग लिए अचला सो पयोनिधि माहिं मिलावे। तिमि संतसो मन्दनको संगलै चिदमाधौ ब्रह्म विषय मिलजावे ७६९॥

चौ०॥ कल्पवृक्ष संतन सुखदाई। जो जीवचहै सो लिएउपाई॥ ज्ञानमोक्षकी वागम कारन। संतमें ऋषि बसै असुरी धावन ७७० याते दैवीकर परिवारा। तुमहिं लखाओ सन्त मभारा॥ जिनके पदपंकज लैवारा। सहजे उतरै भवनिधि पारा ७७१ उत्तम भूमि

संत जगमाहीं। मोह आश तहां भूपत नाहीं ॥ विचाररूप तहँ वन्यो तड़ागा। जप तप संयम चहुँदिशि बागा ७७२ अन्त्र शांत शुद्ध गंभीरा। तेहि सरमें शुभ भरा सुनीरा ॥ वैराग विवेकसु शम दम जोई। घाट ज्ञान हेतू यह सोई ७७३ अदम्भ अ-हिंसा अचल सुहाए। अच्छल सोबुरज तहां सुखदाए॥ धीरज धर्म अडोल अमो-है। ताप नशावन वट यह सोहै ७७४ सन्त संतोषशील जो पावन। मोर तहां असुरी अहिखावन ॥ मयन्त्री करुना खिमा सुदाया। तेहि सरमें सेवार सुलाया ७७५ भजन वाक शुभकर शुभबानी। मीन बसै यह जल सुखदानी॥ सरपर समा-धान शुभ मन्दर। पूजा पाठ दान मूरति सुन्दर ७७६ शुभ वासना सुमन फुलवारी। श्रद्धानेकी प्रीति पुजारी॥ गुरु अस्तुति ईश्वरकी करना। निकपट निर्लोभ अकाम सुधरना ७७७ श्रद्धा मन जन गंग करावै। जेहते असुरी सम्पति जावै॥ कोमल उ-दारता ऋषिवर जोई। द्वीप तहां यह जाना सोई ७७८ आहुति यज्ञ आरती साजै। वेद ऋचा तहँ वाद सुवाजै॥ समदृष्टी सतसंगहै जोई। नेम निमित्त तहां कीरति होई ७७९ जम औ निजमत तिच्छा ऋषिवर। अमानिता पंछी विचरै सरवर॥ स-रल सुभाव भगती सुखदाई। पुरइन सघन तहां यह छाई ७८० निध्यासन मनन जु ज्ञान उपावै। सरवन पंकज यही सुहावै॥ अधिक सतोगुण प्राणायामा। तरीतर पंकजमै सुखधामा ७८१ ब्रह्म विषय निशुध अलबुद्धी। वेद अर्थ रसलेत सुगन्धी॥ महावाक भानुको देखी। सरवण पंकज खिलै विशेषी ७८२ ब्रह्मसरूप जगत हित-कारी। पर उपकार बरत जिन धारी॥ हम अजान पर दीनदयाला। ऐसे संत सुवसै मराला ७८३ ज्ञानरूप दृष्टी है जिनके। मोक्ष सु मोती चुगै सुख तकिकै॥ जल पै परशि मिल्यो जड़ चेतन। सन्त मराल बैठु सर सज्जन ७८४ तत्त्वम पदमें वाच्य है जोई। जल सम अनरथ त्यागै सोई॥ पैसम लक्ष्य अर्थ सुखदाई। संत हंस चुनि लेहिं उठाई ७८५ चिदाकाश सुख माधवरामा। तिनके उर नित्य करै विश्रामा॥ कर समाधि नित तिनके धावै। अन्त समय तिनहीं पदपावै ७८६॥

क० ॥ ऐसे सन्त मिलै ऋषि ताकी सिख सेवाकरै दैवी अति सम्पदा जो कह्यो सोई पावे है। अविद्या का परिवार सब असुरी सो नाश होय मनदुख मरकट सुत-बैशान्त पावे है॥ मन शान्त भए फिर जग दुख भासै नाहीं आत्माको नन्द मन

उलटिके समावे है । जमवायू के संयोगनते सिन्धु में लहरिजावै वायू शान्त भए लोल सिन्धुरूप होवे है ७८७ तिमि बासना संयोगनते मन महादुख देवे बासनाके नाश भए चिदानन्द होवे है । ताते ऋषिनाम रूप विधिका परपंच सब मनरूपी तागा मांहि जगत परोयाहै ॥ मलन संकल्परूपी तागा जब तूटिजावै मनके समान जग दुख खिड़जावे है । मनकर इन्द्री के व्यवहार मांहि आत्मा जो भरमकर भासै जु निशङ्क फिर होवे है ७८८ जैसे अभर कर व्योम अदित सुड़कारहै घननाश भए व्योम सूरज प्रकाशै है । तैसे निज अज्ञानकर आत्मा अव्रत दिखै ज्ञान भय अग- जाव आतमै प्रकाशै है ॥ याते बन्ध मोक्षरहित जीवमें विकार नाहीं स्थूल सुखम देह कारण मायाको विकारहै । सुख दुख आदि सब अन्तसके धरम जानो खानपान गौन क्रुपा प्रानके व्यवहार है ७८६ शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषय जोई पांच ज्ञान इन्द्रीके व्यवहार नित्य जानिए । करमका सुचार सब करम इन्द्रीमांहि जानो अहं त्वं आदिस्वहंकार माहिं सानिए ॥ शुभाशुभ निहचा होवै बुद्धीका धरम जानो चित- वन आदि गिरीचित माहिं ठानिए । संकलप विकल्प मनके धर्म्म जानो जन्ममृत्यु देहके सुभाव ऋषि मानिए ७९० दश चार त्रिपुटी में आत्मा असंग जानो दश प्राण पंचकोश आत्मा प्रकाशहै । जैसे हंसके प्रकाश आगे जगमें व्यवहार होय तीन काल सूरज असंग नित्य रहे है ॥ तैसे सूक्षम स्थूल कारण सारा सुसमाज जोई आतमके प्रकाश कर चेष्टा सब करे है । निरविकार आत्मा अखंडसू अद्वयत चिदानंत सुख शान्तबोध एकरस रहिहै ७९१ याते जनममृत्यु आदिमाया का परपंच जानो मायामात्र झूठ सब माया माहिं रही है । षटविकाररहित ऋषि अपना सरूप मानो व्यापक अकाश सम सदा तू अपारहै ॥ घटमट मेघ आदि व्योम माहिं होवै जैसे उत्पति नाश होय वेत एक रसहै । तैसे देहइन्द्री जग आतमामें रचै माया देहइन्द्री जगनाशै आतम शेषरहिहै ७९२ ॥ स० ॥ सतत्रिकाल अबाधहै आतमवेद प्रमान सबलोक सुनावे । जो भूतजन्मात्र करमकरै बर्तमान बिषय तिसका फलपावे ॥ इतकी करणीजू शुभाशुभहै तिसका सो अभीष्ट परलोकमें पावे । इमि जीवमरै नहिं लोक- मते सुअनाशी चिदाऋषि याते कहावे ७९३ पंचभूतक देह अशोकनते यहते पुनि जीव सुनाम कहावे । जिमि कलश संयोगको पाय भले सुअकाश महाघट काश

कहावे ॥ मन बुद्धीआदि जड़रूप सबै न सुते जिनमें कछु ज्ञानहो आवे । एक चेतनते सब चेतनहै यहते नित योगी सू ध्यानलगावे ७९४ सुखसागर ब्रह्म चिदातम है त्रिलोकी विषय नित व्यापकमाने। पटमें जिमि तन्तोसुहै सघनी तिमिही सबमें सुखचेतन जाने ॥ भवभोगन में सुख चेतनका तेहिते न कहूँ सुखलेश समाने। सुखमूरति आतमहै यहते नहिं नाश किते सु अबाधा पराने ७९५ अनन्त निजातम परिपूरणहै पंचभूत कमायके देहिनधारे। मनबुद्धी वेद न जानिसकै अजरातम मारुत बनी न जारै ॥ नहिं जन्नअनादि सुतै प्रकटै भव उत्पति पालन हेतु संहारे। नहिं जाग्रत स्वप्नसुनींदपरे प्रकाश करैं तुरीनामको धारै ७९६ त्रिपुटी बिन एक चिदातम है थकि वेदहटे उपमा नितगाए। अनूप प्रनाम न क्षीर यथा सम एक रसातम वेदन गाए ॥यह ज्ञान होय नरदेवनको कृत पुरायवपुधरे चेतन पाए। फिर माधोराम में जाएमिले दुख देहि कुधारिन जीव कहाए ७९७ शुद्धसनातन ब्रह्म अनूप न इष्टहोय सबका सुखदाए। और चोपादजडातनहै जिनमें न शुभाशुभज्ञान सुखदाए ॥ जन्मान्तन लै सुखनाम नहीं नित दुःख अपारसहै तनपाए। बुद्धिमान सुदेख वैरागकरे मन्दकरमनते पुनि नित्य डेराए ७९८ ॥

क० ॥ बुद्धीमानहोवै जगमानो तनपाए भलेतथी ततब्रह्ममाँहि जुड़े मनलाएकै। पुरुषारथको त्यागेनहीं माधोजी का ध्यानकरै जिस्में भवसागरको जावै दुखलांघिकै ॥ भवभोगनको नाहींसेवै दुख सिन्धु उर जानियाउ बृथानाहीं खोवै मानो तनपाएकै। बारम्बार यह तनदुर्लभनहिंपावै यही तनमाँहि मोक्षपावै सुखजाएकै ७९९ इसे चुक जावे फिर मोक्षहाथ आवै नाहीं भारखराड आवै नाहीं ऐसी भूमिकहूंनाहींपावै है। काम निष्कामकृत और लोक माँहिकरै ऋद्धी सिद्धी ज्ञानमोक्ष नाहीं सुखलाभ है ॥ भारतखराडका सुकर्मकीया सब लोक माँहिफलै ओरनमें शुभमन्दकृत बृथाजावैहै। याते बुद्धिमान भूमिकरम खेततनपाए उभय लोक भोग त्याग मोक्षकोतकावै है८०० माया का व्यवहार तजि जगतते निराशरहै खिनभंगुरात्रैधालोक सबनाशरूपहै। अस्थूल सूक्षम कारण सो बाल वृद्ध युवामाँहि तीन लोक सुखलेश तीनकाल नाहींहै ॥ अज चींटी तृणआदि दुखके जुगुत समकोबिदसुदेख चितरहित उदासहै। बैठके एकान्त निज आत्माको ध्यानकरै जिस्के प्रभावकर जगरोगजावैहै ८०१ प्रालब्ध के अधीन

सुख दुखको सहारै बुध हरषशोक मिथ्या जानि चितनाहींलावे है। हित अनहितनको संग दोषत्यागेरहै पथकी समानसब लोकनको जाने है॥ माधौराम उनका सो एक नित सुख भासै और जगमोहजानै महादुखदाई है। और ऋषि मूरखनसो भारतमें तनपाये उभयलोक माया सुखभोगको तकावे है ८०२ तिनका सो देखिकर काल दुखहासीकरै ज्ञाननिर्वेदकर हीनतिनै माने है। तीनलोक भोग देह मेरासो अहारबना मूरखसो मेरे को न जान भोग सेवे है॥ चंगामेरीबनिआई मूरखनको खावसदा आत्माके ज्ञानबिन मोते कहावचेहै॥ ब्रह्मलोकलग पुन मेरे मारे बचेनाहीं सने ब्रह्मलोकखायो मेरायही कामहै ८०३ उत्पति पालकरो लोकनको खावसदा मेरा शुभकरम यामें दोषनाहीं आवेहै। ब्रह्मज्ञान के बिबेकी सदा एक ब्रह्मरूप बचै तिनहीं चिद उपर सो मेराजोर नाहीं है॥ अथवा श्रीमाधौराम इष्टदेव जगमेरे जिनपर दयादृष्टी गुरु निजकीनहै। तिनका उपदेश लैके हृदयमें बसाय जोई माधौ ब्रह्मानन्दकाहि निशि दिन ध्यावे है ८०४ तिनकासो निलमाधव रूपमें अभेदकरो मोक्षपदपाय इष्टदेव मेराहोवे है। तिनकी सो पूजन सदातीनकालकरो चिदमेरा आत्माहै सदा सुखदाई है॥ ज्ञानते विहीन जोई माधवके उपदेश बिन तथा शिष्यलैके धारण नाहीं मिथ्याकीन है। ऐसे अगनर नित मेरासो अहारबनै तीनलोक भागे सन गेंद मेरा खेलहै ८०५ याते ज्ञान सो वैरागवाला जानतप्रताप मेरा जगसुखभोग मेरा कदै न तकावै है। आत्म सुख-ध्यान छोड़ भोगको तकावे जोई महापाप उग्रवेते नित आतमघाती है॥ ताते भोग सेविछत्रधारी गुरुजगमाहिं नेक वेर ढाहि फिरकर अंतकरे हैं। आदि नेतमेरी भला कौनसो मिटायसकै नाम रूप अंतकरो अंतकमेरानाम है ८०६ सतचित आनन्द सरूप अविनाशी अज पाप पुण्य कृतरहितसदा मैं अबाधहै। हे उपाधीरहित पुण्य तीनलोक भोगोसदा निज आतम बोधकर सदा मैं अभोगहै॥ निरगुण अखण्ड शुद्ध आतमा चैतन्य नित्य विभु सुखदाई तामें मलन बिशेषहै। कोसन संयोगनते आतम तदाकार भासै सोमनसनिध जिम सफटकलाल है ८०७ याते पाप पुण्य सुख दुख सभकोश माहीं आतमके विरोधी अघ आतम माहिं माने हैं। अज्ञान तम मूल दुख अग्नि को ढापे जैसे तैसे मेरे आतमाकू मेरे कोन भान है॥ अज्ञान को समूल माहिं आतमाकू साखी मानो निरबिकार शुद्धसूअद्वैती ब्रह्मरूप है। याही

निज ज्ञानकर बन्धमोक्ष पाप पुण्य सुख दुख लोकहनो अहंयोग नाहीं है ८०८ याही भाँति ऋषिवरतगजोई करमकरै करमनके फल सुख दुख तामें नाहीं है। जिमि अज्ञानी संयोगन में दारतुल्य ठहरे नाहीं तिमि विद्यवान विषय जगकृत नाशै है॥ प्रालब्धके अधीन शुभ भोगनको भोगै नित सदा निर्लेप रहै आतमाको ध्यावै है। और ऋषि भारतमें मानों तनपाय कर तज आतमवोध साधन भोगनकू धावे है ८०६ कृतान्त ऐसी दमक मारिलिये सो अचानक तिनै उनकी समान ऋषि तुम नहीं होवना। मायासुख त्यागकर देश सो अकान्त माहीं आतमाकू ध्याकर मोक्षकू समारना॥ ब्रह्मज्ञान के विवेकवाले पूरनेको संगकरौ परवृति वाले मूरखनको संग नहीं करना। शुभाशुभ सुख दुख तामें हेतु संग जानो संगतमें डूबजावै संगतमें तरना ८१० जिमि दारा पोतकर नर सरी पार जावें कागदकी बेड़ी माहीं पार नहीं होवना। तिमि भवसिन्धुमाहिं नर दुख पारलिये ब्रह्मवेत्ता पुरुषनको पाये पार पावना॥ कागद की वेड़ी की समान पुनि मूरखनको संगकरै नेकजन्म दुखपावे अंतनाहीं होवना। याते ऋषि संगति में सुख सो अपार पावे संगति में नर दुख थाह नहीं पावना८११॥

दो० तात मात सुत नारि वित कुसँग मोक्ष में जान।
दुःखधाम बुध त्यागि इन करैं भजन में ध्यान ८१२

चौ०॥ मोक्ष माहिं प्रतिबन्धक जोई। दुःख जानि बुध त्यागै सोई॥ जगतमोह छोड़ै व्यवहारा। नामरूप संसार असारा ८१३ सतयुग द्वापर त्रेता माँही। ऋषि मुनि वसैं सो कानन जाही॥ दारा सुत धन धाम सु त्यागी। ईश्वर भजनकरैं सुख लागी ८१४ कृतफल पंचभूत तनत्यागी। मोक्ष सुख पावै बड़भागी॥ मानुष तनु दुर्लभ जग माहीं। बारम्बार सुपावै नाहीं ८१५ ताते तुमहू करौ उपाई। जाते छूटै भव दुखदाई॥ अब ऋषि तुमको कहूं उपाया। जाते छूटै भव दुख माया ८१६ ऋषिमुनि करम जो वेदन गाई। ताको करो भले मनलाई॥ असुरी सम्पति जग दुख त्यागी। दैवी धरो भजनमें लागी ८१७ मोक्षके साधनहैं बहुसोई। पर ईश भजन समनहिं ऋषि कोई॥ सुख साधन कलि येही परमाना। ईश्वर भजनकरै कल्याना ८१८ नाम ब्रह्म में भेद सो नाहीं। जिमि घट नाम रूप इक माहीं॥ तैसे ब्रह्मके नाम अनन्ता। ब्रह्मै रूप कहैं सब संता ८१९ नाम विना कछु सिद्ध न मानो। संहम त्यागि

नाम ते जानो ॥ याते ईश नाम सुख सारा। नर भजि उतरै भवसिन्धु अपारा ८२० नाम रूप सुख ब्रह्म के माहीं। होय अभेद तिन्हैं भय नाहीं ॥ जिमि गंग मिली नामैं निधि जानी। हो नर भजि चिद नामहिं जानी ८२१ दुष्करम योग कलियुग सुखदानी। भविस्त रीत गुरुनानक जानी ॥ आयू धन बल बुद्धि कलिमाहीं। बहुत थोर जीवन की आहीं ८२२ जप,तप दान निगम अधि नाहीं। करि नहिं सकै जीव कलि माहीं ॥ याते जन्मादिक दुख मरना। यासों कठिन जीवकोछुटना ८२३॥

सवैया॥ दुखबाध लिये सुख जीवनको दयासिन्धु गुरुनानक कीन बिचारे। कलिमें सुखसिन्धु सुवेद सुधा गुरु ग्रन्थ सु प्रकट कीन्ह अपारे॥ नाम की माहिमा बिशेष बिधी तिसमैं चिदाकास सो कीन उचारे। दैवी सम्पति भोग सुयोग गमन मुक्ती जो चाहै सो लेह निकारे ८२४ सुख मोक्ष में साधन नाम सुधा भवसागर में सुख सेतु बनाये। यह नाम सुसेत जो सेवन गे कलि मोक्ष लिये नर पारसु पाये। और बिधी सुख पायो नहीं गुरुग्रंथ निगमागम में प्रगटाये। जिसकी सुधाबानी सो मंत्रमहा यहि मोक्षकी दाता भजो सुखदाये ८२५॥

क०॥ हरिका सुनाम कलि अमी सुखदाई ऋषि अजामिल गणिका शबरी गति पाईहै। पंचाली को राज दुख सभाके मँझार माहीं रामनाम दुख बाधे शुद्ध तहां आईहै॥ ताको दुख हरे पुन करुणा निधान चिद अपनी सुपैज भगत बल बढ़ाई है। जेहि नर जस कृपा सो निध गायो जग ताको जहां तहां नित भये हैं सहाईहैं ८२६ आदिगुरुनानक देव नामका भरोसा कहै जगजाल त्यागि प्रभु गहै शरणाई को। ईश्वर को नाम जप ध्यानको लगाइ विधि लिंगतन त्याग मोक्ष पावै माधोरामको॥ अधिक अचारज सूभये कलिमाहिं ऋषि न्यारे न्यारे मत वेष कीनेहैं अडामको। सुखेन पुरय साधन सो कोई नहीं कह्यो जग जिसमाहिं नर कलपावे शिघर मोक्ष को ८२७ याते कलिमाहिं गुरुनानक समान ब्रह्म पर उपकारी कोई भयो नहीं लाग़को। जनमपात दुख प्यास जीवन को देखि कलि नानक सू आदि ईश कीनो है उपावको॥ अमीनिधि प्रकट कीनो ग्रंथ को बनाय सु सुखेन घाट पाट चिदा कीनो उपकारको। कलिके सो जीव सब पाठरूपी सुधापी बुझाय जनमपात प्यास पावे निज रूपको ८२८॥

चौ० ॥ यहिबिधि गुरुनानक सुखदानी। पर उपकार जीवन को ठानी ॥ कलि में सुधा नाम सुखदाई। सब जीवनको दीन बताई ८२६ जिसमें लाग मोक्ष गति पावै। जनम मरण दुख नहिं भरमावै ॥ और सो ऋषि मुनि हे गुरुभाई।, नामकी महिमा सब मिलि गाई ८३० सब युग ईश भजन परधाना। इस समान सुख नहिं कछु आना ॥ जो कलिनाम न करै कल्याना। तिस नरको जग नहीं ठिकाना ८३१ हमरे इष्ट सुमाधवरामा। जिनके चरण बसैं हम धामा ॥ तिनकी महिमा सिन्धु अपारा। शेश गनेश न पावत पारा ८३२ जग कारण मायाहै जोई। पदपंकज जिनके रहै सोई ॥ तिनकी प्रभुता किमि कहि जाई। बरणत शारद अतिसकुचाई ८३३ मैं अल्पज्ञ थोरि मतिधारे। कबि बरणत भे लज्जित भारे॥ जिमि अकाश उड़ैं मक्षर टोले। अन्त राह नहिं पावै भूले ८३४ तिमि अकाशमें गुरु निज मेरे। कवि अस्तुतिको फिरैं घनेरे ॥ करै अंत नहिं फिरे दुहेले। मक्षरमत थकहट प्रतिकूले ८३५ ॥

क० ॥ याते ऋषि चिदानन्द माधवराम गुरु मेरे जिनका प्रभाव नहीं कहूं मैं अपारिया। उनका सुनाम लेके सदा मैं अनन्द रहौं जगत को झूठ जान दीनों मैं बिसारिया ॥ जूई इच्छा करौ सोई मुँहमांगे फल मिलैं जगमें सुमाधव नाम महासुख दानिया। जिनकासु नाम लिये नेक जन्म अघ दहै तन त्याग जग पद पावैं निरबानिया ८३६ कलपतरोवरसमान माधवराम मेरे मोक्ष ज्ञान नाहीं देवे माधोदेवेदानिया। याते कल्पतरोवर से अधिक सो गुरू मेरे जिनका चरण सब लायक मैं जानिया ॥ पुण्यफल मानो तन दुरलभ पाये जग माधोपद नाहीं सेवे गरधभ समानिया।जिनकासुनाम लिये ज्ञानबिन मोक्षपावे अजामिलआदि गजकीन्ह्यों भवपारिया ८३७॥

सवैया ॥ तिनहू ऋषिनामकी महिमा अपार कहै चिद माधौनाथ हमारे। अनन्त दुखी कलि जीवन को शुभ नाम सुनाय भवसागरतारे॥ जिनका यह धाम सुकाशी समानहै मोक्ष की कारण दीन सवाँरे। बे प्रयास भवसिन्धु लँघे है निरगुण ब्रह्म अखंड अपारे ८३८ याते माधवपुरी नर जोई बसैं तिसके सब पुण्य न जात बखाने। मुक्तीका हेतु महि जानि भले सुख ज्ञानकीखानि अघबांधे अज्ञाने ॥ जो मतिमन्द अजान महानर माधो अरण्य में बासको ठाने। तिसके सहायक माधवराम सो मोक्ष सो भोग लिये सुखदाने ८३९ ॥

चौ० ॥ सुमाधौराम से इष्ट हमारा। देवै मंत्र ब्रह्म ओंकारा ॥ सत्य नामका अर्थ सुनावै। चिद जड़ ग्रंथ भेद छुटकावै ८४० सतनाम प्रणोसहि जोई। महामंत्र ऋषि जानो सोई ॥ और बिधी करमनकर न्यारा। यह नर उर धरि करै बिचारा ॥ पाय ज्ञान जग होय असंगा। प्रणोलखे मम मिले अभंगा ८४१ त्रिलोक वेदकामूल सो-हाये। सो निज गुरु चिद मुझे सुनाये ॥ ताते ऋषिवर तुम ते कहियो। ओं प्रभाव जान सुख लहियो ८४२ मुझको गुरु यह दै उपदेशा। निखिल दुःखमें हने कलेशा ॥ काल मोक्ष कलियुग और उपाव सो नाहीं। ओं प्रभाव रहै उरमाहीं ॥ सुख बिचार प्रणो में लागी। और भरम दुख दियो मैं त्यागी ८४५ कलिमें यह ऋषि करै कल्या-ना। और उपाव तजौ सब आना ॥ प्रणो बिचार भजो सुखईशा। मोक्ष हेतु जुगलखौ ऋषीशा ८४६ ॥ क० ॥ हरके सो नाम बिन नर दुखपावै जग भक्तिसे बिहीन भ्रम दुख नहिं जावैहै। तीरथ बरत जो जग निष्फल मानो दान जब तक रामकी शरण नहिं आवैहै ॥ काम क्रोध परिहरि गोविन्दके गुणगावे जीवन बिदेह मोक्ष तब नर पावैहै। याते ऋषि कलिमाहिं नाम मोक्ष देनहार ताको भेद माधोराम बिन नहीं पावैहै ८४७ जिस पर दया करै गुरू जग ईश मेरे नाम भेद अमीपाय सुख महापावैहै। गुरुबिन नाम लिये कूकस को कूट जानो निलघ अबाध सुखकंदे नाहीं पावै है ॥ मिष्ठानकी सूपंड जिमि बाजि पीठ भारकरे स्वाद सुख तिसका सोअश्व नहीं जानै है। बे बिचार ईश भजे परमानन्द पावै नाहिं अन्तमाहिं निश्चय ध्वंस त्यागि नाम देवै है ८४८॥ सवैया ॥ जे नर राम भजन सुख त्यागत भगतिसुधा उर नाहिं सोहावे। धर्म अर्थ सो काम मोक्ष न पावत सो नर जन्म अकारथ खोवे ॥ तापर तीरथ वरत बिषय नितडोल करै जगदान सुदेह खपावे। वार बिषय जिमि पाहिनहै जल शीतल भेद न अन्तर जावै ८४९ तिमि भक्ति बिहीन नरा जगमें हर नाम बिना मन शान्त न आवै। मन शान्त बिना सुबिबेक नहीं सुबिबेक बिना अगज्ञान न पावै ॥ ज्ञान बिना सुख मोक्ष नहीं भावे अनेक जन्मांत्रकृतकमावे। याते मोक्ष सुज्ञान के कारण को हरनाम भजे नर भक्ति कमावे ८५० ॥

दो० भक्ति कल्प शुभ वृक्षको सदा कमावे टेक।
ज्ञान मोक्ष फल पायके तरे सो पतित अनेक ८५१ ॥

क० । भक्ती नाम का प्रभाव सुनि जरत सकल अघ जैसे मारतंड नाशकरे तम घेरि कै । अजामिल पापी सब जानत जगत माहिं देखो पार पर्‍यो अमीनामको पुकारि कै ॥ पूतना सो अघासुर बकासुर नीच तरे कुब्जासो तरी प्रेम चन्दन लगायकै । सुग्रीव जामवान सूमरीचहू से नीच तरे भीलसुता तरी बन बेर को खिलायकै ८५२ दुरयोधन सों आदिलैके पांडवसुत पारपेख विदुर सों तरे सूखी भाजी को खिलायकै । मंदोदरी सों आदि लैके राक्षस अनेक तरे शूर्पणखा तरी व्यभिचार उरधारिकै ॥ द्रुपदसुता कुन्ती गोतम तिया पारकीने गणिका सो तरी निज तोताको पढ़ायकै । जसुमति देवकी सो तिनहुको पारकीने गोपिनको पारकीनो बंसीको सुनायकै८५३ कंस शिशुपाल पापीतरे सो अनेक मन्द गजपति पारपर्‍यो फूलको चढ़ायकै । ऊधौ सुआदिलैके द्विज महादुखी तरे दास सो सुदामा तर्‍यो चाउरको फकायकै ॥ नन्द बसुदेव पुनि दशरथ पारकीने पुत्र भाव ईश्वरको कीने मनलायकै । रावण कुंभकान देख्यो अरी भावकर तरे बधिकसूतरे पाद बाणको लगायकै ८५४ जिमि पारसके साथ लोहा जानि भूल योग होय लोहे सरसाथ चहै करै परहारकै । तिमि उत्तम मध्यम चारखानी जीव जेई तनधारी शुभाशुभ करमन को सेवै जानि भूलिकै ॥ जवहींसो जीव ऋषि ईश सन्मुख होवै ईश भगत होवै चहै होय हर ईशकै । भूलचूक क्षमाकरी नेक जन्म अघ दहैं चिदानन्द आपमें मिलावै सुअभेदकै ८५५ याते ऋषिईश्वर की रीति यहि जानो हित अनहित सुख देवै प्रीति लायकै । जटायू आदि लैके देखो महाशुभ नीच तरे कहांलों सुनाओं ऋषि तुमको गनायकै ॥ बियन्त पुरुषोत्तम को अन्तनहीं गावै वेद जीवनको भोग मोक्ष देवे सुखदायकै । सदासूअनीह कछुजीवन ते चहै नाहीं मेरी सुनमानिदया धारी खट भागिकै ८५६ ॥

दो० भगत करम अरु भावकर तरे सो पतित अपार ।
ऐसे माधवराम को भजो सो ऋषि उर धार ८५७ ॥

चौ० याते ऋषिवर और न जानो । नामते तरै सकल उर आनो ॥ ऐसे प्रभुको जो बिसरावै । जन्ममरण बहुतै दुखपावै ८५८ ताते ऋषिवर जग भ्रम त्यागी । राम भजन में रहो सो लागी ॥ जिसमें होय जन्म भय हानी । सो उपाय मैं कह्यों बखानी ८५९ नामते लैं शुभकरमहै जोई । बिधि प्रीति सहित से उत्तम सोई ॥ पूरब मिमांसा केर

प्रकारा। वहुत ग्रन्थन में बिस्तारा ८६० तिनमें करम योग मुनि गाये। जीवन करम योगसुखदाये ८६१ नित्य निमित्त करम जग जोई। तिनको करै सदा बुध सोई॥ मोक्ष को साधन करम को जानी। ऋषि मुनि गण सब कह्यो बखानी॥ ताते कर्म करै मनलाई। जाते छूटै भव दुखदाई ८६२ जो नर करम करत है बाधा। ताहि लगावै श्रुति अपराधा॥ साते आतम घाती जानो। ताते और न पाप पिछानो॥ ८६३ संसार सिन्धुकी पीड़ा पावै। जन्म मरण दुख अन्त न आवै॥ करत बिषय जिनकी निहनिष्टा। ब्रह्मानन्द ते होवैं भ्रष्टा ८६४॥ क०॥ भ्रष्टहोके फिरैं सब लोकमहि विमुखकृत सदा दुख पावै सव तनको सुधारिकै। टेढ़ी योनि भरमै तहां दुख को न पावै अंत नित पछितावै सदा जगमें सो आयकै। कोल्हूबिषे पेरेजावैं अगिनी में जारेजावैं हाहाकार रोवैं परिपूर कुण्ड यमके॥ तपे लोहे थम्भमाहिं पापिन भिड़ायकर महाकष्टकिंकर सोदेवें धर्मराजके ८६५ अधोगती कुंडमाहिं लोह असतीरोमा पीवथुकरालकफपित्त पूरत गलीजहै। अरधे उरध करमहीन जीव तामें भ्रमाकरें सांप क्रिमि नीचे खावे उरधवायसखावेहै॥ कहीं युग दुख भोगै महा सो अवाच ऋषि विविधप्रकार अधोगती खात भ्रमैहै। गुरुदेव पितृनको सबका सो द्रोहीहोय करमत्यागी पुरुषनको सुख नहीं देवे है ८६६॥ स०॥ यहिभाँति आपको नष्टकरै कृत हीनदया नहिं आपपैलावे। कोई सुसंचित पुण्य प्रभावन ते यमराजके घरते निकर फिरआवे॥ मृत लोकतियाश अधोगतते वध तिन कुखि आयके डेरा जमावे। भवमंडलके दुख सिन्धु अपार सो जानतहो ऋषि वह फिरपावे ८६७॥

चौ०॥ कर्मकरै तो सुखगतिपावै। नाहिंतो अधोगती फिरजावै॥ याते जोनर होय उदारा। विधिवत कर्म करै निजसारा ८६८ कायिक वाचिक मानसकर्मा। तिनको करै सो दृढ़कर धर्मा॥ ज्ञान पाय संशय सब नासी। मोक्ष सो पावै जगत न फाँसी ८६९ वहुत अचारज ज्ञान बिन आई। कृत फल मोक्ष कहै सुखदाई॥ फल अभिलाष त्याग कृत जोई। संचित अशुभ करम हन सोई ८७० जन्मका हेतु जौन शुभकरमा। सोउ नशावै कृत निष्करमा॥ आगे जन्मका हेतू निरती। याते आतम होय निवरती ८७१ वर्त्तमान में सुख दुख जोई। कृत फल भोग लिये जिवसोई॥ ज्ञान विना नर मोक्ष सो लेवे। याते बिहित करम जो सेवे ८७२ अद्वैत बादते यह प्रति

कूला। मोक्ष में करमन जानों मूला॥ परम पराते मोक्ष में हेतू। याते श्रुतिभाषै सुख सेतू ८७३ मोक्ष में हेतु ज्ञानको मानो। पीछे ऋषि में तुमहिं बखानो॥ अन्तसकरन की शुद्धी माहीं। हेतू कृतमल को निज दहहीं ८७४ ताते ऋषिवर तुमते कह्यो। सत्य जानि हिरदय में गह्यो॥ करैमोक्ष कृत हित जगमाहीं। फल इच्छा राखै कछु नाहीं ८७५ जो विधि बनिआवै कृत जोई। ईश्वर निमित समरपै सोई॥ अंतःकरण शुद्ध तब पावै। श्रवण मननको योग ह्वै आवै ८७६ कर निध्यासन ज्ञानको पाई। शीघ्र मोक्ष होवै दुख जाई॥ कृतफल इच्छा दुखको मूला। मोक्षनकरै सदा प्रतिकूला ८७७ जगतमाहिं सुखदुखहै जोई। करम बासनादेवै सोई॥ इच्छा सहित कर्म नर सेवै। भूमि स्वर्ग सुख मिश्रत लेवै ८७८ क्षीण सो पुण्य होय फल जबहीं। स्वर्ग लोक से गिरै सो तबहीं॥ शैलशिखर जिमि गिरै पषाना। उरधपाउँ निम गिरै सिराना ८७९ याते ऋषि नर कृतमें भूले। खिन सुररहन न देहिं ढकेले॥ मृत्यु लोक बहुरो दुख पावै। सुखी न होय बहुत पछितावै ८८० कर्म बासना बहुरि करावै। घटीयन्त्र बहु योनि भ्रमावै॥ ताते जीव कष्ट बहु पावै। ज्ञान मोक्ष बिनु ठहर न आवै ८८१ सकाम करम याते ऋषि जोई। मोक्षन निमित पिछानै सोई॥ मोक्ष में ऋषिवर ज्ञानहि हेतू। बुधजन कहत जो भवनिधि सेतू ८८२ विनाज्ञान नर मोक्ष न पावै। व्यास बसिष्ठ ऋषी सब गावै॥ बाल्मीक ऋषिगण सरदारे। योगबसिष्ठ में तिनहुँ पुकारे ८८३ मारतण्ड जिमि तमको नासै। तिमि अज्ञान को ज्ञानै धुन्सै॥ यहिविधि सन्त ऋषी मुनिपाये। जोरि पाणि गुरु शङ्क सुनाये ८८४॥

सवैया॥ भगवन अविद्या का भंजक ज्ञान सुआप कह्यो गुरुने उरधास्यो। तद्यपि शङ्का सु आवत है तुम्हरे पदमें अब कहत सुनायो॥ अज्ञानको नाशक ज्ञान जोई तिसका पित आप सो ज्ञान बखान्यो। जनक अविद्या सुकरमन को बहु ग्रन्थन में बुधिमानन गायो ८८५ कृतसूज्ञान अविद्या भई वह कैसे अविद्या है मोक्षको देवै। मोक्ष में कारण ज्ञान नहीं सुखकरमन में करम बादी बतावै॥ कृत नित्य निमित्त अकाम करै नर ज्ञान बिना यहिते चिद पावै। भवमंडलमें बहुमान्यो जे यह बाकन धारिके कर्म कमावै ८८६ दो छंदवंत बिहंग जोई सु सुखेन सुव्योम विषय बहजावै। तिमि कर्म उपासन ज्ञान उभय मिल शीघ्र सुखाइनमोक्ष

को पावै ॥ कर्मनते शुभ ज्ञान को पायकै ज्ञानका रक्षक कर्म नशावै। जो ज्ञान को पायकै कर्म तजै फिर बुद्धी मलीन ह्वैकै भव पावै ८८७ यह शंका सुनाश करौ गुरु ईश्वर तो शरणागत को भय जावै। तुम बिन नाथ सूको जगमें भवसागर दुःख जो मोहिं लँघावै ॥ जगबंधन की विधि को सब जानत सुख मोक्षको कारण सार न पावै। तुम्हरे पद नित्य जो ध्यान करै सोइ माधवराम विषय सुखपावै ८८८ ॥

चौ० ॥ यह शंका सुनिकै मुनिराई। दुख भंजन बोले सुखदाई ॥ कहियो ऋषि ज्ञान अविद्या रूपा। अघहीन मोख न देह सरूपा ८८९ यह निश्चय तुम भूल न धार्यो। मोक्ष में कारण ज्ञानहि मान्यो ॥ शंकर बाल्मीक बासिष्ठा। राम अद्वयत करा यह निष्ठा ८९० इनकी बाचाते जोइ विरुद्धा। सो मति जानो सकल अशुद्धा ॥ अविद्या ज्ञानका सदा विरोधा। अद्वयत वाद सब कहै सो शोधा ८९१ अगिनीदार जन मूढ़ सुनाशै। तिमि अज्ञानको ज्ञानै नाशै ॥ करम अविद्या नहीं नशावै। जीवातमको तमनाहिं भगावै ८९२ तिमिर अविद्या कृतहि जमावै। आपस में बिरोध ना पावै ॥ आपुस माहिं बिरोधी जोई। बाधिक तम प्रकाश जिमि सोई ८९३ तैसे करम विरोध न ठानै। याते अविद्याको नहिं आनै ॥ उलट अविद्या कृतहि करावै। जन्म मरण दुखदै भरमावे ८९४ ब्रह्म अविद्या जब उर आवे। कृत अगहन सुख मोक्ष सुपावे ॥ परमपात्र करमको जानो। मोक्षमें कारण याते मानो ८९५ फल कारण फूली बनराये। फल लागा तौ फूल बिलाये ॥ तिमि कृत फल ब्रह्म विद्या देवै। अज्ञान सहित दुख करमन खोवै ८९६ ॥

दो० ज्ञान कृत भल भेदहै एकसंग नहिं काल।
अपेक्षा रहित सो ज्ञानहै मोक्ष करै ततकाल ८९७ ॥

स० ॥ अज्ञान सुकाल में करम होय सुखज्ञान नहीं उस काल रहावे। ज्ञान सो कालमें कर्म नहीं ब्रह्मविद्या सू कर्मन त्याग करावे ॥ वेद बिधी शुभ करमनको फल नाक संसार भयदायकपावे। ब्रह्मविद्या विषय सुख मोख फलै जिसके हित वेदविधी बहु गावे ८९८ समुचै बाद सो त्यागकरै बुधज्ञान अलम्बलिये यकसोई। कृत अकाम सो ज्ञानकरै मुक्ति देने विषय बलवान न होई ॥ मोक्षकरै ब्रह्मविद्याबली पुन गुरुबिन सो क्षणज्ञान न होई। याते करमनते गुरुसेव करै निष्काम सदा उरमें रहै सोई ८९९

कृतमाहिं सहाय संघात सभै मिलपापको नाशको करमपछानो। महावाकसबंध सु-
काने बिषय सोई ज्ञानको कारण ताहिकोमानो॥ मोखमें साधन ज्ञानलखौ ऋषि ऐसे
परेनाहिं और सुजानो। समुचै बाद जो कर्म बखानै अवान्तरवाक सो ताहिकोमा-
नो६०० ॥ क० ॥ मलका बिरोधी विधि करमनको मानोभले ज्ञानका बिरोधी मलकर-
महीपछानी है। मूलातूला मूलकृत तिस्काविधीज्ञान ज्ञानका बिरोधी चिद मोक्षही ब-
खानिये॥ मोखनिष्फल सब कहत ततगमिल सोतू ब्रह्मानन्द मेरो आतम सुखदाई है।
भागत्याग लखनसे आपना स्वरूपलख मूलसो अज्ञान दुख करौ ऋषिहानिये ६०१॥
स० ॥ लखज्ञानहि मोक्ष करै ततका सोपाके बिषय नहिं संशयकोई। वेद शिरा नि-
तयेही भनैं लखि ज्ञान बिना नर मोक्ष न होई॥ नित जीवसो ब्रह्मअभेद लखैं यह
निश्चयनाम सो ज्ञानहि सोई। ब्रह्मकारसो बृत्तीकरौ अन्तरे फिर माधव बिषय अग
दह सुखहोई ६०२॥

दो० यहिविधि ऋषिवरसंतजी सुनि उर शंकाकीन।
जीव ब्रह्म अभेद में दोष न कहत मलीन ६०३॥

क०॥ जीव ईश सुखदुख कृत सूअकृत सदा व्यापक अव्यापक सो कैसे एक
जानिये। प्रेरक अप्रेरक सूमाया सूअमायारहै ईशसूअनीश भेद होय नितमानिये॥
बन्ध मोक्ष ज्ञानता अज्ञानता अल्पज्ञ सर्व गुरुवेद इच्छाकिअनिच्छित प्रमानिये।
जीव ईश एक नानाभेदसू बहुतभासै नहींसूअभेद बनै भेद बहु ठानिये ६०४॥ स०॥
भगवन आप यह शंकाहनो मोहिं बाचसूलख गुरुन्यारे जनाऊ। जीव ईश्वरमाहिंसू
न्यून अधिकता यह भेदमहा उरको भयदाऊ॥ दोनों अभेदनमें जुगती वह आपदया-
निधि देहजनाऊ। जब आपकृपाकरिहो भवतारन माधौराम चिदालखपाऊ ६०५॥

दो० नारायण रामसुनीशबुध सुनि यह ऋषिकीबाक।
जीव ब्रह्म अभेद में युक्ती कहै महाबाक ६०६॥

क०॥ जीव ईश भेद जोई मानत मलीन सदा चेतन सरूप ऋषि एक तुम
मानिये। बाच्य अर्थ दोहूमाहिं मिथ्या सो अविद्या कृत जैसे रज्जू सीपी अहिरजत
पिछानिये॥ ब्रह्म आत्मा अभेद चिद यामें जोई भेदमाने आत्माके ज्ञान बिन करत
बखानिये। द्वैत दुखरूप सदा भने नित ज्ञानवान अद्वैत बोधकग्रंथनमें बाकये प्रमा-

निषे ६०७ कारज सुकारण में भेद न बखाने वेद जिमिहेममाई घटकटक बखानिया। भेदाभेद द्वैत छोड़ अपने को ब्रह्मजाने व्यापक अनूप चिद् एक रसमानिया॥ सदासूअखंड चिदानन्द घन अचलसू अज अविनाशी ऋषि तूही है प्रमानिया। अंतकी सो श्रुती सब कहत यकत्र मिल कारन नितकारज को नेति नेति ठानिया ६०८॥

सवैया॥ जीव ब्रह्म बिषय ऋषि भेद जू भासै तूल मूला अविद्या प्रभाव ते सोई। मूलते ईश्वर व्यापक प्रेरक अन्तरयामी सर्व नितहोई॥ तूला प्रभावते अबिरत है जीवहि में नित चेतन रूपहै जोई। यहिते जन्म मृत्यु अल्पज्ञ असक्त अज्ञान अधीन दुखासहि सोई ६०९ जग उत्पति पाल लै ज्ञान जोई सर शुद्ध सतोगुण मायाते जानो। मलीन तमो प्रधान सुभावते चेतन जीवमें अनर्थहि मानो॥ चेतन इकरस दोनों विषय अल्पज्ञ सर्वज्ञ ते न्यारे न सानो॥ तद्यपि जीव न आपको जानत कारण तमो जिसके है मलीनो ६१०॥

चौ०॥ मलविशेपनाश के कारन। यहिते करम कहैं बुधिमानन॥ वेद बिहित शुभकरमहै जोई। ताको करै भलीविधि सोई ६११ अंतरमल होवै जबनाशा। तब करमन को करै संन्यासा॥ ब्रह्मलोक लौं भोग सो जोई। तिनको त्यागकरै बुधसोई ६१२ मूढ़ संसार में करै न रागा। हृदय गहे सो शठ बैरागा॥ षट सम्पती ऋषी उर आवै। शीघ्र सुज्ञान मोक्ष सहिपावै ६१३ वेद शिरा को अर्थ बिचारै। जीव ब्रह्म विच भेद सो टारै॥ तत्त्वमसी महाबाक्य उदारै। शोधै ताहि भली बिधि प्यारे ६१४ तत्त्वं पद का अर्थ बखानो। ब्रह्मजीव सो ताहि पिछानो॥ सर्वशक्ति समरत्थ स्वतन्तर। सारी बस्तु को जाने अन्तर ६१५ व्यापक प्रेरक करम अधीने। परोख सो मायारहै अधीने॥ उत्पति पाल हने जो जगाता। ज्ञान सर्वज्ञ सकल फल दाता ६१६ तत पद बाच्य अर्थ यह जानो। त्वंपद अर्थ सुसुकृति बखानो॥ अल्पसक्त अल्पग परक्षीना। अनीश अविद्या करम अधीना ६१७ हरष शोक उत्पति है मृत्यू। बन्ध मोक्ष भव में करै चिन्तू॥ त्वंपदबाचक है यह स्थाना। बहुतबिरोध दोहुन में साना ६१८॥

क०॥ जेहिपद माहिं जेहिअर्थ की शक्ति होय तेहि पदका सो अर्थ ऋषिसकसु पछानिये। सक अर्थ उर में जो भानहोय भली बिधि बाच्य अर्थ तिसही को कहै

बुध मानिये ॥ अंगार अर्थकी सो सकत जिमि बह्नी पद माहिं रहै सिक्खी पदका अंगार सक बाच अर्थ जानिये॥ बाच्य अर्थ बोधकजू बरन कर पाद जोई बाचक सो पदकाहि करत बखानिये ६१६ ॥

दो० जहताआदिक लक्षणा तासु कहत मैं भेद।
चित एकान्त कर सुनहु ऋषि जाते हो निरखेद ६२० ॥

सवैया ॥ हुसुक बाचहि अर्थ सम्बन्ध जोई वह लखना सरूप सो ताहि पछानों । पद सक्तीसे जेहि अर्थ को ज्ञान सो नाहीं होवे किसी रीतसे मानो ॥ पुन लखना सुद्वारे जो भान होय वह पदका सो लखहि अर्थ सो जानो। भाग त्याग जोजेहिती आज हिती आहे लक्षनामहि भेद सू कहत सयानो ६२१ ॥

चौ० ॥ बाच्यअर्थ सम्पूरण जोई। करै त्याग जग यासू सोई ॥ बाच्य अर्थ का जो सम्बन्धी। प्रतीति होय जहां नाहिं प्रतिबन्धी ६२२ ॥

क० गंगा में गराम कोइ कहै सुपुकार कर गंगपाद जेहिती करतीर मैं जनावे है। गंगापद का सुबाच्य अर्थ बार वेगधार चले अस्थित नगरको तहांसू अम्भवहै ॥ याते बाच्यअर्थ ऋषिसारासू जिज्ञासू त्यागै गंगपादकी सूतीर माहिं लखनसू जहित है। बाचके सम्बन्धी काहि लखना सुनाम कहै गंगपाद बाच्य देव नंदीका प्रबाहहै ६२३॥ स०॥ याते गंगा सुपादके बाचहिकलछना सम्बन्ध सो तीरे सोहावे । ताका तटीतसे जानो ऋषी सनबन्ध संयोग सो नित्त रहावे ॥ बाच्य सुअर्थको त्यागि इहां जहती लखना ऋषि याते कहावे । बाच्य अर्थ संगतहि बाच सम्बन्धी का जापतदेह निज ज्ञान होज.वे ६२४ ॥ क० ॥ लक्षणा अजहिती सुगति सपंगमाहिं माने जैसे कोऊकहै सो न धावनको करैहै। तहाँ शोणपादकीसों लालरंगवाले अश्व लखना अजहित ऋषि तिसमें प्रमानहै ॥ लालरंगकाहि पुनि शोण नामकहै बुध याते शोणपदका सुबाच्य लालरंगहै। केवल लालरंग माहीं धावन असम्भव होय शोण पदका सुबाच्य अर्थ लालरंग जोईहै ६२५ लालरंग सहित होय अश्वके मँझार माहीं शोणपादकी अजहित पुनि लक्षणा रहावे है। गुण गुणीका संयोग सुत दातम सम्बन्धकहै लालरूपका सूभेदहोय गुने परमानहै ॥ याते शोणपदका सुबाच्य जोई लालगुण ताका गुणी अश्वके सुसाथमें संयोगहै ॥ संयोगहित दातम सम्बन्ध पुनि

लक्षणाहै वाच्यअर्थ सारा ऋषि यहां त्याग नाहीं है १२६ अधिक ग्रहण यहि अस्थल माहिं होय लक्षणा अजहत बुद्धि याहीको बखाने है। जहांपादनके अवाच्य अर्थ मध्य एकभाग त्यागहोय एकभाग ग्रहणहोय त्याग ऋषिनाहीं है ॥ तहां भाग त्याग लक्षणा सुकहै सुविचारवान भाग त्यागहीका नाम पुनि जहत सुअजहतहै। जैसे देवदत्तका सुआन देशकाल माँही कोई पुरुपजाये ताको देखि घर आवे है ६२७ वही देवदत्तका सुऔर देशकाल माँही वही पुरुष देखि कहै सोई देव यही है। भाग त्याग लक्षणा सो इहां तुम जानो सो अतीत अन देशकाल सहित वस्तु सोई है॥ याते सो अतीतकाल अन्देशसहित वस्तु सोई पुनि पदका सो बाच्य अर्थ होई है। काल वर्त्तमान औ समीप देश माहिं ऋषि देख देवदत्तका सुयह पुरुषकहोई है ६२८ देश औ समीप वर्तमानकालसहित यह पदका सुदेवदत्त वाच्य अर्थहोई है। अतीतकाल सहित अन्देशके सहित वस्तु सोई काल व्रत औ समीप देश माँहि है॥ यह समुदायक सुवाच्य अर्थ होय ऋषि उरमें बिचार देखो सम्भवै सुनाहीं है। व्रत औ अतीत काल दोनों का विरोध जानो देश औ समीप अनुदेशका बिरोधहै६२६ याते दोनों पदनमें देशकाल बाच्यभाग जानसुविरोध बुद्धिमान सब त्यागे है। देहि मात्र देवदत्त दोनों पदमाहिं रहै भगतयाग लक्षणा सुयाहीको वखानैहै॥ याते तत्त्वमसी महावाक्य माँहि ऋषिवर लक्षणा सो तीनों हम तुमको दिखावै है। ततत्वं पदका सुवाच्य अर्थ भली विधि पीछे हम तुमको दिखाये ऋषिआये है ६३०॥

चौ०॥ अब ऋषि तुमको फेरि देखाऊँ। जाते उरमें समुझ सुखपाऊँ॥ सर्वशक्ति सर्वग सो व्यापी। सुतन्त्र परोष आसर जेहमापी ६३१ बन्ध मोक्ष जामें नहिं कोई। सर्व वस्तुको जाने सोई॥ करमरहित प्रेरे सबकाही। परतख विशय जीव ज्ञानके नाहीं ९३२ इतने धर्म सहिआदिहै ईशा। ततपद बाच्यहि लखौ ऋषीशा॥ कहै धर्म जोईसके जोई। होय विप्र जै तिसते सोई ९३३ अल्पसक्त अलपग प्रछिना। असीन अविद्या कर्म अधीना॥ बन्ध मोक्षवाला प्रत्यक्ष। तनधर जगमें चाहै रक्ष९३४ त्वमपद वाच्य अर्थ यह जानो। चेतन जीव सबका होय भानो॥ यद्यपि ईशको रूप अनूपा। परतख सो जानै अपन स्वरूपा ६३५ तथापि ईशका रूपहै जोई। जीव ज्ञानके विषे न होई॥ याते ईश परोक्ष अभानै। जीव ईश स्वरूप जीवको

जानै ६३६ यतने धर्मवाल जो चेतन। तुमपद वाच्यकहै ऋषि सज्जन॥ याते महावाक्य में दोई। एकता भेद भानहोय सोई ६३७ सो न वनै ऋषि देख विचारो। लक्ष्य लक्षणा ते उरधारो॥ सर्वशक्ति विभुअर अलपगा। अल्पशक्ति परछिन सर्वंगा। ९३८ परतख सोतंत्र करम अधीना। परोख अविद्या मोहित दीना॥ माया जाके रहै अधीना। याते युगएक मैं नहिं लीना ९३९ पदकी सक्रत वृंतहै जोई। वाच्य अर्थ सहिबोधै सोई॥ याते ऋपिवर कहै बुधिमानो। लक्ष्यरूप लक्षणा ते जानो ९४० स० ॥ दोऊ पदमाहींवाच्यअर्थ का विरोध परा यही निजहेतुते अभेद नहीं होवैहै। जहताजहत लक्षणा जो महावाक्य माँहि मानै सोभी सो विरोध महासम्भवै सो नाहीं है॥भाग त्याग लक्षणाते लच्य अर्थ जानो ऋषि होतहै विरोध नाशपावैकुशलातहै। महावाक्य माँहि जहताजहतका असम्भव अब तुमरी सो प्रति हम विधिसे दिखावैहै ६४१ स०॥शुद्ध साखी चेतन ब्रह्मजोचेतन निलखवेदान्तका गेय सो जानो। ब्रह्मसाखी चेतन शुद्ध दोऊ पुनि ततपद त्वमपद वाच्यमें सानो॥ लक्षना सो जहती जहां है,-य तहां वाच्य सम्पूर्ण वाहोतहै हानो। अर्थ वाच सुबन्ध गेआन होय महावाक्य-विषय जहती लक्षना जो मानो ६४२ स० ॥ वाचमें जो आया शुद्ध साखी ब्रह्मचेतन जो वाचही के साथ पुनि त्यागन सो होवैहै। चेतन के लिए मुनि नाना सो उपाव करै लक्षना जो जहत मानै हाथ नहीं आवैहै॥ चेतन से भिन्न सो असत जड़ दु-ख मिथ्या ताके ऋषि जानो ते पुरस्वारथ सिद्ध नाहींहै। याते महावाक्य माहीं जहती जैसे नाहीं वनै लक्षना अजहत तैसे एभी नाहीं बनैहै ६४३ स० ॥ लक्षना अजहती सो जहां होय तहां वाच्यहि अर्थ सो सारा रहावे। ततपद त्वंपद वाच्य जोइ संग्रह पुनि तिस्ते अधिकता सुपावे॥ लक्षणा अजहती महावाक्य विषे अंगी-कार करै उरमें जब ल्यावै। वाच अर्थ जोई जग पादन में बुधहे ऋषिजू वह सारा रहावै ६४४ स० ॥ वाच्यहि अर्थ महावाक्य के मंझार माहीं एकतामें यही सुबिरोध महाभारी है। याते वाच सो अर्थके बिरोध के हटाने लिए लक्षणा सूअंगीकार बु-द्धीवानो करी है॥ लक्षणा अजहत माने ऋषि महावाक्यन में धर्म बिरोध पुनि दूर नहीं होवैहै। याते महावाक्य मा अजहतहुकी रीति तजो भाग त्याग लक्षणा सो अंगीकार योगहै ६४५ स० ॥ ततपदवाच्य जो ईश्वर है पुनि तुम पद वाच्य जो

जीव कहावे। तिनके पुनि धर्म सो आपुसमें ऋषि बहुत बिरोध सो दूर बहावे॥ शुद्ध साखी ब्रह्म असंग जो चेतन लक्षणा द्वारनते लखिपावे। यह को भाग त्यागसो लक्षणा कहैं जेहिते जीव ईश अभेद ह्वै जावे ६४६ क० ॥ माया माया भै अभास अरु माया का दृष्टान्त चिद सर्बशक्ती सर्बज्ञ जो ईश्वर ब्यापी है। उत्पति पालन संहार करै जगतको ततपदबाच्य यह पीछे बहु बखान्यो है ॥ अविद्या बिस्टी मै अभास पुनि चेतना दृष्टान्त जाको अल्पशक्ती अल्पज्ञई यह त्वंपद बाच्यहै। तत्त्वमसी महावाक्य दोऊ पद बाच्यनकी यकतो जनावै पुन सम्भवै सो नाहीं है ६४७ याते भासके सहित माया मायाकृत ईश्वर जो सर्बशक्ती सर्बज्ञ सो बिभूसभ प्रेरिके। इत्यादिक सुधरमन को बाच्य भागत्याग करै मिथ्या जान्यो रमाहि राखै सो भुलायके॥ चेतन भाग बिषय ततपदकी सुभाग त्याग लक्षणा है ऋषिवर कहै मुनिनायके। तैसे भास के सहित जो अबिद्या अंशानिऊ शक्ती अल्पज्ञाद धर्मसो अविद्या अंश जीवके ६४८ क० ॥ त्वंपद वाच्य जो भाग बिरुद्धहै ताको ऋषी पुनि त्याग सुदेवै। चेतन भागमें त्वं पदकीभागत्याग सो लक्षणा बिरुद्ध को खोवै ॥ याते ईश्वर जीव स्वरूप बिषय शुध चेतन भाग जो लक्ष सोहावे। तिनका ऋषि आपसमाहिं भले एक तासु बनै न विरोध रहावै ६४९ तत्त्वमसी महावाक्य जोई यह लख चिंदारथ अभेद जनावे। महावाकत्रिधा पुनि और जोई जीव ईश्वररूप को वह जनावे ॥ ऐसे अर्थ लखो तिनहूके बिषे जीव ब्रह्महिलक्ष्य अभेद लखावै। ताते ऋषी यह गोप महा जो बिबेककरै सोइ आनँद पावै ६५० क० ॥ जीव ईश पादमांहि बाच का बिरोध भारी करै यह भात त्याग लख रूप जानिया। जीव ईश लख दोई इनों का अभेद कर सोई नित चिदानन्द अहंलेए मानिया ॥ बन्ध मोक्ष मोमें नाहीं नेति नेति से निषेधै सब सदा सो असंग अजद्रेक को प्रकाशिया। अहं अगम अपार माया बृष्टी को बिकार नहीं नित मैं अद्वयत निररूप बिभूसारिया ६५१ अहं सब को अधार शिवानन्द नित अचल सो साखी शुद्ध रूप सब जग को प्रकाशिया। नाम रूप जोई त्रिधा लोक में सरूप मेरा जैसे हेम मारूबार भूषन सो भासिया ॥ कल्प के अन्त माहीं सबको संहार कर आप में अभेद करो अहं अबनासिया। निगम सो वाक मेरी अहं को प्रमान करै अपनी सरूप काहि अहं नमामिया ६५२ व्यवहारक

प्रमारथ यह माधौ का सरूप जानो याही जान ज्ञानवान तिनहिं ध्यान करै है। ज्ञान से बिहीन जोई करमवेत्ता जग माहिं सो भी माधवरामही को निशि दिन ध्यावैहै॥ अंतर शुद्ध ज्ञान पाय मोक्षका अधिकारीहोय माधव लख रूप काहि गुरुद्वारा पावै है। जिस लखरूप जानजीव लख रूप होय सोई निज जानो ऋषि तुमरासरूपहै ६५३ स०॥ देश जो काल उपाधि विना ऋषि तेरो सरूप मैं तोहिं बतायो। याही बिषय मन ठौर करो अब याते परै नहिं और सो जान्यो॥ वेदशिरा सब वेदान्तन के मत ऋषि मुनि यथारथ पूरब गायो। सोई माधव दयासिन्धुके प्रभावते तिनका प्रसाद मैं तोहिं जनायो ९५४ यह सुख हेत धरौ उरमें भवमण्डल ते उपराम सो होऊ। श्रवण बेदान्तन करमनते जब आतमज्ञान अखंड सो होऊ॥ कर अंत्र वृति उपराम होय विन उपशम आनँदना ऋषि जोऊ। अंत्र सुख विन शान्त नहीं यह बिदित सनातन वेदन गायो ६५५ करम वेदान्त अनेकजन्म बहु श्रवण अधीन करै विधि कोई। चिद जड़ ग्रंथ प्रभेदन वाली मनीषा भई न तो क्या फिर होई॥ धारन बिना सब वृथा होय जिमि आरनबादखीत्रेकुन्द सोई। ताते ऋषी यहि धारो भले उर आतमज्ञान कह्यो सुख जोई ९५६ आतम के सुख ज्ञान विना नर भवनिधि हेतु भव भोगन सेवै। यहि ते दुख जीव अपार सहै जिमि मारू के बारि में मृगा लोभावे॥ सुत मात पिता तिया बन्धु कुटुम्ब को तन मन लाय भली विधि सेवै। तिनके तन वारम्बार धरे चिद्मोक्ष विना जग माहिं रहावे ६५७ याते भव हेतु सम्बन्धना त्याग एकान्त बिषय ऋषि ध्यान लगावो। भव भोगनको दुख रूप सो जानिके याके निमित्त न करम कमावो॥ सुख दुख आयपरे तन पै प्रालब्ध सुजानि सुख खेद न मान्यो। कृत पूरब संचित नाश भये तिनका प्रसाद दुख मूल अब देह नहीं फिर पाऊं ६५८॥

दो० वेद अर्थ अनुसार मैं हे ऋषि कह्यो बखान।
तात्पर्य्य यहि समुझि कै कहि बैठ कह्यो हरि ध्यान ६५९॥
जब तक रहै कलेवर करम करो शुभ तात।
लोक बिषय अपयश नहीं अंत बिषय सुख शांत ६६०॥

चौ०॥ जो कछु कहन योग्य था जोई। ऋषिवर तुम प्रति कह्यों मैं सोई॥ तदपि त्व द्वारे भवताई। और उपाय कहो सुखदाई ६६१ जिस कृत लागि जीव सुख पावे। धो-

य पाप हर माहिं समावे ॥ को दुखरहित दुःख सहिकोई । जग सम्बन्ध सुसंग ते होई ६६२ जन्म मरण ताजि बैसुख लेवे । तजि कुसंग सतसंग जो सेवे ॥ सतसंग करै जग में तजि रागा । शरीर सुखन में कर बैरागा ६६३ पत्नी पुत्र गृह पशु जो दासा । द्रव्य भूमि लै जो कछु पासा ॥ इनसहि होइ जगत में जोई । इनमें रागकरै नहिं सोई६६४इसकी माया यह सब जाने । इसे इनको करै सन्माने ॥ दिवस चारकेहैं सब संगी । अंत जगत सहिहै क्षणभंगी ६६५ मृति लोक जो करम ते आवे । बटाउस मरहि के चलि जावे ॥ यह विचार उरमें ठहरावे । बिहितकर्म निष्काम कमावे ६६६ ब्राह्मण संत ऋषी मुनि जोई । आश्रम आय परैं जे कोई ॥ यथायोग्य सबको सन्माने । पर बिशेष सन्तनको जानै ६६७ ईशरूप सुखदै दुखनाशन । आदरसहि राखै निज आसन ॥ जो अशन बसन ईश्वर घर देवे । सो कपटरहित दै संतन सेवे ६६८ भक्ती दीनदया उरधारी । सरलसुभाव मानको मारी ॥ यह शुभलक्षणसहित ऋषीशा । सन्त भगतकर होउ जो ईशा ६६९ पाणि जोर सुदीन अनुरागे । विनय कस्यो सन्तनके आगे ॥ भवनिधि घोररूप दुखभारो । आप शरणगत मुझे उबारो ६७० जगमें बहुत दुःख अतिपाये । हे प्रभु अबतो उनहिं छुड़ाये ॥ जो संत सेवते गतिनहिं पावे । और उपाय न तिसे रहावे ६७१ ॥

क० ॥ पायउ दुखभारी जग बहुत कलेश नाथ कीजे उपाय ईश हमको उबारिये । पुनि पापके अधीन भयो माया विषय गलतान महादुख फांसी काट मुझे अपनाइये ॥ पंचभूत देहधार जन्मो अनेक बार मृत्युलोक वनमाँहि मुझको निकालिये । जगमें विचार देख्यो कोऊ न अलम्ब पायउ तुम्रे चरण सामलीन्ह्यों है तकाये ६७२॥ स० ॥ ब्रह्म अव्याकृत चिदानन्दको नित वेद पुराणहि करत बखाना । सोई संत स्वरूपको धार फिरो भवजीव कल्याणके संत निदाना ॥ भवसागरमें सोई पारभयो तुम्हरे पद को जो कियो कोई ध्याना । भवमंडलके सब दुःखहस्यो शुभधर्म को बिरधकरौ नित नाना ६७३ दीनदयालु सदा जगमें जहां जाहु सुजीवन देहु कल्याना । संत अपार अगाध महा जिनके गुण गावत वेद पुराना ॥ करुणानिधि संत विना जगमें अब कौन सुनै हमरे दुखनाना । यहिते हम जानि भजे पदपंकज आज हरो हमरे दुखनाना ६७४ ॥

दो० ॥ माधवराम सुख ब्रह्मको चरण देहु मोहिं दान।
दुखभव सिन्धु छुड़ायके बेगिकरौ कल्यान ९७५

चौ० ॥ ऐसे भगतकरौगे जबहीं। संत दयाल होयँगे तवहीं ॥ वेदमंत्र ब्रह्मविद्या जोई। फिर उपदेश करैंगे सोई ९७६ अज्ञानसहित संशय जंजाला। संत नशावैंगे ततकाला ॥ पाये ज्ञान निःसंशय ह्वैहो। भवमें रहि निर्लेप रहैहो ९७७ प्रालब्ध जो सुख दुखभोगी। तनको त्याग जात जहँ योगी ॥ तहां जाय ऋषिप्राप्त सुह्वैहो। संशयरहित मोक्षगति पैहो ९७८ ॥

स० ॥ अब्रत विषय जवतकहै कलेवर ऋषिवरभवहित पुण्य कमाओ। यह ज्ञान वैरागको धारि हृदय भव भोगनते उदासीन रहाओ॥ संसारसू सिन्धु अपार दिखाय समय मूड़ि आय नहीं भयपावे। जो कछु योगथा सोई कहेउँ अब और जू संशय है देहु सुनायो ९७९ ॥

चौ० ॥ यहि विधि मुनिराजनकी वानी। संत ऋषी सुनि अतिसुखदानी ॥ हरष अपार अनँद उरभीनो। अस्तुतिसहित प्रसन्न ऋषिकीनो ९८० हे प्रभु चिदानन्द गुरु मेरे। तुम सुखदाई जीवनकेरे ॥ माधौराम मोक्ष सुखरूपा। सो वपु लीनो जगमें अनूपा ९८१ कसना पूछौ दुख संस हमारे। भव जीवनहित सुखतन धारे ॥ तौ पदपंकज दरशको पाई। भव दुख जीवन जात बिलाई ९८२ ॥

क० ॥ नाथ मुखअम्बुज ते वेदवाक अमीझरै सुरमानो किरण अज्ञानतम हने है। आपका उपदेश सुन तृप्ति ना पावे उर सरिताको पाय जिमि सिन्धु ना अघावे है॥ माधवराम का सुयश सुनि उरमें अघावे जोई तिनका विशेष चिदसुख नहीं पावेहै। याते माधवका स्वरूप चिदानन्द जो अखंड जोई मुझको सुनाओ और जोई सुखदाई है ९८३ प्रणवकी उपासना सो मुझको सुनाओ गुरु जिन पदपंकजको मन्द भृत्य जानिके। समाधी में अखंड योगी ब्रह्मका सो लेवे सुख सो भी सो सुनायो मुझे जग सुखदायके॥ थोरे में जनायो मुझे जिसमें सो लखि पायो मेरी सो कल्याण लिये तुही मुनिनायके। तुमरी समान जग और न देखाई देत जिस आगे दुख शंका कहों मैं सुनायके ९८४ जगमें सो गुरु विना कौन सो सहाई होत जगमाँहि जीव सव रहे हैं भलायके। तिनका संयोग पाय दुख भ्रमनाहीं जावे रंकनके ओक

जिमि नहीं सुखदायके ॥ अनाथन के नाथ उपकारी दयासिन्धु गुरु सदा सो अनी-हरहै सबके सहायके। नाथ पदपंकजको पाय दुखनाहीं जाय तिसका सो जगमाँहि कोई ना सहायके ९८५ ॥ स० ॥ यहि विधि संत ऋषी मतिमान जो गुरुपद माँहि सो कौन बखाने। नरायनराम महामुनिनायक वाक सुने ऋषिकी सुखमाने ॥ कहा मुनिधन्य ऋषी मतिमान तुम्हीं धौं ईशको चाहतपाने। उपासन प्रणोकी सुखदाई समाधीकी रीति सुनायो तोहिकाने ९८६ समाधी बिना ऋषिबाक इन्द्री मननेक उपायते जीत्यो ना जाये। मन इन्द्री सो जीते बिना जगमें सुख माधवराम कौन नरपाये ॥ मनवाक इन्द्रीके अधीन फिरे सुख लेश नहीं जगमें दुखपाये। यहिते मन इन्द्रिन बाधनके हित उपासन प्रणो किये देह सुनाये ९८७ ॥

चौ० ॥ प्रणवरूप ओंकारहै जोई। संग्रह ध्यान करौ तेहि सोई ॥ मांडुक प्रशनादिक श्रुतिसारे। बहुत उपखेदन करत उचारे ९८८ ऋषि मुनिआदिक जे बुधिमाना। तिन प्रभाव से किहिन बखाना॥ तेहिकी रीति मैं तुमहिं जनायो। जेहि सुन जग ते जे आनँद पायो ९८९ प्रणव अक्षर ब्रह्मस्वरूपा। सो ब्रह्मरूप मैं चिदाअनूपा॥ ऐसे निजमतकी गतिधारे। अस्थिरकरौ इन्द्री मनमारे ९९० याके समान ध्यान नहिं औरा। वेद ग्रंथ सब देत ढंढोरा॥ इहप्रकार प्रणवका चिंतन। गायसुनावे सकल उपखंदन ९९१ एकतौ पारब्रह्मकर रूपा। प्रणवक चिंतनकहै अनूपा ॥ दुसरा अपर ब्रह्मते जानो। मांडुक आदिक करत बखानो ९९२ निर्गुण ब्रह्मसदा सुख जोई। पारब्रह्म कहै ताको सोई ॥ सगुण ब्रह्मको अपर बखाने। जे ऋषिमुनि जगमाहिं सयाने ९९३ पारब्रह्म रूपते प्रनोकाचिंतन। जो करै मोक्षको पावै सज्जन ॥ सगुण निर्गुण यह भेदते सोई। प्रनोका चिन्तन दुइविधि होई ९९४ अपर ब्रह्मकर प्रनोको ध्यावे। ब्रह्मलोक वह तनताजि जावे॥ पंचभूत तनधरि जगमाहीं। सगुन उपासक आवै नाहीं ९९५॥

क० ॥ याते निर्गुण उपासना विधि मैं लखाऊं तोहिं जाते ज्ञान मोक्ष यह तनमें सो पावेहै। सगुण उपासनकी बिधि न बखानकरो जामें ज्ञान मोक्ष नर चिरमें सो पावेहै ॥ जाको ब्रह्मलोककी सो कामना सो होवै उर निर्गुण उपासनाते कामना प्रतिबन्धहै। ज्ञानद्वारा ततकाल मोक्ष सुखपावे नाहीं किन्तु ब्रह्मलोकहीको प्राप्त सो होवै है ९९६ हिरण्यगर्भकी समान तहाँ भोगनको भोगै भले वेद गुरुविन अन्त

ज्ञान मोक्षपावे है। याको ब्रह्मलोककी सो कामना सो नाहीं होय इसी लोकमाँहि ज्ञानह्वैके मोक्षपावे है॥ यहिभाँति सगुण उपासनाका फल जोई निर्गुण उपासनाके अन्त सुभतहै। याते निर्गुण उपासनाको उत्तम विचारो ऋषि इसकी समान कोई नहीं सुखदाई है ६६७॥

चौ०॥ जो कछु कारण कारज होई। प्रणवरूप पहिंचानो सोई॥ याते सर्वरूप ॐकारा। भेद नहीं मुनिकहै बिचारा ६६८ सर्वपदारथ केरे माहीं। नासरूप द्वैभाग दिखाहीं॥ तहाँ रूप भाग नामनमें जोई। नामै रूप पिछानो सोई ६६६ रूप भाग नामहि कर रूपा। यह बिचारि ऋपिलखौ अनूपा॥ सर्वपदारथ केर अकारा। ताको नामते होय विचारा १००० ग्रहन त्याग वा नमनते होई। यह प्रसिद्ध जगमें है सोई॥ केवल आकारनते व्यवहारा। नहीं सिद्धहोवे जगतमँझारा १ याते नामहि सार सुहावे। अकार नाशभय नाम रहावे॥ जिमि बाधहोय खित कुम्भय जोई। मृतिका शेप रहै तहँ सोई २॥

क०॥ तहाँ घटिक मृतिकासे भतख स्वरूप नहीं माटीका स्वरूप ऋषि घटही पछानिये। तिमि सो अकारणके बाधभय माटीनाई नाम शेष भाग जोई पीछे रहिजाये॥ तासे सो अकार भाग प्रत्यक्ष सो नाहींरहै नामही सरूप सो अकार भाग जानिये। जिमि घटआदिक में मृतिका सो व्यापीरहै घटआदि परस्पै सब व्यभिचारी है ३ याते घट औ शराब आदि मिथ्यहि सरूप जानो तिनमाहिं अनगत मृतिका सुसत है। तैसे सब घटन की नाना सो अकारबने तिन सब घटमाहीं अछरुई एकहै॥ घटके अकारन सो परस्पै व्यभिचारी सबघट माहीं एक नामही प्रमानहै। याते मिथ्यासो अकार सतनाम ते पृथक नाहीं इन्द्रीद्वारे ऋषिवर जोईभान होयहै ४ यहि भाँति सर्वपदारथ अकार जोई आपने केनामनते भिन्न कछु नाहीं है। किन्तु नामहिं सरूप अकारन के रूप जानो सारेनाम औं गतिसो भिन्न कछु नाहीं है॥ ॐकार सरूप याते नामका सरूपलखो बाचक सो पदनको नाम बुध गावे है। लोक सब वेदन के शब्द अपार जोई ओंते प्रगट होवे श्रुति नित गावे है ५ निखिल सुकारज सुकारन सरूप होय भूतनको कारज जिमि भूतही सरूपहै। याते ॐका सुकारज सुबाचक शब्द ॐका सरूप नित वेदसू वखानेहै॥ यहिभांति सर्व पदारथ अकार

जोई नामका सरूप सब प्रत्यक्ष सुनाही है। याते सबै नामसु ॐकारका सरूप जाने ऋषिसर्वरूपही ॐकारका सरूपहै ६ जैसे सर्वरूपसूं ॐकारका सरूप जाने तैसे सर्व रूप नितब्रह्मसू अखण्डहै। याते प्रणो ब्रह्मका सरूप ऋषि जानो भले किम्बा बरमही को वाचकसू प्रणोका सरूपहै॥ ॐका सुवाच्य अर्थ ब्रह्मचिदानन्द नित याते वाच्य वाचक अभेदही रहावे है। याते भी ॐकार नित ब्रह्मका सरूपबने कोबिदसू ज्ञानवान सकल वखाने हैं ७ बिचारकर देखिये जो ॐ अक्षर ब्रह्ममांही जिमि अहि रज्जू की समान सो अध्यासहै। याते तिसका धिष्ठान ब्रह्म ध्यासका सरूप जोई कल्पित धिष्ठानरूप होय न्यारा नाहीं है॥ याते भी ॐकार ब्रह्मरूपही पछाने भले चिंतन सो करै ब्रह्मरूपही ॐकारहे। ॐरूप ब्रह्मकाहि आतमते अभेदकरै युगनको चिंतन सूकरै एकरूपहै ८॥

चौ०॥ याते आतम ब्रह्महै जोई। आपसमें अभेद है सोई॥ चारपाद ऋषि ब्रह्मके जानो। तैसे जीवके माँहि पिछानो ९ पाद नाम भागनको जानै। कोई ताको अंश बखानै॥ हिरणगर्भ बैराट जो ईशा। ततपद साखी लखो ऋषीशा १० चारपाद यहि ब्रह्म मझारा। मुनिबरगन यहि करत बिचारा॥ प्रागविश्व तेजसहै जोई। त्वंपद साखी तामें होई ११ चारपाद यहि जीव में जानो। जीव साखी के तुरी पिछानो॥ स्थूल परपंचसहित जो चेतन। बिराट कहै ताको मुनि बेदन १२॥

स०॥ विष्टस्थूल अभिमानी जोई विसुनामसुजीव कहै बुधिमानो। स्थूल उपाधी बिराट विषय पुनि तैसे विश्वके माँहि पिछानो॥ युगमाँहि उपाधी समान भये सो अभेद सरूप दोहू एक मानो। याते बिराटही विश्वहै रूपको न्यारा नहीं कहूँ लेश समानो १३ त्रिश्वरूप बिराटके अंगसू सात है सरगाहि लोकसु मसतका जानो। वायू प्रानहै सूरज नेत्र महा अपारहि व्योम धड़ानो॥ पृथ्वीपद मोड़ सिन्धु भये अगिनी मुख जामें होम पिछानो। यह सातहि अंग बिराटके हैं सो बिराटके अंग में विश्वहै सानो १४॥

क०॥ याते सो बिराटकेरे अंगसू बखाने ऋषि विश्वरूप वैराट केसो मोख खोड तीनहै। पंचप्राण ज्ञानकर्म इन्द्री चार अन्तसहै भोगनके साधन यह मुखकी समान है॥ स्थूल शब्दादिकको बाहिजवृत्तिकर भोगै जाग्रत अवस्था में त्रिराट विश्वरहिहै।

स्थूलकास भोगता सो विश्व औ विराट याते जाग्रत अवस्थावाला वाहिजवृत्ती जाने है १५ प्राणआदि ओनईस मुख भोगनके साधन जो ज्ञानइन्द्री करमइन्द्री अन्तःकरण जोई है। दशचार आपने यह विषयके मझाररहै आपनी सहायलिय देवनको चहैहै॥ देव बिषयकी सहायबिन भोगनको भोगै नाहीं जड़की समान प्राणइन्द्री सतोरहितहै। दशचार त्रिपुटीय पंचप्राण ऋषिवार विश्वरूप वैराट केसो मुखीये बखानहै १६॥

चौ०॥ मन बुधि चित हंकारहै जोई। ज्ञानइन्द्री करमन जो होई॥ अध्यातम रूप सो इसको जानो। अद्भुत तिनके बिषय पिछानो १७ तिनके सहायक सूरज कहावे। अन्धदैविक मुनिवर तेहि गावे॥ दश चौ त्रिपुटी प्राण खंचावै। विश्व वैराट के मुख बुधगावे १८॥

क०॥ विश्व औ विराटका सो सदा सो अभेद जैसे प्रनोकी सो मात्रां में प्रथम अकारहै। ताका सो बिराटरूप विश्वते अभेदजानैं चारपाद ब्रह्मकामें प्रथम विराटहैं॥ चारपाद आत्माके प्रथम सो विश्वअहै तीनों में समान धर्म प्रथम सो ऋषिहै। विश्व औ बिराट औ अकार जोई मात्राहै तीनोंका अभेद मुनि चिन्तन सो करै है १९॥

चौ०॥ सात अंग मुख जो ऊनीसा। विश्वविराटके कह्यो ऋषीशा॥ तैसे सात अंग अठग्यारा। तैजसके मुख लखै विचारा २० पर तू इतना भेद पिछाने। विश्वके अंग मुखजु मैं बखाने॥ सो तो ईशररचितहै सोई। वेद उपनिषद कहै मुनि जोई २१ तैजसके इन्द्री जो देवता। त्रिपुटी विषय भोग जो करता॥ मूर्धादिक अंगहि ऋषि जोई। मनोमाहिं सुखमहै सोई २२ स्थूलका भोक्ता विश्वपछानो। तैजसका पुन सूक्षम जानो॥ तैजसके सभदादिक जोई। मानस भोगकहै बुध सोई २३ याते सूक्षम ताहि बखाने। जो स्वपने में भोगको ठाने॥ तिनकी अपेक्षा करके सोई। विश्वभोग शब्दादि जो होई २४ सो स्थूल वाहिज विश्वजावै। अन्तर प्रज्ञानहिं ठहरावे॥ तैजसकी ऋषिवर बुधजोई। अन्तरताजि नहिं बाहरहोई २५ जैसे विश्व विराट यक जानै। तैजस हिरण्यगर्भ तिमि मानै॥ यामें दोष नहीं ऋषि कोई। दोनों अभेदरूप इक सोई २६॥

स०॥ हिरण्यगर्भ सो तैजसमाहिं भले पुनि सूक्षम उपाधी दोहू में समानो।

दोनोंको धर्म समान भये ऋषिव्यति अभेदहि रूप एक जानो ॥ दूसर ॐकारकी मात्र ॐकार जोतिस्ते अभेदहि चिन्तन ठानो । आतमके चहुँ पादनमें ऋषि दूसर पाद सुतैजस जानो २७ चहुँ पादन ब्रह्मके माहिं बिषय हिरएयगर्भ सो दूसर पाद सुहावे । ॐकारकी मात्र ॐकार दुतो पुनि तीनों के धर्म्म समान रहावे ॥ यहते तीनों कायकतासू चिन्तकरै पुनि प्रागको ईश्वररूप ठहरावे । उपाधी सुकारन ईश्वर माहिंहै तैसे प्रागके माहिं रहावे २८ दूनों के धर्म्मसमान भये यहिते यकरूप अभेद सोहावे । तीसरपाद है ईश्वर प्रागमें तीसरमात्र ओंकारकी आवे ॥ तीसर तीनों में धर्मसमान है तीनोंका यकताहि रूप बनावे । जाग्रत स्वप्नको ज्ञान जोई सुखोपति माहिं अविद्या होजावे २६ क० ॥ याते सुप्रज्ञानघन याहीको बखानै मुनि आनन्द शुभक यहिप्राग श्रुति गावे है। अविद्याकर आवृत चिदका आनन्द जोंई ताको यहिप्राग भोगै आनन्दभुक कही है ॥ जैसे तैजसऔ बिश्वकासू भोग त्रिपुटीं ते होय तैसे भोगनको त्रिपुटीसू प्रागमें रहावे है। चेतनके प्रतिबिम्ब सहितजू अविद्यावृत ताकोसू अधि आतमरूप भेदसू बखाने है ३० अज्ञानकर आवृत आनंद स्वरूप जोई अदभुत अधदइउइसर कहावे है । यहि भाँति विश्वकी सोवाहरप्राग जानो ऋषि तैजसकी बुद्धी नित अन्तर रहावे है ॥ प्रागस प्रग आनघन पीछे मैं बखान आये तीनोंका सुभेद सु उपाधीकर पावे है । सूक्षम अस्थूल अग विश्व में उपाधी जानो सूक्षम अज्ञान युग तैजसके माहीं है ३१ उपाधीकी सो न्यूनताते बहुलताते भेदहोय प्रागके मँझार माहीं एकसू अज्ञानहै। परमारथ स्वरूप ऋषि देखिये विचारकर तीनों के बिचार माहीं भेद कछु नाहीं है ॥ प्राग विश्व तैजसमें अनुगति चिद जोई सुखम स्थूल पुनि कारणते रहितहै। तीनों में धिष्ठान ऋषि तुरिया स्वरूप रहै वाहिज अंत्र प्रागनाहीं व्यापक अखण्डहै ३२ मज्ञानघन नहीं पुनि करम इन्द्री ज्ञान इन्द्री मनबुधि बानीकेसू विषय ऋषि नाहीं है । ऐसा तुरियास्वरूप परमात्मा कारपूजानै चतुरथपाद ईश साखी शुद्ध ब्रह्महै ॥ यहि भाँति आत्मा दोप्रकार रूप जानै एकतौ परमारथ है दूसरा व्यवहारहै । चारिपाद माहीं पुनि तीनसो परमारथ ताहि एकपाद तुरिया सुसाखी शुद्धरूपहै ३३ ॥

चौ० ॥ युगस्वरूप जिमि आतमकेरे । तैसे प्रनो माहिं सुहेरे ॥ अकार उकार

मकारहै जोई। तीनोंमात्रा जो ऋषि होई ३४ सो परमारथ नाहिं सरूपा । मुनिवर कोविद कहै जो भूपा॥ तीनों मात्रा केरे माँही। अस्ति भाँति प्रियरूप जो आही ३५ अधिष्ठान चेतन सुखरूपा। सो परमारथ लखौ अनूपा ॥ परमारथ वपु प्रनो केरे। ताको श्रुति अमात्रहै टेरे ३६ ता परमारथ रूपके माहीं। मात्राविकार कहौ ऋषि नाहीं॥ याते अमात्रा वेद उचारा। युग सरूपवाला ॐकारा ३७॥

क० ॥ ताकोदोष रूपवाले आतमते अभेद जानै जिमि हेम कटनके नदहि सरूप है। स्थूल प्रपंचसहित बिष्टी औ समष्टी सब विश्व औ विराटहि अकारका अभेद है॥ आत्माके पादमाहीं विश्वका सुआदि जाने प्रणवकेरी मात्रामें प्रथम अकारहै। याते दोनोंका सरूप ऋषि इकता पिछाने भले जैसे घट मठ आदि माटीका सरूपहै ३८ तैजस हिरण्यगर्भ सुखम परपंचसहित ताको सुउकार रूप जानेसु अभेदहै। तैजसभी दूसराहै द्वतिआ उकार जाने दोनोंका सरूप नित जानेसु अभेदहै॥ ईश्वर प्राग दोऊ कारन उपाधीसहित ताकोसुमकाररूप श्रुतिसू बखानै है । ब्रह्म आतमाके पादन में तीसरा प्राग ईश प्रनोकेरी मात्रामें तीसरी मकारहै ३९ याते ईश्वर प्रागका मकारते अभेद जानै तीनों माहिं व्यापक जो तुरिया सरूपहै। ताको प्रनोकी सुमात्रामें व्यापक अमात्र जोई ताहीसू अभिन्नरूप जानै सुखदाई है॥ विश्व तैजस प्रागमाहीं तुरी ऋषि व्यापकहै जैसे घटाकाश मठाकाश ओतप्रोतहै। तैसे प्रणोकी जूमात्राहै तिनोंके मझार माँही व्यापक अमात्रहै चिदानन्दरूपहै ४० याते प्रनोकी अमात्रको तुरिया सरूपकाहि एकता अभेद जानै जैसे महाकाशये। आतमाके पादमें ॐकार जो अमात्र है लै चिन्तहै इकतासु जानकर कीजिये॥ विश्वरूप अकार जोई तैजस उकाररूप तिसका अभेदकर एकरूप जानिये। ऐसा जो बिचार करै ताकोलै चिंतकहै और ऋषिमात्रामें यहीरीति मानियें ४१ जा उकार माहीं सो अकारका अभेद कीने तैजस सरूप सू उकार जोई भानिये। प्रागजू मकाररूप ताही में अभेद करै तुरी में मकाररूप प्रागहीको सानिये॥ स्थूलकी सो उत्पति सूक्षमते होय ऋषि ताही के मझार साने वने उर जानिये। याते विश्व जो अकाररूप तैजस उकारमाहीं ताको लैकरै जोई महामुनि ज्ञानिये ४२॥

चौ०॥ सूक्षम के उत्पति है जोई। कारणते होवै ऋषि सोई॥ याते तैजसरूप

उकारा। कारण भाग मकार मझारा ४३ याते लै तामें बिन जावे। होय अभेद दोष नहिं आवे॥ विश्व भाग तैजसहै जोई। ईश बिराट सूत्रलै सोई ४४ आतम ब्रह्मकी विष्टिसमष्टी। अपनी अपनी सारी त्रिपुटी॥ तिन सबनको ग्रहनजानो। नहिं कछु बाकी रह्या हिरानो ४५ भागहि रूप मकार मझारा। लीन समगरभै उकारा॥ ताम-कारका तुरिया जोई। प्रणोका परमारथ होई ४६ अमात्र ताको कहै मुनीशा। लैम-कार तहँ करो ऋषीशा॥ प्रणोका परमारथ जोई। तुरी से अभेद रहै नित सोई ४७ सो तुरिया शुद्ध ब्रह्म अनामें। ईश भाग युग कल्पित तामें॥ जाके विषे जो क-ल्पित होई। ताको रूप होय ऋषि सोई ४८ याते ईश्वर भाग मकारा। तुरी में अभेद बनै संसारा॥ जिमि बीजते वृषहोय लैजामें। तासे भव उत्पति लै तामें ४९॥

स०॥ प्रणव पमारथ अमात्रमें यहि भाँति सों लीन किया ऋषि सोई। सोहंब्रह्म चिदानन्दहो मुझमें नहीं जकतकछु दुख सोई॥ ऐसा एकाग्र चिन्तनकरै यहि उत्तम चिन्तन ठाने सोई। स्थावर जंगमरूप असंग अद्वयता संसारी नित मुक्तिभोई ५०॥

चौ०॥ प्रणोका परमारथ जोई। निर्भय ब्रह्म सुमैंहौं सोई॥ ऐसा चिंतन जे करैं कोई। ज्ञान उदय ताके उर होई ५१॥

क०॥ याते ज्ञानद्वारा मुक्ति सुख फल देनेवाला प्रणोकी उपासनासू निर्गुण याही जानिये। पूरब प्रकारते ॐकारका सुब्रह्म जानै ध्यान किये ज्ञानद्वारा मोक्षपावे दा-निये॥ इसलोक ब्रह्मलोक भोगनकी इच्छा जाको तीव्र वैराग जाके उर नाँहीं पाइ-ये। हटके अधीन ह्वैके कामनाको रोकिकर धन पुत्र आदिनको त्यागन जो कीजि-ये ५२ ब्रह्मवेत्ता गुरूते उपदेश लैके ऋषिवर प्रणव ब्रह्मरूप कर ध्यान जू कमावेहै। ताको भोगनकी कामना सुअज्ञान में प्रतिवन्ध जानों ज्ञानद्वारा ततकाल मोक्ष नहीं पावे है॥ किंतु ध्यान करतही सो पंचभूत देही त्याग अन्न नई देहको सोधार फिर लेवे है। इसलोक भोगनकी कामना सु रोककर प्रणवब्रह्म रूपकर ध्यानकूं कमावे है ५३ याते इसलोकमें अनन्तसो विभूतिवाले सतसंगी कुलमें सुस्वच्छ तन पावेहै। पू-रब कामनाका फलभोग तहां सारापावे ऋषि पूरबजनम विषयध्यान प्रणवकी जो कीन है॥ तिसके संस्कारनते फेरिकै विचारकरै अथवा शुद्ध आनविषय फिरि लगजावे है। ताते ज्ञानह्वैके इसलोक के मँझारमाहीं मिले माधवराममें विदेह मोक्ष पावे है ५४॥

चौ० ॥ ब्रह्मलोक के भोग हैं जोई। तिनकी कामना रोकिके होई ॥ ब्रह्मरूप कर प्रणो सुकाही। ध्यानकरै ऋषिवर मनमाही ५५ तो पंचभूत तन इहां त्यागी। ब्रह्मलोक जावै बड़भागी ॥ तहँ मानुष पितर देवनको जोई। दुर्लभ भोग स्वतन्त्रहि होई ५६ तहाँ उपासक आनँद पावे। जो चाहै सोई रसखावे ॥ जितनी हिरनगर्भ की विभूती। सतसंकल्पते इसको होती ५७॥

छ० ॥ ज्यहिमारग ब्रह्मलोक को जावे सुमारग कर्मते वेद बतावे। जो पुरुष सो ब्रह्मकी करत उपासन मन बुद्धी बाँधिके ध्यान लगावे ॥ ताकी देह विषय दशइन्द्री जू अन्तस यदपि सारे सु सुरक्षि रहावे। कहिजाने त्रिषय समरथ नहीं यमदूत नहीं तेहि नेरे में आवे ५८ ताके लिंग शरीर लैजावे नहीं पुन बनीभीमानीका देवसो आवे। स्थूल शरीरते सूक्षम निकास्योपासकको निज लोक लैजावे ॥ तहाँ अगिनी के लोकते दिनका अभिमानी सू देव सुआयके ताको लैजावे। शुक्लपक्षका देवसू तहां आवे सो उपासक को निजलोक लैजावे ५९ ॥

चौ० ॥ ताते उत्तरइन पटमासा। तिनका सुर आवै तेहिपासा ॥ अपने लोक ताहि लैजावे। सम्बतसरका सुर तहँ आवै ६० अपने लोकन लै सिधराई। सूरज निज अपने लैजाई ॥ ताते चन्द्रदेव लैजावे। बिजुलीका अभिमानी आवै ६१ ॥

छ० ॥ अपने सुलोकलैके तिसको सिधारै ऋषि आदर अनन्द सब देवनते पावे है। दिवसू पुरुष हिरण्यगर्भ की सुअज्ञापाय उपासक ढिग हिरण्यगर्भ लोक विषे आवै है ॥ हिरण्यगर्भकी समान शुभ मूरतीको धारै सब बरुणलोक दामिनी के लोक ते लैजावै है। बिजूका अभिमानी सुर वरुणलोक तक आवे बरुण ते लैके इन्द्रलोक में लैजावै है ६२ हिरण्यगर्भलोक बासी पुरुष औ उपासक साथ इन्द्रलोक तोड़ी बरुण देवसूर जावे है। तिस आगे इन्द्रदेव प्रजापतिलोक तोड़ी युगन के साथ माहिं जावे वेद गावे है ॥ तेहि आगे प्रजापति दोहुनको साथलीने ब्रह्मलोक जाने बिषय समरथ नाहीं है। याते ब्रह्मलोकमें सुदिवसू पुरुष साथ प्रणोका उपासक प्रासो होवे है६३ ॥

चौ० ॥ ब्रह्मलोककर अधिपति जोई। हिरण्यगर्भ को जाने सोई ॥ सूक्षमसमष्टी का अभिमानी। चेतन हिरण्यगर्भ है ज्ञानी ६४ कारज ब्रह्मताहि मुनि गावे। वेद उपनिषद सकल सुनावे ॥ ताके निवासकू जो अस्थानी। ब्रह्मलोक ताको कहै

ज्ञानी ६५ जो ब्रह्मलोक उपासक जावे। हिरनगर्भ समान विभूतको पावे॥ जो शरीरकी इच्छा होई। सतसंकल्पते होवे सोई ६६ जिस भोगनकी इच्छालावे। सत-संकल्पते प्रापत पावे॥ सहस्र शरीरनते ऋषि जोई। जुदे जुदे भोगन चहैं सोई ६७ सहस शरीर धरै तेहिकाला। जुदा जुदा रस लेहि विशाला॥ और सो ऋषिवर क्या बहु कहिये। जो संकल्पकरै सिधि पइये ६८ जग उत्पति पालन लय जोई। इसको छोड़ करै सब सोई॥ और विभूती ईश समाने। याहीको सजूजी बखाने ६९॥

क०॥ ऐसे हिरण्यगर्भकी समान बहुतकाल लगि कामना अनुसार दिव्य भोगन को भोगै है। प्रलयकाल माहीं जब हिरण्यगर्भ लोक नाशै तब ऋषिज्ञान सो उपा-सकको होवै है॥ चिदानन्द माधौराम तिनके मँझारमाहीं देहीको सुछोड़िकै बिदेह मोक्ष पावे है। औरसो उपनिषद में यहीभाँति ऋषिवर ब्रह्मकी उपासनाते किये फल पावे है ७० हंग्रहि उपासनाते औरजू उपासनाहै तिनसे तो ब्रह्मलोक प्राप्तीसो नाहीं है। यहीबात भासकार सूत्रपै व्याख्यान कीन हंग्रहि ध्यानाबिना ब्रह्मलोक नहीं पावे है॥ सगुण निर्गुणब्रह्म आपते अभेद जानै मन बुद्धि बानी रोक चिन्तन जोकरै है। हंग्रहीध्यान ऋषिवर ताहीको बखानै वेद ताहीकर ब्रह्मलोक प्राप्ति सुहोवै है ७१॥क०॥ पूरब मारग जोई कह्यो ऋषि ताको उतरायन मारग गावै। देव सुमारग ताको भनै ब्रह्मलोक उपासी त्यहि राहते जावै॥ तिनको भवफेरि नहीं होय किन्तु ज्ञानको पा-यकै मोक्षकहावै। तहँ ज्ञानके साधन वेदगुरू तिनकी सु अपेक्षा कौन उरलावै ७२ ब्रह्मलोक में वेद गुरू बिन साधन श्रवणआदि बिना तँगहोवै। ब्रह्मलोक विषय नरजोतमहैं जड़ क्रोधसो आदिकन अलसावै॥ सतोगुण केवल प्रधान वहाँ असुरी दुख सम्पति न वहाँ जावे। याते सतोगुण कारण ज्ञानका लोक विषय प्रधान रहावे ७३॥क०॥ प्रणोके उपासनाते पूरब मझारमाहीं ब्रह्मरूप करके जो चिन्तन सो कीनहै। पूरब संस्कारनते ब्रह्मलोक माहिं ऋषि प्रणोकेरी मात्राको चिन्तन सो करै है॥ स्थूल उपाधी सहित चेतन बिराट विश्व ॐकी जो मात्रा अकारकेर वाच्यहै। सूक्षम उपाधीसहित चेतन हिरण्यगर्भ तैजस उकारकाहि बाच्यसो कहावे है ७४ कारण उपाधीसहित चेतन प्राग जोई ईश्वर मकारकेर वाच्य वेदगावे है। ऐसा अर्थ पूरब माहिं चिन्तन जो कीने ऋषि ताकी ब्रह्ममें सिमरती भलेहोवै है॥ स्थूल उ-

पाधीकर विश्व औ विराटपना चेतनके माहीं सो विचारबिन होवैहै। स्थूलसमष्टीकी सो दृष्टीते विराटपना स्थूला सो विष्टीकी सो दृष्टीकर विश्वहै ७५ स्थूल सो विष्टी औ समष्टीकी सो दृष्टीबिन चेतनमें विश्व औ बिराटपना नाहीं है। किन्तु चेतन स्वरूप माधोरामका अखण्ड जोई ब्रह्मलोक माहीं सो उपासकको भासैहे॥ तैसे सूक्षम उपाधिसहित हिरण्यगर्भ तैजस जो चेतन उकारका सो बाच्य अर्थ होय है। तहाँ बिष्टी औ समष्टीकी उपाधीको हटावे जब चेतन मैं हिरण्यगर्भ तैजस सु नाहीं है ७६ विष्टी औ समष्टी के अज्ञानके प्रभावकर चेतनामें ईश्वर प्रागभान होइहै। ईश्वर प्राग सो मकारका सो बाच्य अर्थ वेद औ मुनीशगण सकल बखानै है॥ विष्टी औ समष्टी सो अज्ञानकी सो दृष्टीत्यागे चेतनामें ईश प्रागभाव कछु नाहीं है। जोई बस्तु जाके विषयनकी सो दृष्टी कर होवै परतीति परमारथसे नाहीं है ७७ जाको सो स्वरूप अनदृष्टिकी प्रतीतिबिना होत प्रतीति सो परमारथ कहावे है। जैसे एक पुरुषमाहिं पित औ पितामहँकर सुत पोताभाव सो स्वरूप भानहोइहै॥ पुरुषका सो पिण्डही स्वरूप परमारथहै सुत पोताभाव सो परमारथसे नाहीं है। तैसे सूक्षम स्थूल पुनि कारण उपाधीकर विश्व विश्व हिरण्यगर्भ तैजस प्रागईशहै ७८ सुचेतन स्वरूप माधोरामका अखण्ड जानै भेदरहित तामें सु बिराटआदि कूरहे। विश्व औ बिराटकाज आपुस में भेदभासै विष्टी औ समष्टी अस्थूलकी उपाधी है॥ स्थूलकी उपाधी त्यागे चेतना स्वरूप माहिं दोनों सो अभेदरूप भेद कछु नाहीं है। हिरण्यगर्भ तैजसकी आपुसमें भेद जोई बिष्टी औ समष्टीको सो सूक्षम उपाधी है ७९ परमारथ स्वरूप माहिं भेद कदाचित नाहीं जैसे घटाकाश मठाकाशही स्वरूपहे। तैसे ईश्वर प्रागकाहि भेद सो प्रतीति होय कारण उपाधी तामें विष्टी औ समष्टी है॥ चेतना स्वरूप माहिं सदा सो अभेदरहै जैसे मठाकाश महाकाशते अभेदहै। यहिभाँति हिरण्यगर्भ तैजस प्रागईश विश्व औ बिराटलैके सकल अभेदहै ८० स्थूल सूक्षम कारण उपाधीकी सो दृष्टीत्यागे चेतनाके माहीं किसीरीति से न भेदहै। अनात्मा पदारथ ब्रह्माण्डनाम रूप जोई चेतनते भिन्न सो परमारथसे नाहीं है॥ अविद्याकाल माहीं सो अनात्मा सो देहआदि होतहै प्रतीति ज्ञानमय नहीं भासे है। एक चेतन स्वरूप भेदरहित सो असंग नित्य निर्विकार ब्रह्मरूप आत्मा जो मुक्तहै ८१॥

चौ० ॥ आतम ॐकालक सरूपा। सोयं प्रकाश ज्ञान चिदभूपा ॥ ब्रह्मलोक उपासक जोई। ताको भान होय यह सोई ८२ जो हिरण्यगर्भ लोककोबासी। तिनको भौ निधि दुख नहिं फाँसी ॥ यद्यपि महावाक्य है जोई। तिसके बिवेक बिना चहै कोई ८३ ज्ञानमोक्ष सुख नर नहिं पावे। अद्वैत वाद डोंगी दै गावे ॥ तथापि प्रणो केर विवेका। महावाक्य सब जानै एका ८४ स्थूल उपाधि सहित जो चेतन। अकारका वाचक है मुनि सज्जन ॥ स्थूल उपाधिको त्यागि जो देवै। चिद अकार को लख जो होवै ८५ सूक्षम उपाधी सहि बिचजोई। उकारका वाच्य अर्थ यहहोई ॥ सूक्षम उपाधीको मुनहानै। चेतनमात्र लख पछानै ८६ कारण उपाधिसहित जो चेतन। अकारका वाच सो करै विवेचन ॥ कारण उपाधि जो देवे त्यागी। चेतनमात्र लखै अदागी ८७ ॥

छ० ॥ यहिभाँति उपाधी के सहि विश्वआदिक अकारहिं मात्रके अर्थ कहावे। उपाधिरहित विभू चेतनमात्र सब मात्रन के शुभ लख सुहावे ॥ सकल उपाधि जो नाम सरूपसहि चेतन प्रणोका वाच्य रहावे। नामरूप उपाधीते रहित जो चेतन प्रणो बरनको लख चिदावे ८८॥ क०॥ प्रणो महावाक्यनको एकही अर्थ याते प्रणोके विवेकते अद्वयत ज्ञानहोवे है। ज्ञानका सो पाय बुध त्रिपुटीको त्यागिदेवे इन्द्रीके व्यवहार ऋषि जोई दुखदाई है ॥ करै सो समाधि सूक्षम बुध इन्द्रीबाद जीवनमुकुति सो विदेह अन्तपावे है। किंचित व्यवहार चहै भिक्षा जलपानकरै जिसमें समाधीका सो सुखनहीं भूलेहै ८९ त्रिपुटीको दुखजानि करै सूगिलानी नित लेवे प्रयन्त न समाधी सुख जोई है। ज्ञानका सुपाय सो समाधी सुख तजि भ्रमै ताको मन श्वानकी समान सो भरमावेहै ॥ याते सु समाधीहीन पुरुषनको मनभरमै कीनेते समाधि मनबस सुखपावे है। ज्ञानवान कामनाको तजिके समाधी करै याते ज्ञानवानकी परवृत नहीं होवेहै ९० ॥

चौ० ॥ सो अष्टअंगते होय समाधी। जाते जाय सकल दुख व्याधी ॥ अष्ट अंग अबकरौ उचारी। जो समाधिके हैं सहकारी ९१ यम औ नियम धारणा ध्याना। प्राणायाम प्रतिहार असीना ॥ सब कल्प समाधी जोई। निर्विकल्प यह अष्टते होई ९२ ॥

दो० अहिंसा सति अस्तेय ऋषि ब्रह्मचर्य्य पहिंचान।
अपरीग्रह पुनि जानिये यमयह पाँचाजान ६३॥
शोच और सन्तोष सुख तप सोय ध्यान बखान।
ईश्वरको नित ध्यान यह नियम सो पाँचोजान ६४॥

क० ॥ और सो ग्रन्थके मभ्कारमाहीं ऋषिवर नियम सो दशमप्रकार यमगावे हैं। पुराणकीसो रीतिजानो ग्रन्थ सो वेदान्तमाहीं यम औ नियमके पाँचही सो भेदहैं॥ आसनके भेद सो अनन्त जो ग्रन्थन मैं तिनमाहिं सब सतकरो सुख बीरभद्रहैं। कूरम पद्ममयोर सबसद्य सिधम कोरमको धनम पछातान सो उत्तानहैं ६५ तसहि कूंकुट इत्यादिक चौरासीऋषि आसनके भेद जो ग्रन्थमें विस्तारहै। सिद्ध सिंहभद्र पद्मम तिनमें प्रधानजानो तिनहूके माहीं सिध आसन प्रधानहै॥ ताका यह लक्षण सो कहों मैं विचारिकर जाते ध्यान योगी जा समाधी में लगावे है। बामपादकी सु एड़ी गुदामें ढाके सो मध्यमाहीं सीवनके विषय ऋषि योगी दाबधरै है ६६ दक्षिणपाद एड़ीमेंढ़ ऊपर लगाय दाबै भृकुटी के अन्तर सो राखे दृष्टी जोई है। सरल निश्चल शरीर स्थानूकी समानरहै बज्र गुप्त मुक्त मुनि याहीकू बखाने है॥ आसन सिद्धते अनन्त पुन प्राणायामकरै ऋषि प्राणायामग्रन्थमें बहुतसे प्रकार है। तद्यापि संक्षेपकर तुमको जनाऊँ भले योगग्रन्थमाहीं जो पतंजलि बखाने है ६७ नासिकाके बामछिद्रद्वारा इड़ानाम नाड़ी ताते बायूरोकै ताको पूरुषसों कहिहै। दक्षिणते त्यागै ताका रेचक सो कहै मुनि सुत्रमन रोकै ताको कुंभक सो भने है॥ यहिभाँति रेचकको पूरकको कुम्भकहै प्राणायाम करै सो तौ विविध प्रकारहै। एक तो अगर्भजानो दूसरा सगर्भकहै सावधानह्वैके ऋषि सुनो मैं बनावे है ६८ प्रणोके उचारणसंहित प्राणायाम करै जोई ताहीको अगर्भ मुनि वेद नितगावे है। प्रणोके उचारण सहित प्राणायाम सुना ऋषि ताहीको सगर्भ सो पतंजलि बखाने है॥ शब्दस्पर्श रूप रसगंध बिषयनते इन्द्रियका निरोधै ताको प्रतिहार कहैहै। अन्तराई रहित अन्तःकरणकी सु इस्थितीको ताको सु मद्भूकमाहीं धारना सुभनेहै ६९ अन्तराइ सहित सु अद्वैत चिदमधी माहीं अन्नसको प्रवाह ताको ध्यानमू बखाने है। बिऊथान संस्कार तिसको त्रसकार करै प्रगटकरै जू निरोध संस्कारहै॥

अन्तःकरणकी इकाग्रताको रूप परिनाम जोई तिसको समाधी ऋषि मुनि वेद गावेहै। द्विविधा प्रकार सो समाधी की सुरीति निरविकल्प एक सहि विकल स-माधी है १०० ज्ञाता ज्ञानकेरूप त्रिपुटीसहित भान अद्वैत ब्रह्म चिदानन्द व्यापक सु जोईहै। अन्तसकीवृत्ती ऋषि तिसमें अरूढ़करै विकल्प सहितको समाधी ताको कही है ॥ सहि विकल्प समाधी ऋषि दुविधा प्रकार जानो इक शब्दान विध मुनिन वखाने है। नुविध शब्दान पुनि दूसरीको जानो भले दुविधप्रकार ते स-माधीनकै सुभेदहै १०१ अहंब्रह्म अस्मीयहि शब्दके सहितहोय शब्दान बिध बुद्धि ताहीको बखाने है। शब्दरहित कासुनुबिध सब दानकहै ज्ञाता ज्ञानज्ञेय जामें त्रिपुटी सुनाहीं है॥ अखण्ड ब्रह्माकार अन्तःकरणकी सो वृत्तीकरै रूढ़ निरविकल्प समाधी ताकी गावे है। यहभाँति द्विविध प्रकारकी समाधी जानो विकल्प एक निरविकल्प गावे है १०२ तिनमें सहि विकल्प साधनाका रूपजानो अचल स-माधी पुनि ताहीको सुफलहै। सहि विकल्प समाधी जोई साधना स्वरूप कहे ताके विषय त्रिपुइसुद्वयत भानहोयहै ॥ तथापि द्वैत त्रिपुटी जो ज्ञाताज्ञान ज्ञेय जोई ब्रह्मरूपहै। केसुप्रतीति सबहोवै है जैसे माटीके बिकारनको मृत्तिका स्वरूप जानै माटीका विकार घटआदिभानहोवै है १०३ तद्यपि विवेकवाले पुरुषन की दृष्टी माहिं बाहर भीतर घटके सुमृत्तिका प्रमानहै। तैसे योगीको सहि विकल्प स-माधीके मँझार माहिं त्रिपुटी जो द्वयत ब्रह्मरूप भान होवै हैं ॥ सविकल्प समाधी निरविकल्प समाधी माहिं द्वयतरूप त्रिपुटी सो ऋषि विद्यमानहै। तौभी त्रिपुटी सो द्वैतरूप नहीं भानहोवै भले जैसे लोन जलमें सो मिलै विद्यमानहै १०४ किंतु नेत्रसे लोनका स्वरूप कछु देखे नाहीं अंतसकी बृत्ती तैसे ब्रह्ममें रहावे है। यहि भाँति विकल्प निरविकल्प समाधनका दुविध प्रकार यह भेद वेदगावे है ॥ सवि-कल्प समाधी माहिं ब्रह्मरूपकरके सो द्वैतरूप त्रिपुटी सो योगी निश्चयकरे है। अचल समाधी माहिं द्वैतरूप त्रिपुटीकी लेशमात्र नाहीं भासै ब्रह्म एकभासै है१०५ स० ॥ निरविकल्प समाधी सुखोपतिका ऋषि आपस माहिं सो भेद जनावे। अं-तसकी ब्रह्मकारज बृत्ती सुखोपति माहिं अभाव कु पावे ॥ अचल समाधी विषय ब्र-ह्माकार सो अंतस केर सो बृती रहावे। तिसका ऋषिमान सो होय नहीं याते योगी

समाधि विषय सुखपावे १०६ यहिभाँति सुखोपति माहिं विषय वृत्ती अंतसकी सो अविद्या भै जावे। अंतःकरण सो वृत्ती के सहित भले निरविकल्प समाधी विषय सो रहावे ॥ ताकी प्रतीति सो होवै नहीं चिद माधौराम विषय विलसावै । निरविकल्प समाधी विषे अंतःकरणकी वृत्ती जोई ब्रह्माकार रहावे १०७ ॥

चौ० ॥ विकल्प समाधी कर अभ्यासा। ताको होत लखै जगआसा॥ अष्टअंग में साधनरूपा। निरविकल्प समाधि निरूपा १०८ अचल समाधी ऋषिवर जोई। द्विविध प्रकार पिछाना सोई॥ एक अद्वयत भावनारूपा। दुसरी अद्वयतावसथनरूपा १०९॥

क० ॥ अद्वयत ब्रह्माकार अंतःकरणकी अज्ञात वृत्ती सहित होय लेश जाको भान नहीं होवै है । अद्वयत भावना स्वरूप निरविकल्प समाधी कहैं योगीजन याहीको अभ्यास दृढ़करे है ॥ समाधी माहिं जो अभ्यासकरें अधिकतासे ब्रह्माकार वृत्ती ऋषि सोभी शांतिपावै है । याते वृत्ती रहितको अदेवता व स्थानरूप अचल समाधी मुनि याहीको बखाने है ११० जैसे तपत लोहे विषय जलकी सो बूंद गेरै जरत लोहे माहिं सो प्रवेशकर जावेहै। तैसे अदेव भावना समाधी के अभ्यास दृढ़ महाप्रकाश वृत्ति ब्रह्ममाहिं मिलेहै॥ अदेवता व स्थानरूप अचल समाधी जोई याही को सो मुख्यफल वेद नितगावे है। अदेव भावनास्वरूप निरविकल्प समाधी सो देवता व स्थानका सो साधना सो होवे है १११ ॥ क०॥ अदेवता व स्थान स्वरूप समाधि सुखोपति माहिं यह भेद रहावे। अंतःकरणकी वृत्ती सुखोपति में सो अज्ञान विषय वह जाये समावे॥ अदेवता व स्थान समाधी विषय वृत्ती अंतसकी ब्रह्ममाहिं सोहावे। सुखोपति माहिं जो आनन्द है सो अज्ञान विषय वह ढाँपा रहावे ११२ समाधी विषय निरावरन भले ब्रह्मानन्द प्रकाशका भान सो होवे। किन्तु अचल समाधी अःरम्भन मैं ऋषि चार सो विघुन अदिष्ट रहावे॥ याते निषेदनके सो लिये पर जतनकरै जेहिते सुखपावे। लइयो विषेपकखाये त्रिधास स्वाद यहिचार सो विघुन रहावे ११३ आलसते चहिनिद्रा परभावते व्रती अभावको लै मुनिगावे। याते अन्तष्करण की वृत्तीको लै सुखोपति समान अवस्था सो होवै ॥ ब्रह्मानन्दका भान सो होवे नहीं सो अविद्या तमोगुण मैं ढपजावे। याते आलस निद्रा परभावनते योगी विघुननते सबाधा न रहावे ११४ ॥ क० ॥ जब वृती अपने सो उपादान अन्तसमय दीखै सो वि-

चारकरलैता होतजातहै। तवहीं सो योगी सावधान होय भली विधि निन्दाआदि दोप रोष वृत्तीको जगावे है॥ लै स्वरूप विघुनका बाधिक सो नींद आदि निरोध सहित वृत्ती परवाह योगी जागे है। समवोधन चित याको सुपतंजलि मुनीश कहै अर्थ सो विक्षेप अब सुनै मैं जनावे है ११५ जैसे बाज विल्लीकर चटकास डरजावे भागकर गेहमें प्रवेशकर जावे है। तहांभै व्याकुलते गेहके सो अंतरमें ततकाल आपना सो थान नहीं दीखे है॥ याते फेर बाहर आये खेदियत भैपावे अवस्था सो मृतुको प्राप्ति सो होवैहै। तैसेही अनात्मा पदारथ को दुख हेतु जानकर योगीसो समाधीको अरम्भै है ११६ अद्वेतानन्दकाहि विषय करनेवास्ते अन्तर मुखवृत्ती योगी हठबाँध अन्तर सोलावे है। तहां वृत्तीकोसो विषय सुख चेतन स्वरूप सूक्षम कारण स्थूलपरै अति सूक्षमरूपहै॥ याते किञ्चित सो कालऋषि वृत्तीके अरूढ़ बिना चेत न अनन्द ततकाल सो अलाभहै। समाधी के अरम्भ माहिं बहिरमुख होवै वृत्ती बहिरमुख वृत्तीको विक्षेप ऋषि गावे है ११७ याते वृत्ती के निरोध विन चेत न स्वरूपानन्द महा सुअपार सुख योगी नहीं पावे है। अन्तरमुख ऋषि होय जितने को कालवृत्ती ब्रह्म कारनही सो अडोलवृत्ती होवे है॥ उतनेको कालपुन कहिज के पदारथमें बारम्बार दोष दृष्टिमुनि को दिखावे है। बहिरमुख वृत्ती काहि योगी होन देवे नाहीं अन्तरमुख वृत्तीका सो थापना सो करे है ११८ विक्षेपरूप विघन समाधी के मँझार माहिं योगी के परयतन को समुनि गावे है। रागआदि दोपनको कोविदिकखायकहै यद्यपि सो रागदेव साद्विविध प्रकारहै॥ एक रागदेवसआदि वाहज वासकरै दूसरा सो अन्तरमें डेरा सो जमावे है। दारा सुत धन आदि विषय व्रतमान जेते तिनमें सो रागदेवसबाहिय कहावैहै ११९ भूत वा भविष्य के पदारथको चिन्ताकरै मनोराज दुखदाई अन्तर रहावे है। सो दुनहूं प्रकारके सो रागदेवस आदिक समाधी में प्रवृत्ती योगी विपथ नाहिं वनै है॥ चितकी सुभमकासो पांच सु वखानै वेद तिनमें सो एक छेप भूमिका सो नाम है। मूढ़ता सो दूजीभनै तीजी सो विक्षेप कहै चौथी सो एकाग्रता सो पंचमी निरोध है १२०॥

चौ०॥ देहलोक शास्त्रहै जोई। इनते आदिसो लेह वहुसोई॥ इनके विपय वासना जाकी। नहिं उपराम होय सुखताकी १२१ रजोगुणकापरिणाम जो आही।

दृढ़ बासना अनातम माँही ॥ ताको मुनि क्षेपक नितगावै। इनतें नहीं समाधि सुख पावै १२२ निद्रा आलस आदिक जोई। तमगुणके परिणाम हैं जोई ॥ ताको गुणता कहै मुनीशा। यह उरमें तुम लखो ऋषीशा १२३ ध्यानमें प्रवृति कभी चित होवै। कबहुँक वृत्ती बाहर जोवै ॥ यहको क्षेप सुवेद बतावे। योगीको भै दुख उपजावे १२४ अन्तस कर अतीत प्रनामा। औरसो ब्रतमान परनामा ॥ समान अकारहोय पुनि दोई। कहै इकागरताको सोई १२५ ॥

स० ॥ योग सुसूत्र माहिं पतंजलि एकागरका यह लक्षण गाये। तिसका यह भाव सुनो ऋषिजू जेहिते उरते दुखजाल विलाये ॥ योगीको अन्तष्करण के माहिंइकागर समाधी सो कालमें पाये। सो इकागर बृत्तिका भाव नहीं सो समाधि विषय ब्रह्म आकार रहाये १२६ ॥ क० ॥ जितने का अन्तसके परनाम सो समाधी माहिं सारी बृत्ती ब्रह्महीको विषय ऋषि करैहै। याते अन्तसके अतीत वर्तमानको परिणाम सब ब्रह्माकार होनेते समानाकार होवेहै ॥ एकाग्रताकी बृधीक सो भनत मिरोध मुनी अन्तसकी भूमिका सो पाँच ऋषी औरहै। भूमिका सुनाम सो अवस्था को बखाने मुनी पाँच भूमि सहित ऋषी अन्तसके नामहै १२७ छिपत सो मूढ़ औ विछपत अ-कागर निरोध मिल अन्तसकी भूमिका ये पाँचहै। तिनमें सुछिपत सो मूढ़ अन्तः-करण काहि ताको सो समाधीका सुनही अधिकारहै ॥ विछपत अन्तःकरणकी समाधी में अधिकार अहै यह योग ग्रन्थन में प्रगट बखाने है। एकागर निरोध अन्तःकरणका प्रभाव जो समाधीकाल माहिं ऋषि योगीका सुहोवे है १२८ रागआदि दोष सहित अन्तसछिपत रहै छिपत अन्तःकरनका अधिकार युगनाहीं है। कखाइ राग द्वेष जो समाधी के विघ्न अहैं इनका सुनाम लेना सम्भवे सो नाहीं है ॥ तदपि सुब्राहे जस अन्तमें रागद्वेष छिपत सो अन्तष्करण माहिं होवे है। अचल समाधी का सुताको अधिकार नाहीं जिसका सो पायके अकण्टक योगी होवेहै १२९ तोभी तो अनेक जन्म पूरबके विषय माहिं अन्तोभी कीने रागद्वेष अन्तर बाहिर जोई है। संस्कार तिनके सो सूक्षम विक्षेपत आदि अन्तष्करण के मँझार माहिं होवे है ॥ याते राग द्वेष कोकखाय नाम नहीं कहै किन्तु संस्कार रागद्वेष का खायेहै। जितने कुकाल अन्तःकरण सो रहै ऋषि संस्कार बने रहै दर नहीं होवे है १३० समाधीकाल महि

याते योगी कैसो अन्तस में रागआदि दोषन में संस्कार रहै है परन्तु रागद्वेषन के संस्कार रहै है। अचल समाधी सुख तिसके मँझार माहीं अनभूद संस्कार सोविरोधी नाहीं है ॥ समाधी में परबृत्ती योगी जिसकाल माहिं होय रागद्वेषन के संस्कार प्रकट जोहोवै है। बाहिर विषयकार बृत्ती ताहिको विक्षेपकरै तिसका सुबाधकर योगी सुखलेवे है ॥ योगी के प्रयत्नते जहाँ बृत्ती बाहिजा होय तिसका हटायकर अन्तर मुख करे है १३१ परन्तु राग आदिनके अद्भुत संस्कारन ते अन्तरमुख होई बृत्ती फिर रुकजावे है। अन्तःकरणकी बृत्ती विषय ब्रह्मका सुकरै नाहीं ताही कोकखाइ मुनीशन बखाने है ॥ विषय माहिं दोष दृष्टी योगी के उपावकर विघ्नकखाइ कीन बृत्ती फिर होवे है। रस स्वादका सु अर्थ यह तुम जानो भले ऋषि योगीका सु ब्रह्मानन्द भले आनभयो होवे है १३२ और सो विक्षेप रूप दुख जो अपारहोय तिसकी निवृत्ती काहि अनुभव सो करे है। कहूँ दुखके अभावनका आनन्द समान लेवे नित्यानन्द तिनका सुलाभ ऋषि नाहीं है ॥ जैसे भारवाही पुरुष भारकर दुखपावे भारके उतरजाने आनँदको माने है। तहाँ आनन्द में और कोई विषय सुखहेतु नाहीं भारजन दुखके अभावते यह कहे है १३३ मेरेका सुआनँद सुहुआ यहकाल माहीं याते दुखकी निवृत्ती भी आनँदका सुहेतुहै। तैसे योगीका समाधी में विक्षेपजन दुख जोई तिसकी निबृत्ती परयतन ते करै है ॥ विक्षेपजन दुख के अभावते जो आनन्दहै तिसै अनुभवकरै रस स्वाद मुनि गावे है। जो दुखकी नि-बृत्तीजन आनन्दके अनुभव तेहीं योगी जो अलम्बबुध तिसमें जो करे है १३४ तौ सकल उपाधि रहित ब्रह्मानन्दकारबृत्ती तिसका अभाव जब ऋपि वर होवे है। महासो अपार सुख चिदानन्द माधवराम तिनका समाधी माहिं योगी नहीं पावे है ॥ याते दुखकी निबृत्तीजन आनन्दका लाभ जोई रसास्वाद विघन समाधी के मँझार है। वचता अर्थ के प्राप्त बिनाबाध जो विरोधी काहि आनन्द के उत्पति माहिं दृष्टान्तहै १३५ जैसे पृथ्वी के मँझार माहींको सनदी दबीरहै अति अंत बि-षधर सपराखी करे है। तहां निधीके प्राप्तसे प्रथमकाल माहिं ऋपि निधी के प्राप्त उर जग बिरोधी है ॥ तहां किसीकाल सप औरदेश माहिं जावे तिनकी निवृत्ती कर आनन्द सो होवै है। तहां सपकी निवृत्ती माहिं आनन्द जानिलेवे तिस

माहिं अलम्बबुध कर जबलेवे है १३६ उद्यम जो खोदनेको तिसका जो त्यागदेवे निद्धि के प्राप्तको नहीं सुख पावे है। तिमसूअदेवत ब्रह्मसुख निध जानो भले तिसकी प्राप्त अवाधसुख लाभ है॥ अनात्म पदारथ जो धन धाम देह आदि तिनकी प्राप्त विक्षेपरूप सापहै। विखेपरूप सपकी निवृत्ती जिन आनन्द जो तिसका अवात्र सुख मुनिन बखाने है १३७ रसास्वादके मँझार माहिं योगीजन भूलजावे रसकाहि अनुभव अनुस्वादन स्वरूप है। निधीरूप अदेव ब्रह्मअचल अखण्ड अज तिसकी प्राप्त जिन सहाजो अनन्द है॥ ताकी सुप्राप्त मैं ब्रत बन्ध होनेकर याते सो समाधी माहिं बिघन बखाने है। अथवा जो रसास्वाद विघन समाधी माहिं तिसका सो और अर्थ कोबिद बखाने है १३८ सविकल्प समाधी ऋषि पहिले काल माहिं होय उतरकाल माहीं निरविकल्प होवे है। सो विकल्प समाधी माहिं ज्ञाता ज्ञानज्ञेय जोई ब्रह्मरूप भानहै के त्रिपुटी जो होवे है॥ सविकल्प समाधी का सो आनन्द त्रिपुटी रूप होनेते उपाधी सहित उपाधिक ताको कहिहै। निरविकल्प समाधी विषय ब्रह्मानन्द एकरहै देवतरूप त्रिपुटी सो भान नहीं होवै है १३९ याते निरूपाधिक अखंड नित्यानन्द भले अचल समाधी माहिं योगी सुखलेवें हैं। सो विकल्प समाधी ते उतर ऋषिकाल माहिं अचल समाधीका अरम्भ जबकरे हैं॥ सविकल्प समाधीके उपाधिक अनन्दका विक्षेपके अभाव जिन सुख त्यागै नाहीं हैं। किन्तु ताहीके मँझार रहै ताहीका सो अनुभवकरै रसास्वाद ताको सो योगीसन बखानै हैं १४० याते विक्षेपकी निवृत्ती जिन आनन्द जोतिसे अनुभव होवै रसास्वाद ताको भनै हैं। अथवा सो विकल्प समाधी के अनन्दकाहि तिसे अनुभवकरै रसास्वाद ताको गावे हैं॥ निरविकल्प समाधी परमानन्दके सुअनुभवकाहि रसास्वाद दोनहु प्रकार के विरोधी हैं। याते सो विघन जान तिनका सो त्यागि देवे अचल समाधी के विरोधी यह चारहैं १४१॥

चौ०॥ याते चार बिघन यह जोई। समाधि अरम्भ में होवै सोई॥ स्वाधानता योगीहू के। चारि बिघनको रोकैं कसके १४२ समाधि में परमानन्द अखंडा। ज्ञानवान तेहिलखै प्रचंडा॥ ताको जीवनमुक्त उचारे। निरभै सुख मिले ब्रह्मअपारे १४३ यहि विधि चितज्ञानी करजोरी। निरालम्ब भरमै नहिं थोरी॥ प्रालब्ध जब आवै

अयोगी। होय उथान समाधिते योगी १४४ तौभी समाधिमें परमानन्दा। अनुभव किया जो है निरद्वन्दा॥ ताको स्मृती ज्ञानहै जोई। योगी के उरहोवै सोई १४५ याते उथान कालके माहीं। निरालम्ब चितज्ञानी के नाहीं॥ और सो ज्ञानवानं ऋपि ज़गमें। परवृतहोय जो जल भोजनमें १४६ केवल प्रालब्धते होवै। पुरषारथ न जग नहिं जोवै॥ परन्तु भोजन आदि व्यवहारा। तिसमें ज्ञानी फिरैं संसारा १४७ तामें खेद दुःख बहु मानै। ज्ञानीकर चित ज्ञानी जानै॥ और सो मूरख जगमें जेते। तिन्हमें दोष अरोपेक्केते १४८॥ ॥ याते भोजन आदिक माँहि परवृत्ती परालब्धिते ऋपि ज्ञानी जो होवै। समाधी विषय परमानन्द अपार जो तिसका विरोधी व्यवहारको जोवै॥ जाको भोजन आदिक शरीर निरबाहक तामें परवृत्ती है खेदको लेवै। भवमण्डल हेतु पदारथ माँहि सो आदिक प्रवृत्ती सो ज्ञानिनहोवै १४९॥ ॥ यहभाँति बहुत अचारज जगतमाहीं रीति जो समाधी की है ताको सुखगावै है। याते जीवनमुक्त सो समाधीका अनन्दपाय तिसकी परवृत्ती बाहिर जगमें न होवैहै॥ सदा सो निवृत्तरहै जगमें न लावे आस कौहि अजतकलै परवृत्ती दुखदाई है। सुखअर्थी ज्ञानवान जीवनमुक्तकेर तिसको परवृत्ती याते कहूं नाहीं बनेहै १५० तथापि ज्ञानवानके निवृत्तीको निज मनहीं जिन बन्धकरमते निवृत्त शुद्धरूपहै। प्रवृत्ती माँहि अथवा निवृत्तीरूप ज्ञानी काहि वेदकी सो अज्ञादण्ड विधि कछू नाहीं है॥ याते ज्ञानवानके व्यवहारका नियम नाहीं जोते विद्यावान निरदण्ड मोक्षरूप है। खान पान वसन व्यवहार जो शरीर काहिइच्छाते रहित प्रालब्ध करहोवैहै १५१ जिस ज्ञानी कासो प्रालब्ध भिक्षा भोजन मात्राका फल कासो हेत वर्तमान माहिं होवै है। ताकी भिक्षा भोजन में ऋपि सो प्रवृत्ती होय अधिक प्रवृत्ती ताकी सम्भवै सो नाहीं है॥ जाकी प्रालब्ध बहु भोगन की हेतु होवै ताकी सुप्रवृत्ती सो अधिक जग होवैहै। और जो ऐसे कहै जाकी प्रालब्ध ऋपि भिक्षा भोजनमात्रका हेतु जोई होवैहै १५२ ताहीका सुज्ञान होवे बुद्धी के मँभार माँही अधिक प्रवृत्तीवाला ज्ञानी नहीं होवे हैं। याते भिक्षा भोजनते अधिक व्यवहार जोई दुखहेतु विद्वान कदे नाहीं चाहै हैं॥ अनात्मा पदारथमें अधिक प्रवृत्ती जाकी ब्रह्मश्रोती ब्रह्मनिष्ठी ज्ञानी पुरुष नाहीं हैं। ऐसी शङ्काकरै कोई ताको कहे नाहीं बने जनका याज्ञवल्क्य ज्ञानी वह

कहाये हैं १५३ सभाविजय करि धन संग्रह सोअपारकरि अधिकव्यवहार याज्ञवल्क्य मुनिकीनहै। तथा सृष्टी कासो पालन सो राज मिथिलेश कीन जिनका प्रसंगऋषि पीछे में बखाने हैं ॥ योग सो वसिष्ठ परबन्ध के मँझार माहीं नाना व्यवहार ज्ञानी पुरुषन के कहे हैं। याते ज्ञानी के निवृत्ती प्रवृत्ती का निज मनाही संग्रह त्यागताका प्रालब्धके अधीन है १५४॥

चौ०॥ यद्यपि याज्ञवल्क्य थे जोई। सभा विजयकीने मुनिसोई॥ भूमिपाल सम जगत मँझारा। सकलभोग कीने व्यवहारा १५५ उतर विदित सन्यासन वृत्ती। धारे मुनिनिहि करी प्रवृत्ती॥ भव भोगनमें गिलानकी ताई। नानादोष कहे बहगाई १५६ तौभी याज्ञबल्क्यके उरमें। विदित संन्यासते पूरब घरमें॥ आतम बोधतनिक नहिं रहई। यह कहना उनपर नहिं बनई १५७ किन्तु ज्ञान सो परथम काला। रह्यो सो तिन्हैं हने जंजाला॥ परन्तु विदित संन्यास ते पूरब। जीवनमुक्त अनन्द अपूरब १५८ सो तिनका नहिं प्राप्ती भयऊ। जग व्यवहार खेद उर ठयऊ॥ याते जीवन मुक्तकी ताँई। तिसकी इच्छा मुनि उर आई १५९ संग्रह सर्ब्ब वित्त व्यवहारा। सर्व तजे जो दुःख अपारा॥ जीवनमुक्त अपार अनन्दा। तिसको पायेभे निरद्वन्दा १६०।

क०॥ याते याज्ञवल्क्यकी सो प्रालब्ध ऋषिवर भोगनकी हेतु कछु काल सो रहाई है। उतरकाल माहीं न्यून भोगनकी हेतु भई याते सो गलानी कर भोगनको त्यागे है॥ प्रथम सो काल जगबलको गलानी बिन अधिक व्यवहार सब भोगन को कीन है। और सो विलक्षन मिथिलेशकी सो प्राबन्धमरण पर्यन्त राजपालन सो कीनहै १६१ दिन प्रतिभोगनकी अधिक समृद्धी भई याते सदा त्यागका अब वाही सो हुआहै। याज्ञबल्क्यकी समान जग भोगन व्यवहार माहीं लेशमात्र ताको सो गलानी नाहीं आई है॥ बामदेव आदिक लै बहु ज्ञानी पुरुषभये प्रालब्ध भोग हेतु ताकी न्यूनभई है। तिनका सो भोगन में सदा सो गलानी भई तिनकी प्रवृत्ती का अभाव सो बखाने हैं १६२॥

चौ०॥ बाल्मीकि कृत वसिष्ठ है जोई। तामें असप्रसंग है सोई॥ शिखरध्वजा को प्रथमहिं काला। बैराग विवेक सो भयो विशाला १६३ भोगन माहिं गलानी आई। राजत्यागि नृप कानन जाई॥ निजपत्नी सों ज्ञान सोपाये। तजि अरण्य

नृप घरमें आये १६४ ज्ञानते पीछे अधिक प्रवृत्ती। शिखरध्वजा कीन्हें सहिवृत्ती ॥ यह विधि नानाभांतिके सोई। व्यवहार विलक्षण ज्ञानी के होई १६५ तिन सबनको ज्ञान समाना। घट बढ़ता मैं लेश न आना ॥ ज्ञानका फल सुख मोक्षहै जोई। एक समान लिहनि सब कोई १६६ माधवराम चिदानँद माँही। तिनमें मिले सकल दुख दाही ॥ दुख भवसागर फिर नहिं आये। यह ऋपिवर मैं तुमहिं जनाये १६७ ज्ञानवान को ऋपिवर जानो। सदा समाधी जगमें मानो ॥ रज्जु सर्प सम जग व्यवहारा। मिथ्या जानि रहै संसारा १६८ जिनका माधवराम सहाई। तिनका भय दुख रहै न काई ॥ अब यक गाथा ऋषवर जोई। जो पूरव सुखदायक होई १६९ सो शुभ कथा मैं तुमहिं सुनावों। जेहि सुनि उरमें आनँदपावों ॥ अमीपद पंकज माधौकेरे। तिसका ध्यान हनै दुखडेरे १७० जो जो नर माधवपद पाये। ते ते भवनिधि दुखनहिं आये ॥ जो दुखमें रहि सुख निधिपाये। तिनकी कथा सुनो मनलाये १७१ हरबुध नाम एक बुधिमाना। भयो जगतमें धर्म निधाना ॥ दैवी सम्पति सहित मुनीशा। परमारथ जानै सब ईशा १७२ जन्म कर्म प्रथमै मुनिकेरे। हे ऋषि तुमहिं सुनांओं टेरे ॥ शुभाशुभ करमनकर फल जोई। मुनि द्विजकुल तनधास्यो सोई १७३ वसु संवतकी उमिर जो पाये। अज्ञान अधीन ज्ञात नहिं आये ॥ असक्ति महादुख जड़ता माँहीं। सदा क्लेश भोगै सुखनाहीं १७४ वाल्मीकिऋषि वसिष्ठ मँझारा। शिष्यनके दुखकहे अपारा ॥ सो सब दुख मुनिवर पायो। बालक तनधरि जो जगआयो १७५ मात पिता उपनैन सो कीन्हें। द्विजकुल धर्म आजु बहु चीन्हें ॥ साथै व्याह संगलपद दीना। जिसमें सब जीव परे आधीना १७६ गृहरक्षक नाना व्यवहारा। करै सो मुनि जिनके न बिचारा ॥ बिनु विवेक व्यवहारहै जोई। जन्म मृत्यु दुख फाँसीहोई १७७॥

स० ॥ अज्ञानकृती भवबन्धन जो दुख पूरबकाल सो मुनिको छायो। पंचभूतक देह अनातमकेहित नानाप्रकार की कृत्य कमायो ॥ अज्ञान अधीन भवभोगन में सुख शान्त कदाचित मुनि नहिं पायो। गृह आश्रम विषय सहे दुख अपार सो अनन्दलेश नहीं कहुँ आयो १७८॥

चौ० ॥ पूरव पुण्य उदय कछु भयऊ। शुभ वैराग सो मुनि उर अयऊ ॥ जननी जनक भवन परिवारा। धनक्षिति आदिक जो व्यवहारा १७९ तिनमें मुनिवर कि-

हिन गलानी। जगव्यवहार लखे दुखदानी ॥ माधोराम एक सुखरूपा । तिनको नित सुख लखो अनूपा १८० तिनके पद पावनकी ताई । हर मुनिके हिरदय में आई॥ तिनविन मो काके सुखदाई । गो गोचरलग सब दुखदाई १८१ द्वादशवर्ष उमिरि जब पायो । माधो गुरुपद में चलिआयो ॥ माधोराम चिदा सुखसागर। वेदलोकमें सदा उजागर १८२ जिनका योगी करै सो ध्याना । तनतजि पावै पद निरवाना॥ दीनदयालु सन्तहितकारे। जगत चराचरकेर अगारे १८३ ॥

क० ॥ तिन मुनिका सो दुखीदेख जगत मँझारमाहीं दयासिन्धु महाराज लीन तेहि उबारिया । निज सुखचरन सरोजसे उतार शुद्ध वेद मन्त्र साथ ताको देहना अचवाइया ॥ तीनताप मुनिकेरे दुखसू अपार नाशे सुख शान्त ब्रह्मानन्द पायो जो अपारिया । पूरब सनेहिनको जगमेलातुटगयो जिनका कुसंगपाय रहै वै दुखारिया १८४ ॥

चौ० ॥ यहिविधि माधो गुरुपद पाई। सुखीभयो सो तुम्हरी नाई ॥ आतमबोध सुनी उरभास्यो। जिमि अभरफटी सर परकास्यो १८५ शेष अविद्या जो दुखमूला। मृगवारी सम भई निरमूला॥ज्ञान विराग देखको पाई। फिर सुरसरितट वसै सो जाई १८६ ऐसे माधो ईश हमारे। अनेक दुखिन सुखदीन अपारे ॥ उदासीन तापस मुनिज्ञानी । तेहि तटवसैं मोक्षके दानी १८७ शुभकृत फल सुरसरि तटपाई । नित मुनि आनँद रहै भुलाई ॥ माधोराम दयाते ऋषिवर । नहिं जानै भवकहँ दुख-सागर १८८ यहिविधि दशपँच संवत जोई। भयो व्यतीत दुःखसहि सोई ॥ यकदिन मुनि विचार उर ठ्यऊ। को अदिष्ट यक उदय सो भयऊ १८९ जननी जनकभवन परिवारा। तिनहि मैं त्याग्यो बाल मँझारा ॥ दिन वहुगयो न दरशन कीनो। यह इच्छा मुनिभयो नवीनो १९० धर्मरूप मुनिवर बुधिमाने । विवेकज्ञानमें परम सयाने॥ गृहआश्रमी गृही जोई। तिन घर सन्तजाय चलिकोई १९१ भागमान तेहि गृही समाना। नहिं ऋषिवरको जगमें आना॥ सन्तबिना भवजीवन काहीं। सुखदायक कोउ जगमें नाहीं १९२ जिसमें भवबन्धन होवै भारी। सो सवविधि जानै संसारी॥ निज निज स्वारथको लै सबहीं। यकसन एकसाथ मिलि जबहीं १९३ विना प्रयोजन सन्तदयाला। मोक्षकरैं सबको ततकाला॥ याते है सन्तकी महिमा

जोई। महाअपार लखै नहिं कोई १६४ याते हर मुनिवर सुखदाई। महतको करन कल्यानकी ताई ॥ यह विचार शुभ मुनि उरधारी। सन्तबिना को है उपकारी १६५ मात पिता गुरु दरशन माहीं। वेदपुराण दोष कहै नाहीं ॥ असुसकृत करै जग व्यवहारे। तिसमें दोष कहै बुधिसारे १६६ है अतीत जगबन्धनहाने। सन्तपरै नहिं तिसमें स्याने ॥ जननी जनक दरशको लैकै। फिर यह आश्रम आयो चलके १६७ यह विचार मुनिवर उरधारे। जनम देशमें गये पधारे ॥ द्विजके नगर निकट मुनिगयऊ। देश लोक सब घेरिसो लयऊ १६८ आदरभाव मुनीकह सोई। बहुत प्रीति कीन्हे सब कोई ॥ जननी जनक देखि मुनिकाहीं। हरष अपारकीन मनमाहीं १६६ मुनि पर मोहधार उर दीनो। द्विज दम्पती सुरोदन कीनो ॥ अधिक प्रलाप बहुत पछितावै। भवमण्डलके दुःख जनावै २०० तिनहिं देखि मुनि करुणाआयो। कुशलक्षेम मुनि पूछन लायो ॥ केहि कारणते दुखित उठाये। हे द्विजवर मोहिं देहु सुनाये २०१ यहिविधि सुनि मुनिवरकी बानी। बहुत हर्ष द्विजवर उरठानी ॥ निज अपना कल्याणहै जोई। निश्चय किय सो ब्राह्मण सोई २०२ हाथजोरि भक्ती रससाने। मुनिके आगे लगे बखाने ॥ तुम त्रिकालदरशन सुखदाये। सब उरजानो बिनहिं जनाये २०३ हमसे मन्द जगत जो लागे। तिनका फिरहु करन बड़भागे ॥ याते हमरे शुभकृत हैं जोई। तिसका सुखफल मिल्यो तमोई २०४ भवसागर में गिरा अभागा। आयो मोहिं करन बड़भागा ॥ हमारि कुशल पूछ्यो सुखदाई। मैं कह्यो तुम्हारापद पाई २०५ ॥

क० ॥ यद्यपि सो त्रिधालोक माहिं चारखानी जोई शुभाशुभ सब उरजानो चराचरके। तद्यपि सुनाथपद पंकज भँभार माहीं अपना अपार दुख कहौं मैं सुनायके ॥ बुरी भली साँची खोटी गुरूसे दुरावे नाहीं गुरू सन्त सिख आगे कहै सब खोलके। जिसमाहिं मल औ बिषय दुखनाशहोय माधो चिदानन्द उर मेरे वश आयके २०६॥ जिसपर दुखजाय मेरा सो कल्याणहोय सोई सुख उपाय कहो मोको तू बनायके। भव जीवनको दुख बाध सन्तन कल्याण करै तिसका सु. जगमें न कोई सुखदायके ॥ अन्धकूप समान भवसागर अपारमहा तिसमाहिं थाह नाहीं पावे तनधारके। जिस माहिं सुख सपने में नहिं पावे नर जन्म मृत्यु के अधीन रहै किसी न ठिकाने

के २०७ जन्म मृत्यु त्यागजग ओईनर सुखपावे तुम्हरी शरण जोई लीनो है तकाय के। सुख दुख आयपरै तिसका सो समजाने माधवराम तिनका सो एक सुखदायके॥ भवमंडल अपारसिद्ध तिसका सुत ब्रजाने जैसे सीपमाहिं चाँदीजल मारुवारके। तिनकी समानहिंचै मुझको कराओ भले दुख सिन्धुलांघि पदपाओ माधवरामके २०८॥

चौ० ॥ यहिविधि हर मुनिवर बुधज्ञानी। निरवेद समेत सुनै द्विज वानी॥ धर्म वाक माधवकी गाई। बहुविधि द्विजको मुनि समझाई २०९ तामें जगत मोह दुख जाये। सो वैराग मुनि द्विजहिं सुनाये॥ विनु विवेक वैराग न आवे। वैराग विना भव मोह न जावे २१० ॥

छं० ॥ माधवरामके हे परमसेवक हरमुनि विचार भले उरठाना। भवमोह तजे विन नींद नहीं सुखज्ञान बिनादुख होय न हाना॥ भवसिन्धु सु लाँघन के हित मैं द्विज मुनि प्रति पूछे कल्यान निदाना। दुखदीन सो देख दयामुनि लाग सो धर्मके वाक्य सो ताहि बखाना २११ धर्मशास्त्र वाक सो माधवकी सब जीवनको उपदेश तयेही। परमातम अर्थी जो होय कोई बुधिमान उपदेशै न त्यागै ओही॥ माधवराम का नामसो मंत्र महासुख ध्यानकरै बुधिवर रहै मोही। भवसागर के लाँघनेके लिये कोऊ आयडिगै उनके पद जोई २१२ तिसको उपदेश करै ततकाल सो त्यागकरै नहिं दोपको मानी। माधवनाम जपाय तिसै भवमाहिं करे ऋषि ताहि सोज्ञानी॥ सम साधनका फल मोक्ष जोई कलिकोटिन में कोउ पावत ध्यानी। ऐसा फल माधवराम बिपथ तेहिकासो अभेदकरै जिमि पानी २१३ ॥

चौ० ॥ यहिविधि हरमुनि बुद्धि उदारे। द्विजको हित कल्यान विचारे॥ गुरु मंत्रहीन लखे मुनिनायक। अशुद्ध अहै उपदेश न लायक २१४ जो मानुष गुरुमंत्र विहीना। महाअशुद्ध सुरहै अलीना॥ जिनका स्पर्शकिया जो पानी। नहिं मंजन लायककहै ज्ञानी २१५ गुरु उपदेश विना जग माहीं। मोक्षअपार तिन्हैं सुखनाहीं॥ भवसागर में दुःख अपारा। जन्म मृत्यु पावै वहुवारा २१६ नानाभाँति योनि वहुधारे। अपार दुख सहै मिलै न पारे॥ यह विचार हर मुनिवर ठाने। द्विज हितको कल्याण बखाने २१७ माधवराम ईश जगपालक। तिनके पदपंकज दुख शालक॥ तिनके अभीपद पावनताई। मोक्षहेतु मुनि द्विजहिं बताई २१८ मोक्ष कल्पतरु निज

गुरु आश्रम । भक्तीसहित जाहु तहँ बेश्रम ॥ पदाम्बुज माधवके सुखदाई । कोटि जन्म अघदेत खपाई २१६ गुरु उपदेश लिहौ सुखदाये । भवसंकट तुम्हरा सबजाये॥ यथायोग गुरु पूजि मनावे । जो तुमसे भूसुर बनि आवे२२० जोजो वचन कहे गुरु ईशा । तिसका सेयो उरलै अशीशा॥माधव चिदानन्द व्यापी के। तिनके अमीपद- पंकजपीके २२१ ब्रह्मरूपकर तिनको भजिहो।जनममरण भव दुखते छुटिहो॥ द्विज कुलके शुभ धर्म हैं जोई। निशि दिनकरौ जानि सुख सोई २२२ गुरु मर्य्याद लखौ सुखखानी। और व्यवहार तजौ दुखजानी॥ द्विज तन दुर्लभ मानुष पावै। अधिक पुण्य फल कबहुँक आवै २२३ यह तनपाय के जगत मँझारा। द्विज आपहि न करै भवपारा॥ औसर चूके फिर पछितावै। भवनिधि को दुख हाथ न आवै २२४ याते गुरुभक्ती सुख धामा। द्विजवर करो ईश भजनामा॥ पाँच यज्ञ गेही के करमा। तिस को करै सो सुख लख धरमा २२५ इसमें द्विज पैहौ कल्याना । माधोरामका करो सो ध्याना॥ जिसका भवनहीको सुखदाये ॥ तिसको माधोहोत सहाये २२६ हानि लाभ सुख दुखहै जोई। ईशकी मायां जानो सोई॥ यामें नर नहिं भूलि लोभावे। जो मनलावे सो भय पावे २२७जगत मोहते वह द्विजत्यागा। हृदय गहो सो दृढ़ वैरागा॥ नामरूप मिथ्या जगमाया। याके हित नाहिं करौ उपाया २२८ वृक्षकीछाया शिव मनलावे । वह विनशे बहु मन पछितावे ॥ तैसे सकल जगत यह जानो । लेस सत ताको नहिं मानो २२९ ॥

क० ॥ पुण्यफल मानो तन दुर्लभ धन धाम दीरघ अरोग आयू क्षितिराज जोई है। जिस यहु देवे ईश कीजै नेकनामी जग शुभकृत कर मोक्षलेवे सुखदाई है॥ तिसही के पानेलिये वेद औ पुराणजिते विविधप्रकार शुभ करमनको गाई है। भव भोगनको त्यागकरै माधोजीका ध्यानधरै जिसहेत पुण्यफल मानो तनपाई है २३० नातो अज चींटीआदि कालके कलेवा सब ऐसे जगमाहीं सन्त आसन लगावे हैं। बड़े बड़े भूप तिस जगमें सरदार भये जिनकी दोहाई तीनलोक माहिं फिरी है ॥ विधिआदि देवदैत्य सिन्धु धरावीच जोई सबका सो अपने अधीन कर लीनेहैं । दशचार भुवन क्षिति जिनके सो डरकाँपे बड़े बड़े शैलनको चूरकर डारे हैं २३१ विधु रवि तारागण पौन पानीआदि सब जिनकी सो अज्ञामाहिं निशि

दिन चले हैं। दहिने बाँयें अंग जाके मन्त्री के समूहचलैं जाकी सभामाहिं एक राजे बैठे पाये हैं॥ चतुरप्रकार सैना जिनके अपार सोहै सुरपति आदि जाके नजर को पेखे हैं। जिनके सो सुत सो विचित्रवीर सुरमेंथे बन्दीजन जाकी सो वंशावली को उचारें हैं २३२ मुखचन्दकी समान जाके तिया सो अनेकरहैं नख शिख भूषणा लंकारते सोहायेहैं। जिनके कटाक्षदेखि गन्धरब लाजकरैं यतीजन जिनका सो देखि चित्तहारे हैं॥ धन धाम कोप खजाना जाके अन्तनहीं नदभावन बैठके अकंटराज करे हैं। जिनकी सो कथा महाभारत सो आदि माहिं ऋषिमुनि कबि सब ग्रन्थन में गावैहैं २३३ अन्तके समय माहिं सब कालके अधीनभये राजत्याग जगमें सो नाँगे पाँव गयेहैं। जैसे गजकाहिं मृगराज सो संहारकरै तैसे भवमण्डलको कालवधे जावे है॥ ऐसे राजन की कथा बहु ग्रन्थन मँझार माहीं नाममात्र जिनका सु कोई एक जाने हैं। नातो त्रिधालोक माहीं नेकही भूपालभये जिनका सु नाम रूप रेख कहुँ नाहीं है २३४ नाम रूप तीनलोक कालके सो चोगबन माधोराम चिदानन्द एक नित अबाधे हैं। आश लउँने लायक एक तिनहीं को नाम जानो लोक परलोक माहिं नित सुखदाये हैं॥ मातु पितु बन्धु दारा जो सोहिरद मित्र माया जो रचित भूमि वित्त आदि जोई है। यहु आश लाउने योग कोई द्विजनाहीं जगनदी परवाह सम होते जाते नीतहै २३५ याते मिथ्याजान जगनाता सो व्यवहार तजो जन्म मृत्युहेत मोह फाँसी दुखदाई है। लोक वेद करम जोई जगके मँझारमें अनादि परवाह जोई होत चलिआई है॥ अन्तरते उदासह्वैके करमनको कीने जाव कृतफल उभयलोक मायक अनीतहै। मोक्षको सम्हारो द्विज भारतमें तनपाय जिसहेत पुण्य फल मानो तनपाई है २३६॥

चौ०॥ सन्तभक्ति ईश्वरकी करना। सुखपैहो छूटै भवमरना॥ दयारूप सन्तन सुखदाई। तब आश्रमकनही चलिआई २३७ हरषसहित द्विज तिनको मिलिहो। धन्यभाग अपनेको जनिहो॥ यथाशक्ति जो घरमें होई। हाथजोरि लै मिलिहो सोई २३८ कपटरहित भक्ती सुखदाई। सन्तन की करिहो द्विजराई॥ सरल स्वभाव सन्त हितकारे। दीनदयालु जगतते न्यारे २३९ सबको चिदलखे अन्तरयामी। राग द्वेषते रहित अकामी॥ कपटरहित दुख तुम्हरा देखी। सन्तदयालू होंय विशेखी २४० दुख

संशय तुमरा जंजाला। सन्त नशावहिंगे ततकाला॥ सुखनिधि माधोराम अपारा। तिनको पइहौ नहिं संसारा २४१॥

स०॥ यहिभाँति सो सन्तनकी महिमा सब माधोराम चिदानन्द जाने। शुद्ध अशुद्ध सो जो जगमें त्रिकालदरशी तिनते न छिपाने॥ अथवा तिनका निज सेवक है सो लगावत होय तिनही नितध्याने। पदवारिज माधो के प्रभावते वह सो सन्तन की गतिजाने २४२ नतो और सो जीव कलीके द्विजातिग बुधिभ्रष्ट अज्ञान अधीने। गुण जो सुभावको जानै नहीं सब सन्त बिषय नित दोष बखाने॥ जिमि हाटक महलमें कीड़ीघुसै वह छिद्रढुँढ़ै कुंदधाम न जानै। तैसे मूरख पाप अपारलिये जोइ सन्तनकी उपहासको ठानै २४३॥ क०॥ जगमाहिं अघमन्द विषयी जो पामर हैं तिसै हितकरे सन्त जंगदुखी जानिके। तिसका सो फल मन्द सन्तनको दुख देवे सांपसाथ जैसे कोऊ प्रीतिकरै जायके॥ नित्य सुधाको पिलावै द्विज बिष शान्त करै नाहीं अन्तमाहिं डंकमार करे अरनासके। तिमि सन्तन की भक्तिकर सदा जो विहीन मन्द संतनकी निन्दा काहि करै सो तकायके २४४ तदपि सो संतजन जानि बूझि चुप्परहै आपना सुभाव सुख शान्त नाहीं त्यागे हैं। जिमि मलयागिरिसों सांपन सँयोगनते आपनी शीतलताई गन्धीको न त्यागे हैं॥ उलटा सो सांपनको सुख शांत नित देवे तैसे संत जगमें सो सदा सुखदाये हैं। याते आसुरी परिवार जब उरते हटावे द्विज संतनकी दयाकर माधवका सो पावे हैं २४५॥

दो० नातो इनके मध्यपर पावे दुःख अपार।
माधौरामके दास बिन नहिं होवै भवपार २४६

चौ०॥ यहिविधि हरसुनिवरबुधिमाने। निज पितुको कल्याण बखाने॥ मात पिताके दुःख हटाये। माधौ पदको दिहिन बताये २४७ जिनका नाम लिये जग माहीं। भवसागर दुखपावै नाहीं॥ सोई सुख नित द्विजको भाखै। नहिं मुनिवर कछु अन्तर राखै २४८ यहविधि हरमुनि कीन बखाने। सुनि दम्पती महा हरषाने॥ आनन्द अपार अधिक उरछाये। पाणि जोरकर बैन अलाये २४९॥

स०॥ धन्यआजु भयों मुनि मैं जगमें यह पावन अमी म्वहिं वाक सुनाये। भवसागर माहिं गिरा दुख पावत आज मुझे सुख थाह मिलाये॥ माधौरामका नाम

सुधा हमरे उरमाहिं तू दीन बसाये। दुख मूल अज्ञान हन्यो हमरे नित माधौ आनँदको हम लखपाये २५० मुनि पूरब पुरय प्रभावनते हमरे रंकके तुम आश्रम आये। मोहिं दीन अनाथ सो मन्दन को चिद माधौरामकों दास वनाये॥ कहा मुनि अगमको यहलाभ जिना भवसागर माहिं लोभाये। धन दारा गृह दुःखमाहिं भ्रमै तिनका विन संत सो कौन सहाये २५१ हमरे कुलमाहिं भयो तदवा शुभ करमनके फल तू प्रक-टाये। यहितें हमको अतिआनन्दहै तुम माधौरामके पारखदभाये॥ जेहिकुल माधौ की भगति होय नहीं सो कुल ढाक पलास मंदाये। हमको भवपार कियो सुतजी सब पुरयन के फल देव सुखदाये २५२ भवसंकटते अबनाहिं डरों त्रिलोकी के नाथ मोहिं माधौ सहाये। जिन गजराजके फन्दकटे पुनि माधौ भरदूलके अण्ड वचाये॥ मँ-झारके बालक आव विषय सो वचाये प्रहलाद को दीन दिखाये। ऐसे बहु आरत दुःखनको सुखदायक पैज सो राखत आये २५३॥

चौ०॥ अव मोहिं मेख आनन्द भयो। आशीर्वाद सुख अव मोहिं दयो॥ य-हिविधि हरमुनि सुन हरषाये। द्विजको वर दीन्हें सुखदाये २५४ ज्ञान वैराग मोक्ष सुख सवही। आनन्द सहित तुम पैहो घरही॥ माधौरामकी दयाहै जोई। तुमपर सदा रहैगी सोई २५५ हम तुमसे लै जगत अपारे। सबहिं सहायक प्रभू हमारे॥ ताते द्विजवर भगती धारी। माधौपुरी तू जाहु पधारी २५६ माधौ पद पंकजकी आसा। धरो हृदयमें करि बिश्वासा॥ सो भव सिन्धुकरै तोहिं पारा। फिर नहिं पायो यहिसंसारा २५७ यहि विधि हरमुनि कीन वखानी। फिर चलने को मनमें ठानी॥ यह मति माधौको सुखदाई। दुखितजानि मुनि द्विजहि सुनाई २५८ द्विज मुनिको ईश्वर करि जान्यो। सुतका भाव जोरह्यो भुलान्यो॥ माधौपदके पं-कज जोई। निश्चल एक सदा सुखहोई २५९ सुत पितु मातु जगत परिवारा। पर-मारथ ते सकल असारा॥ याते द्विज मुनि परम उदारे। लखे प्रमारथ तजिव्यव-हारे २६० परमारथ रूप जो माधौरामा। तिनको पाय न पावै जामा॥ सबका गुरु माधो यकईशा। येलखद्विज को कह्यो मुनीशा २६१॥

स०॥ यहिभाँति ऋषी द्विजके पुरमें सुख हरमुनि काहि बितेदिन दोई। भवमं-डल का दुखदेखि महामुनि हृदय वैराग धरयो शुभसोई॥ उदासीन भयो चितमाहिं

महा कर दंड कमंडलु हो मुनिसोई। चलन उपाव मुनीशरचे पुरलोकहिबासी जुरेबहु सोई २६२ मुनिकोसब मोह अपारकरे नरनारी बालयुवा बिरधाये। बारम्बार प्रणाम करैं सब मोह अधीन जलनैनबहाये॥ सबको मुनि सृष्टि सो बोधकरै जेहिलायक जो जेहि औसर आये। सब माधौराम का ध्यानकरो सुखपावहुगे तुम्हरादुखजाये २६३ गृह आश्रम के शुभ कर्मकरै विधि संतनकी शुभसेवा कमावे। जपतप आदि मखा व्रतध्यान सो गृहसत विषयन कछु बनिआवे। यथाशक्ति आश्रम आय परैं तिसका जल भोजन देके बनावे॥ यहिते गृहके सब पापनशैं बैदिकमोक्ष सुशीघरपावे २६४॥

चौ०॥ यहि विधि हरमुनि सबहिं बताये। पुरवासिन सब सुनि सुख पाये॥ कमर बांधि मनरह्यौ तियारे। सब सिखदै सुखचल्यो पधारे॥ जननी जनक नगर सब वासी। मोह त्यागि उरभये उदासी २६५ बहुत दूरलगि पीछेआये। तिनको मुनिससुझाय हटाये॥ माधौ नाम रूप उरधारयो। गंगातट को मुनिहिंपधारयो २६६ याते संतकरैं उपकारा। नित निर्लेप फिरैं संसारा॥ मुकतजिवनसुखलहैं अपारे। हरष शोक ते रहैं सो न्यारे २६७ सुख दुख प्रालब्ध फल जोई। देहके धर्म लखै सब सोई॥ सूक्षम थूल संघातके माँही। सत चित आप अनन्द लखाही २६८ यातेऋषि हरमुनवरज्ञानी। जीवन मुक्त जगत सुखखानी॥ सुरसरि सुखतट लखे अपारा। जिसकेदरशनही संसारा २६९ अनछित तेहि तट पहुँच्योजाई। लोकनहित मंजे सुखदाई २७०॥

स०॥ पुरबस बंधन त्याग भले मुनि सुरसरिके तटमें चलिआये। अमी गंगसु-बारिपियो कर मंजन शुद्ध भये उर कलिमष खोये॥ बेनी संगम के तटमाहिं भले मुनिभूसी अरण्य में जाय समाये। अमरदास मुनीसुसलैके तहां मुनिभूमी अरण्य में बहुत सुहाये २७१ मन बुधि बाक इन्द्री दुखदायक ताको संसारते नित्य हटावे। मख ब्रत जपतप देह कसे नित गंग स्नान सब कृत्य कमावे॥ नित योग समाधी अखंड विषय चिद माधौरामको ध्यान लगावे। बहुरूप संसार भयदायक है तिनकी कहुँ दृष्टिमें तुच्छ न आवे २७२॥ क०॥ तिनमें सरदार अमरदास ब्रह्मवेत्ता मुनि जिन सब वेदनको पार भले लीने हैं। वेदनको तातपर्य सकल सुधारे उर जिते मोक्ष तपरूप शान्त सुखदाई है॥ निगमके सदाव्रत कीने जिन जारी भले सैकरों हजारों

नित ऋषिनको बाँटे है। ज्ञान दुख मूल सब संशयको विध्वंसकरै मृगवारि सम नाम रूपको बतावे है २७३ अपने सो आत्माको ब्रह्मकर भूलिजावे तबहीं सो जगत नानारूपहोके भासे है। आत्माको जीव भावतजि ब्रह्मरूप जाने तब सब दुःख जाल जगत बिलावे है॥ याते नामरूप तजि अपनेको ब्रह्मजाने यही उपदेश अमरदास मुनिगावे है। जिनका सुदरश कोटि जनमके अघनाशै दूरका पहार जिमि बनी दाहकरे है २७४॥

दो॰ हरमुनि माधौरामके सेवक परम उदार।
ऐसे बनमें बसतभे जहँ नित मोद अपार २७५

स॰॥ ऋषि मंडलके सुखदरश लिये अमरदास मुनीशके निकट में आये। तिनके पदपंकज माहिं बसै सुख आनन्द पूर्वक मुनिवर पाये॥ वेद अर्थ सुनै तिनके मुखते सतो आनन्दते मुनिकाल बिताये। नित माधौरामको ध्यानधरै जिनका प्रभाव सुनै अभिजाये २७६ यहिविधि बहुत सो काल बितायके अन्तसमय मुनि देहको त्यागै। सुखसागर ब्रह्म अखंड चिदानन्द व्यापक शुद्ध अपार अदागै॥ ज्ञान स्वरूप अजन्म अबाध प्रकाशक योगीकरै अनुरागै। ऐसे सुख माधौराम विषय ऋषि हरमुनि जाये मिले बड़भागै २७७ पंचभूतक देह अनातम जो दुख मूलनहीं मुनि फेरके पाये। मातु पिता मुनिके जो रहैं ऋषि सो भी सुमाधौके पद आये॥ तिनके पद वारिज माहिं गिरे भवसागर के बहु दुःख सुनाये। त्रिलोकीके नाथ सदा सुखदायक तव शरणागत में चलि आये २७८ मैं दीन अनाथ मतिमन्द महा मुझको जगमाहिं न कोउ सहाये। तुम दीनदयाल अनाथनको शरणागतको प्रभु थाह मिलाये॥ भवमंडल माया पदारथ सें तिनमें प्रभुलाग महादुखपाये। दुखबाध लिये सुख पावनके हित सामिल होत मरे पद आये २७९॥

चौ॰॥ जननी जनकदार सुतभाये। तुम बिनु कौन सुनाथ सहाये॥ तवपद तजि जो जगमें लोभावे। पश्चात्तापकरै दुखपावे २८० शुभाशुभ करमन कर फल जोई। दुःख अपार लिहौ भव सोई॥ तव पदशरण में आयलुकानो। हमरा सुख दुख तुमप्रभुजानो २८१ शुद्ध अशुद्ध जो मों उरहोई। सो सबके उरजानो सोई॥ जिनका कहुँ नहिं जग विश्रामा। दुखित जीवन के तुम सुखधामा २८२ मैं सुख लखि तव

शरण में आयो। अब मैं मन्दको बन्यो छुड़ायो॥ यहि बिधि द्विजवर किहिन उचारे। भये प्रसन्न सो प्रभूहमारे २८३॥

क०॥ निरवेदके सहित सुने द्विजकी सो बानी नाथ भये सो दयाल तेहि क्षणसुख दाइया। जैसे गिरिजापती ऋपि थोरे में प्रसन्नहोय दुख बाधि भक्तनको देवे सुखदानिया॥ तैसे दीनानाथ कोटि जन्म के अघदहैं चारखानी जीवनको भवमें जो अपारिया। दुखतम अज्ञान मूल सूरकी समानहन आप मैं मिलावे महादेवै सुखदानिया २८४॥ छ०॥ याते ऋषी द्विजके दुख देखि शरणागत को प्रभु शिष्यबनाये। ब्रह्म विद्याको दानदिये द्विजका ऋषि जो तुमको हमपीछे बताये॥ तिनके उपदेश सुने सुख ब्राह्मण दुःखहटे महानँद सोपाये। ज्ञानकोपायसुऔदेशगये तिनके उरते भै संशय लाये २८५ गृहआश्रम के शुभकरम जोई ऋषि तनके अत्यागलै द्विजवोइ कमाये। माधौराम को ध्यानकरै नित भवनिधि माहिं निरलेपरहाये॥ मुनिवर के परभावनते द्विज ज्ञान बैराग सहि गृहमें रहाये। फिर अंतसमय तनत्याग पंचभूतक करमनको फल जो दुखदाये २८६ माधौ ब्रह्म बिषय द्विजजाइ मिले दुखदम्पति फेर नहीं तनपाये। नितशुद्धअपार अखण्ड हुये जिसके हित योगी समाधिलगाये॥ यहि भाँतिचिदानन्द माधौराम अनेकन को भव सिन्धु लँघाये। जिनके पद पंकजके अमीबारिको कानकरै जोई ध्यानलगाये २८७ गोपदतुल्य भवसिन्धुलँघै सब माधौराम बिषय वे समाये। अज्ञान भवबन्ध में नहिंमरै सुखसागर माधौ विपय वे समाये॥ याते ऋषी तिनके तुमसेवकजाको मुनी सब ध्यानलगाये। जिनका महामंत्र उपदेश शोधा तिनके पदपंकज जो सुखदाये २८८ तिनका परयत्नते ध्यानकरो सुखपावहुगे भव दुःखबिलाये। भव भोगनमाहिं बैराग करो दुखजानभले उरदेहुभुलाये॥ सुख दुखआयेपरै तनपै सब देहको धरम लखो जो दिखाये। सूक्षम थूल औकारण ते चिद ज्ञान सरूप तो न्यारे रहाये २८९॥

चौ०॥ यहि बिधि ऋषिवरतू सुखरासी। संशय सकल तजौ दुखफाँसी॥ प्रालब्धकर फल तनजोई। जबतक रहै जगत में सोई २९० भव मर्य्याद हेतु शुभकर्मा। करते जाहु जो संतके धर्मा॥ जड़चेतन माया जगफाँसी। तिनका तजै जानि दुखरासी २९१ तिनमें एक द्रव्य जड़ताई। दूजी स्त्रीहै दुखदाई॥ तामें प्रबल जो-

बती दोषन । तजै विवेकी लखि दुखभूषन २६२ कपटकूट दुखकी तियखानी । नरकदेन जीवनकी निशानी ॥ कुसमय बहुत जिवनपर होवै । परतिय सम नहिं कोउ दुखदेवे २६३ लोक परलोकहेत शुभकर्मा । सकल नशायदेय सुखधर्मा ॥ याते अपरतिया दुखखानी । पीछे ऋषि मैं तुम्हें बखानी २६४ सत्यवाक ऋषि तुमहिं सुनाये । तिय समान नहिं कोउ दुखदाये ॥ पतिबंचक स्त्री परभावा । प्रतक्ष सो भवमें रहा ऋषिछावा २६५ ॥

क० ॥ कलिका प्रभाव ऋषि कुसमय सो जानो उर लोक वेद लाजनको करै सब हानिया । गुरुमन्त मात पितु देव द्विज वेदनको धर्मका अभाव शुभहोवै कलि माहिया ॥ जोई करम मन आवे सोई सो निशंककरै श्रुति सो विरोध चलै सब नर नारिया । संकरबरन होय कलिके मँझार सब धर्म शुभलोकहोय पावै दुख अपारिया २६६ बारम्बार कलिमाहिं महादुहकाल परे अन्नके वियोग सब जीव तलफाइया । कामी क्रोधी चोरी यार जगमें अपारबँधे सुरी परवार सब रहैं उरछाइया ॥ मात सुता भगिनी पतोहु परतिय सेवे महा सो अनीति घोरकरै सब प्रानिया । मर्कटसमान सब तिय के गुलामहोय मीठी वाक बिष लाड मोक्षमाहिं आरिया २६७ श्वान श्वानीकी समान सबहोय नर नारि ऋषि माधौका सो पावे नाहीं देवे दुखभारिया । महा पछितावे सो विचारते विहीन ह्वैकै मन्द क्रम फलनको होवै अधिकारिया ॥ याते ऋषि कलिमाहीं फिरनेकी आशतजो देश सो यकान्त बसो करो तू विचारिया । इन्द्रीके समूह काहि भले तू दमनकरो माधौजीका ध्यानकरो येही सुखदानिया २६८ स० ॥ कलिमाहिं ऋषी मुनि जे मतिमान सो परवत कन्दर जाइ बसाये । हमरे प्रभु माधौराम चिदानँद देखो प्रत्यक्ष स्वरूप छिपाये ॥ सब सन्तन को उपदेश करै कलि घोरसो आयगये दुखदाये । कलिके प्रभावते ओइबचे सुख जो भवमण्डल त्यागि भुलाये २६६ हमरे सुखरूपको पावे भले नर जो गिरिकानन माहिं रहाये । नतो भवमण्डल माहिंरहै जो अनात्म पदारथमें लपटाये ॥ कलिकाल सो कलमखरूप महा धरमकापद एक सो थिर न रहाये । जड़ चेतन माया सो सन्तन के ढिग आइके करमसो देह डिगाये ३०० याते योग लिये माधौराम भजे जड़ चेतन माहिं न नेहको लावै । योगीरूप लिये जड़ दारा भजे वह अनेक

कलपान्तर नरक में जावै ॥ जिसकी बिगरी किरिया यहि लोक में सो परलोकही पहिले नशावे । यह लोक बने परलोक बने माधौराम विषय मिलिके सुख पावे ३०१ याते योगी के लिये सो पाप अपार है योग नशाये तिया जड़ सेवे । व्यास वसिष्ठ अगस्त पराशर गौतम आदि सबै तिय सेवे ॥ बाल्मीकि उद्दालक देव-लखै तिनके संतानभे वेदन गावै । याते व्यवहारकरै जगमें यहरीति सनातनकी चलिआवै ३०२ तिनकी नित रीति तजै कलिमें देशकाल सो मानुष वे न रहाये । कलिमें व्यभिचारिन तिया होय व्यभिचारी सो पुरुष होय नितनाये ॥ तिनका दुख दायक संग तजै अब देश इकान्त बसे सुखदाये । नित माधौरामको ध्यानकरो ऋषि जो भवसागर देत लँघाये ३०३ तिनके पद वारिजके परभावते कलिका प्रभावनहीं उर आवै । सदा सुख पावहुगे तनमें गिरिकन्दर कानन जहां रहावे ॥ अन्तमें माधौ को पावहुगे जहँ योगी व पूत जिजाय समावे । फिर भवसागर नाहिंआवै ऋषि यामें संशय नहीं उरलावै ३०४ ॥ क० ॥ और ऋषि संशय होय मुझको सुनाओ भले तिसका मैं नाशकरो जोई दुखदाई है । शुभाशुभ करम जोई जगमें सो बनिजावे गुरुपद माहिं जोई शिष्यन जनावे है ॥ यही निजकारणते दुःख सो अपारपावे क-पटकी घुंटीसूधी बुद्धीको नशावेहै । वेद औ पुराणआदि दोषनित लावे तिनै गुरु को सुनायके निवृत्ती नाहीं करेहै ३०५ याते मन्द शुभकृत जान भूल संशयहोय गुरु आगे सिखकहे वेदविधि पावेहै । कलमख आदि गुरुभ्रान्तीको नशायदेवे ब्रह्म मोक्ष रूप माधौराम में मिलावे है ॥ याते वेद गुरुते विरुद्ध सू अशुद्ध महा जिस नीच करमनको सुन सन्तभागे है । ऐसी मन्दकृत अधोगती दुखदाई ऋषि गुरुतें विमुखमानो शिष्य सो कमावे है ३०६ संसाररोग दुखभारी शिष्यउर संशयहोय सुखहित बाधलिय गुरुढिग आवेहै । शिष्यभाव रीतिकर गुरुसे कल्यान पूंछै जनम मृतिआदि दुख गुरुना बिनासे है ॥ वह पुरुष गुरुके सो पदका सो अर्थ नाहीं शिष्य ओहनाहीं जोई गुरुते लुकावे है । याते मेरीप्रति ऋषि पूंछतू निशंकह्वैके लेश शंका उरनाहीं राखि दुखजावे है ३०७ माधौरामके प्रभावकर दुख भ्रमजालहनो आतमसुख ज्ञानका जो करै ऋषिहानिया । माधौ चिद्रूप काहि तुझै और बोधकरौं जिनका तू जानकर होवे सुखदाइया ॥ तुम्हरी समान ऋषि कोई मेरा प्यारा नाहीं जिन मा-

धौराम काहि करै ध्यान ठानिया। ऐसे माधौरूप मुनिराजनके पदमाहिं हाथजोरि निशिदिन कविकी नमामिया २०८॥ स०॥ यहिभाँति नरायनराम मुनीश्वर सन्त ऋषी प्रति ज्ञान सुनाये। भवबन्धन दुख अज्ञानजमूल ऋषी उरते अन्धकार पलाये॥ अन्तर शुद्ध सुशान्तभये निज पूरबरूप चिदा लखिपाये। अनेक जन्मांत्रके दुख पापनपाय गुरूपददीन नशाये २०९॥

चौ०॥ यहिविधि मुनि मुखते सुनि ज्ञाना। ऋषी प्रसन्नभये भगवाना॥ पानि जोरि बोले बुधिमाने। गदगदगिरा प्रेम रससाने २१० धनि सो आजभयो जगमाही। उरग्रन्थि सन्देह छुट्यो अघदाही॥ धन्य आज दिनभयो हमारे। तब वेद-वाक महिंमिले अधारे २११ जिसहित गुरुपद दरशन आयो। भवबन्धन गुरमें छुटकायो॥ भवसागरमें गिरा सो रहेऊ। आज निकार मोहिं मुनिलयऊ २१२ गुर जगईश धन्य शुभबानी। जाकर हन्यो अघ दुखखानी॥ आज कृतारथ मैं फल पायो। अब कछु संशय उर न रहायो २१३ करमबासना फाँसी जोई। दीनदयाल हन्यो सब सोई॥ अब गुरु मोको भयो भरोसा। दुख कलेश मो छुट्यो अँदेसा २१४ निज सुरूप मोहिं अनुभव भयऊ। भवसागर अब नाहीं लयऊ॥ अज्ञान सांप मुख रह्यो अधीने। वेदमन्त्र ताहिन सुखदीने २१५॥

दो० पूरबकाल सो दुःखमें सदा रहौ लवलीन।
सदा चिन्तमें उरबस्यो कब दुखहोवै खीन २१६॥

स०॥ अज्ञानकृती भवबन्धनमें गुरु पूरबकाल महा दुखपाये। पँचभूतक देह अनातम माहिं सो आतमबुद्धि कस्यो मुनिराये॥ अज्ञान अधीन अछादा गयो तनके हित नाना मैं कीर्त्ति कमाये। भवभोगन माहिं सुभरमाकरो सुख शान्त कदाचित में नहिं पाये २१७ पूरबकालका दुःख हटायके आनँदमोहिं दिहौ सुखदाये। शुभाशुभ करमनके फल जो दुख तुमबिन नाथ सो कवन हटाये॥ जबतक करमकी फाँसीकटी नहिं तबतक जीव कहा सुखपाये। करम अधीन चौरासी फिरे दुखयोनिनका नहिं अन्तसुपाये २१८ बालक देहधरै सब योनि में जड़ता असकत महा दुख दावे। शुभाशुभ करमको ज्ञातनहीं पुनि देखतही तरुणापन पावे॥ संसारके आपद जो दुखदायक असुरी सम्पति आय दबावे। तिसके परभाव में ढाँपारहै सुख

माधौरामको न लखिपावे ३१६ वृद्धअवस्था सो आय घिरै दुख कालके चिह्न असाध रहावे। पुरुष विवेक नहीं मतिमन्द असक्त महा जड़तापन पावे ॥ सब इन्द्री सो त्याग करै तिसको एक आशा सो इच्छावधी नित जावे । भव भोगन माहिं सुडोला करै सब देश विषयसू निरादर पावे ३२० ॥ क० ॥ अन्त माहिं तनतजि शुभग तिनहिं पावे नाना योनि भरमैसू अवाच्य दुख गावे है। याते गुरू दयादृष्टि जिसपर करै आप ज्ञान निरवेद ताके उरमें समावे है ॥ सोई निरदोष भव दुखते छुटिजावै सुख ब्रह्मानन्द माधौराम में समावे है। याते मोहिं अनाथनको दुख बांधि मोक्षकीन्हों शुभाशुभ करमफाँसी मेरी तू नशावे है ३२१ यश अपयश सुख दुख जन्म मृत्यु आदि पूरब करम सब जीवन भोगावे है । वर्तमान माहिं भोगै भावीका उपाय करै वे बिचार इच्छा धारि कृतको कमावे है ॥ करमनके मूलसो अज्ञान दुख सिन्धु काव्यो जग दुख भोगते बैराग मोको आये है । निरभय हैके आनन्दसुरहो अब जगमाहिं संशय मोह जाल गुरू आप भव नशायेहै ३२२ नाथ पद वारिजको जगकें मँझार साहीं पूरब काल पाये मैंने अभय सुरहाये है। वर्तमान माहिं सो अज्ञानके प्रभावकर जन्म मृत्यु सांप रजोसम समै पायेहै॥ भये अति खेद मानि चितमें सो दुखपाये ताके सो बाध हित नाथ पद आये है। सोई गुरू आप चिद दयासिन्धु रूप माधौ ज्ञानदै अज्ञान दुख मूल तू नशाये है ३२३ ॥

दो० तीन काल सब अन्तरे तुम जानो गुरुदेव।
सुख दुख साखी शुद्ध अज चेतन अलख अभेव ३२४ ॥

चौ० ॥ तुम गुरु ईश जगत सुखदाये। जापर दया करो मुनिराये ॥ सो जग बन्धन ते छुटिजावे। तव पदपंकजमें सुखपावे ३२५ गुरुबिन जगमें जो सम्बन्धी। मेख विखए सबहै प्रतिबन्धी ॥ मात पिता भाई सुत दारा। घर वित आदि पशू व्यवहारा ३२६ इनकी मोहमें सब जगबन्धे। बन्ध मोक्ष विधि लखैं न अन्धे ॥ ज्ञान वैराग विवेक न आवै। याते कष्ट अधिक भय पावै ३२७ जन्म मरण भवसागर माहीं। नाथ कृपा बिन छूटै नाहीं ॥ शब्दादिक दुख विषय मँझारा। इन्द्रीकर चञ्चल संसारा ३२८ याते थिरता मन नहिं आवै। माधौ केर कहा सुख पावै ॥ सदा रहै अज्ञान अधीना। इन्द्री भोगनमें लवलीना ३२९ सदा कलेश दीनता माहीं। तिर्य्यग योनिन माहिं भ्र-

माहीं॥ माधौरामके सुख निधि पावन। जिसे देहसो लिये मुनिराजन ३३० यहिविधि सन्त ऋषी मति माने। गुरुभक्ती में परम सयाने॥ अनुभव ज्ञान विवेक है जोई। गुरु पदपंकज में भनै सोई ३३१ जापर माधौराम दयाला। मोक्ष ज्ञान पावै ततकाला॥ याते मुनि राजन अनुकूले। ऋषिको भे अगही प्रतिकूले ३३२ ज्ञान वैराग गुरुते पाई। आनन्द भयो दुख दीन भुलाई॥ माधौ रूप नरायनरामा। जिन पद पाये ऋषि सुखधामा ३३३ पाणि जोरि ऋषि तिनके आगे। ठाढ़ भये भक्तीरस पागे॥ चिदानन्द विभु गुरुको जाने। ऋषिवर अस्तुति करनको ठाने ३३४ हे गुरु तव पदपंकज पाई। नमस्कार मेरी सुखदाई॥ ब्रह्मविभू अजनित अविनासी। सोउ तरवो चिद गुरु सुखरासी ३३५ अज्ञानमूल दुखमें भ्रमजाला। तुम गुरुनाशकहौ ततकाला॥ परमानन्द तुमहिं मैं जानी। सुनि करो निज दुखकी हानी ३३६ षट लक्षण सह तुम भगवाना। नामरूप सब जग तुमठाना॥ जिनके हिरदय विमल विचारा। वै जानत हैं रूप तुम्हारा ३३७ और सो जीव जगत में जेते। तव प्रभाव न जानत तेते॥ दोषारोपण करै सो मन्दा। भैपावैं भवमें दुखद्वन्दा ३३८ तुम्हरी माया करै सो दीना। जीवनके कछु नाहिं अधीना॥ जीव चराचरको भरमावै। कोई स्वतन्त्र होन नहिं पावै ३३९ जापर किरपा होय तुम्हारी। निज मायाते लेहु उबारी॥ तिस अपनाइतसे सुखदेऊ। माधौराममें अन्त मिलेऊ ३४०॥

क०॥ हम मन्दभागी अति नीच लघुमति महा गिरवो भवसागर तू नाथ मोहिं उबारिया। माधौसुनरायनराम नेक मन्द मोखकीने अजामिल कीनो तुम जगमें उधारिया॥ द्रौपदीकी लाजराखी सभाके मँझार माहीं ध्रुवको अडोल करदीनो सुखदानिया। दुःख सो निवारतू सुदामाजीको सुखदीने गजपति मोक्षनाथ मोको तुव वारिया ३४१ नित्य शुद्धहै सनातन जो सुखब्रह्म माधौराम सोई पापधार उत्तममें नेउर जानिया। वसिष्ठकुल उत्तमतू रघुवंशी कुलपूज्य अजके परपंचकातू देवै सुखदानिया॥ अवब मुनीश तुम जीव ब्रह्मभेद टरि शिष्यनको उपदेश करै भवपारिया। धरम अर्थ काम मोक्ष सबकातू देनहार चारखानी जीवनको करो दुखहानिया ३४२ सदा निसरेही कुञ्ज जीवनते चहौ नहीं मोक्षका किवाड़ तुम दीनोहै उघारिया। संताहितकारी गुरु अज्ञानी सुख देनहार साखी चिदरूप सब उरमाहिं व्यापिया॥ सूक्षम

कारणस्थूल विश्व तैजस प्राग जोई ईश हिरण्यगर्भ विराट तू अपारिया। सबते नि-
राले चिद कोविद न पावेपार नाथ पद वारिजको हमरी नमामिया ३४३॥

छ०॥ मङ्गलं मङ्गलं सदा गुरुवन्त तेरी। हस्यो दुःख विघ्ना रख्यो लाज मेरी॥
दशकन्धर भ्रातं तुम्हैं सुक्खकारी। प्रह्लादं उबास्यो तुम्हैं नेकबारी ३४४ गोबर्द्धन उ-
ठाई तुम्हीं गोपपाले। मुरगजन्तु आदी के मानं हटाले॥ कारागृहते बसुदेवं तू देवकी
छुटाये। कंसाभिमानी के मानं मथाये ३४५ चाणूरं तू मुष्टी हन्यो नेकआरी। संह
जमला विखं कव्यो शाप भारी॥ पीड़ कुब्ला तो हाथी हनि नागं गहिलायो। उतना
लै आदि बहु राक्षस सुखपायो ३४६ पाण्डव सुतं महाभारतं बचाये। दशअठ क्षो-
हिनी तू सैना विताये॥ जब जब भूमं होय पाप भारे। तब तब अरातीहननाथं उ-
तारे ३४७ निज जन भगतं करो प्रतिपालय। चराचर सबके तुगुरुवं सुखालय॥ लक्ष्मी
जो नाहिं भगवानं सो जोये। वह माधौरामं चिदानन्द होये ३४८ सो अवतारं न-
ारायणंतु रामं। नरा सुख हेतंतु माधौ जगधामं॥ दशरथ पुत्रं रघुबंशी को तारे। तिमं
भवा जीवं तु मोक्षं दैपारे ३४९ गोप बछड़े पटमासे तन लीनो तु सुरधी। व्रजबा-
सिन सुख दीयो अज कीनो अगरभी॥ मथि क्षीरं पयोधि राक्षस सुर पाल्यो। बूड़त
गजराजं तु लीनो उबास्यो ३५० जीवं स्वरूपं तुमे जे पछाने। ते मतिमन्दं तव माया
भुलाने॥ नहीं सुखपावे। दुखादै भ्रमावे॥ तव कृपाहोए माधौरामं को पावे ३५१ चिदा-
नन्द रूपं वे नित्यं अवाधं। ताके पदाम्बुज करे ध्यान साधं॥ बहुता उपायं ते पावै को
एकं। जगतजि माधौको लेवे जो टेकं ३५२ महा सुक्खपावे भवं नाहिं आवे। चिदानंद
माधौ विषय वे रहावे॥ याते तू नाथं सदा सुक्खदाए। चराचर सबके तू अन्तर समाए
३५३ भुजङ्गप्रयातछन्द॥ नारायणं अच्युतं सदा आनन्द रूपं। सुमाया अतीतं भजेहं
स्वरूपं॥ परेशंपरानंद व्यापी अनूपं। भजेहं पदाम्बुज गुणातीत रूपं ३५४ अखिल
विश्वनाथं अनाथं के नाथं। तुमहिं माधौरूपं भजेहं मै नाथं॥ नामं स्वरूपं संसारं
असारं। अहं भ्रान्ति तिसमें पस्यो मैं दुखारं ३५५ नहीं थाह पायं तव नाथं धियायं।
जनम मृति आदि अंततु मेरी खपायं॥ दयासिन्धु गुरवंतु महिमै नमामी। अज्ञानं
दुखमूलं हानि दीनो सुखस्वामी ३५६ गुरु बिन जगमें को दुखमें सहायं। सब जीवभव
में परे हैं अथायं॥ पद माधौरामं को दीनो मोहिंदानं। जो नित शुद्धं अच्युतं क-

स्थानं ३५७ वेदं पुराणं तिन्हीं नित्यगावे। तिन पद ध्यानं करै मोक्ष पावे ॥ माधौ-रामं यनामं सुखदानी। तिसको लखायो मैं तुमको नमामी ३५८॥

दो० तुमरे चरणको त्यागके जे इन्द्री सुख माहिं।
ते नर अति दुख पावहीं भ्रमें जगतके माहिं ३५९

छ० ॥ माधौ नरायण नामन को जोई टेक सो लेव न जे मनलाये। ताहि प्रभाव ते छूटनगे फिरके भवसागर ना वहआये॥ माधौनरायण नाम चिदानन्द में उरवासा करो सुखदाये। मोहिं अनाथको भूल्यो न नाथ भवसागरमें तन जबतक रहाये३६०॥

चौ० ॥ यहि विधि सन्त ऋषी मतिमाना। गुरुकी अस्तुति कीन बखाना ॥ नारायणराम जो मुनि सरदारे। ऋषिपर प्रसन्न सो भयो उदारे ३६१ मेरी अस्तुति तुम जो गायो। मैं प्रसन्न बहुतै सुखपायो ॥ आशिर्वाद मेरी है तुमको। ऋपिवर तुम सुखदाई जनको ३६२ यह अस्तुति नर जो पढ़ि लिखिहै। बिन प्रयास भवसागर तरिहै॥ यहि पुण्यनते सब लोकन माहीं। सुख पैहौ दुख प्रीतम नाहीं ३६३ माधौराम जो जगत अधारे। हमरे इष्टको पइहै प्यारे॥ माधौपद संशय नहिं जामें। ज्ञानवान तन तजिरहे तामें ३६४ तहँ ऋषि जाके प्रासी ह्वैहो। सुख अपारलै भवनहिं ऐहौ॥ ताते परालब्धि जबनांई। तेहि अनुसार रहो सुखदाई ३६५ बाजीगरकी माया जोई। सब झूंठ जानि कर वेखै सोई॥ तैसे करो जगत व्यवहारा। उरते ऋषिवर रहो सुन्यारा ३६६ जगबन्धन येही तुम जानो। विषय अनातम कर अभिमानो॥ नरक स्वर्ग दुख सुख छुटकावे। योग माहिं अभिमान मिटावे ३६७ क० ॥ याते ऋषि माधौका प्रसाद कह्यो ज्ञान जोई तिसको विचारो ऋषि भले मनलायकै। निर्गुण स्वरूप निज गुरूका अखण्ड जोई निज आतम पेखि ध्यान कर्यो मनलायकै॥ जगमें सो मूरखन को संग दुख त्यागे रहना पूरबकी नाईं तुमहिं अगना भैदायकै। एकान्त देश माहीं ऋषि आतमाको ध्यानकरो नित्य शुद्ध बुद्ध सो अखण्ड चितलायकै ३६८ स० ॥ सन्त ऋषी गुरुभक्त महा गुरुते यहि भांति सो वोधको पाये। आशिरबाद सो लीन चिदानन्दको करजोरि गुरू का सो माथ झुकाये॥ पर देखिना बनाये सो कीन भले उर आनंद भक्ति अपार सो छाये। सहयं सो डंड समान ऋषी नमस्कार गुरू कहँ कीन बनाये ३६९ ऋषिमण्डल जो मुनिराजन के ढिग सबको नमो कर आनंद पाये। बस

विद्यार्थी मुनिनायक के शुभ सन्त ऋषीशके कीरति गाये॥ धन्य धन्य ऋषी बुधिमान सदा तुमहो भवमण्डलमें सुखदाये। तुम्हरे परसादते आजु भले भवसागरमें हम आनँद पाये ३७० हमरे उरमें अभिमान अज्ञान जो आज गये सब दुःख पलाये। ज्यों सूर हने अन्धकार प्रकाशित त्यों हमरे उर ज्ञान सोहाये॥ तम मोह अविद्या सो दूरि भई अब माधौराम चिदा लखिपाये। हमरे भव दुःख छुटावनको तुम माधौपुरी सुखमें चलि आये ३७१ क०॥ मेघनकी वरषा जिमि भूमिके मँझार होय तिस द्वारे सकल वनस्पतीति पाये हैं। तिमि मुनिराज तुमहिं ज्ञान सुधा वरषा कीने अघ जग दुख मूल हमरे नशाये हैं॥ आज भवसागर को पार हम पाय लीनो बातमा भीमानदुखसगल पलाये हैं। बूड़त अज्ञान दुख मुझको निकार लीनो जिमि बालखिल्य मुनिराजको निकारे हैं ३७२ बड़ो उपकार कीनो मुनिराज पाद आये माधौराम ब्रह्मरूपतिसे हम पावेंगे। तिनमें अभेदह्वैके चिदानन्द होवै हम मूढ़के भवसागर सो काहे हम आवैंगे॥ सतचिद आनँद अखण्ड अविनाशी अज ज्ञान विभु शुद्ध नित्यवन्त सो रहावैंगे। तुम्हरे प्रसाद ऋषि हम सब ब्रह्महोवै जगतको साखीरूप हमहीं कहावैंगे ३७३ याते ऋषि बुधवान हमरे तू गुरुभाई तिनहीं समान इष्टदेवको हमारिया। ताते तुम्हरे पदाम्बुज माँहि सुखदाय नित हम सब भृत्यनकी सदाहै नमामिया॥ मुनिराजके सो विद्यार्थी यहिभाँति जितनेको सन्तऋषि बुधके सो कीन सन्मानिया। जिनके अचारज सो ईश्वर स्वरूप जग तिनके सो शिख क्यों न होओ बुधमानिया ३७४ कारण जो शुद्धहोय कारज सो सबस्वच्छ पावे कारण कारज मलीनहोय सिधि कछुनाहीं है। ताते मुनिराजनके सेवक सो जितनेको कारण संयोगपाय सभी बुधिमानी है॥ ऋषिमण्डल उदार देख सन्त ऋषि बुधिमान मनमाहिं सबनोका भले सो सराही है। इनके सो बुध सनकादिक समाध सब ज्ञान सो वैराग उरछ्यो शुभ छाई है ३७५ महा उत्साहकरै माधौकी सो गीतगावे मानो ब्रह्मलोक सुरमण्डली सो आई है। मुनिराजनके शीश सब फूलनकी बरषाकरै जिमि देवमिलि सो मुरारी पै बरषाई है॥ अज्ञान मुनि ऋषिनके उरमाहिं दुखभारी नाशकीने मुनि सो मुरारी सुखदाई है। ऐसे मुनिराजनको नित सेव दरशपावे इनकी समान कौन सृष्टि भागमानी है ३७६ यहिविधि सन्त ऋषी गुरुते सो ज्ञानपाय कछुदिन ऋषि गुरु आ-

श्रम रहाये हैं। गुरुके समीप बुध निशिदिन वासकरैं शिष्यनि महँ भावधर सेवाको कमायेहैं ॥ गुरुके सो पदमें सो आनँद बितावै दिन निशिमाहिं माधौका सो ध्यान सुख लाये हैं। गुरुके प्रसादकर सन्त ऋषि बिषय सब माधौ बनबासी ऋषिगण प्रेम लाये हैं ३७७ स० ॥ यहिविधि सन्त ऋषी गुरुके ढिग आनन्द के सहि काल बिताने। फिर चलन उपाय ऋषीशकरे सब देशके पन्थ विषय मनदीने॥ नरायणराम मुनीश्वर जो शुभ अम्बर नवीन मँगाय सो लीने। आदर प्रीति मिलाय महा मुनि सन्तऋषी का सो अरपण कीने ३७८ युग पाणि मिलाय प्रसादलिये महाभाग भई गुरुहाथसे पाये। पुनि गुरुका सो मोह अपारकरै ऋषि जिन जगलाजते दीन छुड़ाये॥ माधौराम नरायणराम सदा भवमण्डलके सुखदाये। तिनकी शुभ नाम स्वरूप सुधा चिद सन्तऋषी उरलीन टिकाये ३७९ ॥

चौ० ॥ ऋषिसमूहको हाथ मिलाये। बिदाभये ऋषिवर सुखदाये॥ मुनिराजन के शिष्यहैं जोई। अधिक मोहकीन्हे सब कोई ३८० ऋषिको ऋषिगण पठवन ताहीं। बहुत दूरलगि मगमें आहीं॥ सन्तऋषी लखि ऋषि समुदाई। बिदाकिहिन शुभ मस्तकनाई ३८१ मुनिराजनके शिष्य जोहारे। माधौ बन चलिआये सारे॥ चित्रकूट निज गुरु अस्थाना। तहाँ ऋषि चलेगये भगवाना ३८२ मन्दाकिनि गंगातट माहीं। माधौभवन तहाँ दुखनाहीं॥ बाल्मीकिऋषि अत्र उदारे। मुनिमण्डल तहँ बसैं अपारे ३८३ ऋषि मुनिकर गिरिकानन सरिता। स्वर्गलोग समसोहैं त्वरिता॥ योग यज्ञकर तप मुनिसारे। माधौरामको भजिहैं प्यारे ३८४॥

स०॥ चित्रकूट की महिमा अपार महा कबि कोटि कविन्द भने नहिं पाये। दाशरथी सुत ब्रह्मभव कारण त्यागि वैकुण्ठ भवमण्डल आये॥ हजार यकादश भूमि बिषे सुर मानव केहितकीन सहाये। जिनके शुभकीरति लोक त्रिधा ऋषिमण्डल औ सब बेदनगाये॥ भवके दुखदेखि उदास भये पुनि तेऊ चिदानन्द तहाँ रहाये ३८५ द्वादश संवत वासकरे भवके शुभकरम सो तहाँ कमाये। और लोकान्तर माहिं बिषय नर जप तपआदिक पुण्य कमाये॥ जो फलपावै महा दुखते वह चित्र सो कूटके दरशते पाये। याते चित्रसुकूटकी महिमा अपारहै मैं मतिमन्द कहा लखिपाये ३८६

चौ० ॥ तहँ ऋषि जाय बसे मनलाये। सर्व सौख्य तहँ नूतन छाये॥ चिदानन्द

घन माधौरामा। तिनमें ऋषिकेहैं विश्रामा ३८७ माधौ गुरु सुखसिन्धु मझारा। यह कथा तरँगभइ अमीकीधारा ॥ तिनमें मिलि अघपुंज नशावन। याते सुखदायक यह पावन ३८८ गुरुका यश कीरति जो गावे। मोक्षदेय भवसिन्धु लखावे ॥ सुर नर असुर आदिहैं जोई। जो प्रभुता पाइनहै सोई ३८९ सो सब गुरु उपदेशते पावै। वेदपुराण ऋषी सबगावै ॥ याते माधौ गुरु जगनाये। तिनकी कीरति यह सुखदाये ३९० जो नर पढ़ि लिखि सुनि उरधरहीं। और यतन बिन भवनिध तरहीं ॥ माधौराम मोक्ष सुखधामा। तिनमें मिलै न पावै जामा ३९१ ॥

दो० छन्द अर्थ वृत अंकमें जहँ न मिले भँगहोय।
तहँ बुधिवंत सुधारिहो मैं सर्वज्ञ न होय ३९२ ॥

क० ॥ निगम अगम मोहिं कोई ग्रन्थ ज्ञातनाहीं छन्द अर्थ वृत्ती अंक कछुनाहीं भानहै। केवल प्रेमके अधीन यह कथन सो कीन मैंने माधौ चिद सागरको अन्त नहीं पारहै॥ याते कबि बुद्धिमान सब भगवान मेरे निगम अगम सब तुही जानेहारहै। मेरी प्रती क्षमाकरयो ग्रन्थ यह सुधारलीजो मैंतो मतिमन्द नाहीं ज्ञातम अभ्यासहै ३९३ स० ॥ गिरिजापती भगवान त्रिनैन सब भूत चराचरके सुखआलै। जिनको नित योगी सो ध्यानकरैं तिनके उरमाहिं बसै हरदयालै ॥ असुरी सम्पति जो दुखदायक ताको हनै पशुपति चन्द्रभालै। सुर नर गन्धर्व दैत्य यक्षादिक जिनके प्रकाशको लै करमपालै ३९४ जिनकी शुभ शक्ती अनेक ब्रह्मांड सो उत्पति नाश करै नितपालै। आप सु साखी रहेतिसके शुध ज्ञान स्वरूप गलेरुंडमालै॥ दयानिधि भक्त वच्छल निष्काम सदाशिव ईश ओढ़े मृगछालै। नित्य चिदातम व्यापकहै जटाजूटते गंगचलै परनालै ३९५ हिमके जमाई बिभूति रमायके भांगधतूरा छके सो अकालै। संतके पालक कामके आर हने त्रिपुरा करलै त्रिसालै। भर्म नाशन कालकी काल होय नगनाग वैरागधरे बहुव्यालै। चूड़ामणी गिरनाथ सोहै शिरडम रूहन बेद सुनावे हिमालै ३९६ ॥

दो० गिरिजापति चिदानन्दको हमरी सदा जुहार।
जाहि विषे भवहोतहै उत्पति लै व्यवहार ३९७

क० ॥ शान्त अकार सुखभुजग सुशैन करै पद्म सोनाभिमें सुरेश्वरके राई हैं।

सारीविश्वक आधार व्यापी हुगन समान नित गरुड़सो बाहन सुभांग सुखदाई हैं ॥ वारिज सुनैन ईश लक्षिमीकेनाथ सात योगी जिनहिं निशिदिन ध्यानको लगावे हैं। जिनका सो नामलिये कालदुख त्रासपावे मोक्षमोक्ष देनेहारे सव लोकनकेनाथ हैं ३६८ दर गदा औ सरोज चक्रधारी भुजमाहिं भवमण्डलको पालेनित सदा अरि नाशीहै। नन्दसुनन्दसनकादिक सो आदि सव जिनके सो गुण नित नारद सोगावै है॥ सुर नर असुरन देहधारी चारखानी सवके सहाई होय सुख उपजावे है। जिमि मात पित सवसुतनपै मोह राखै घाटवांध चित्तमाहिं कदा नाहिं लावै है ३६६ अशन सु सवका सु जैसा देखै तैसादेवै सवका सो सुखनित उरमें मनावै है। तैसे जलशायी सव जीवनपै दयाराखै जिनके सो आसरे त्रिलोक सुखपावे है॥ नाभी पद्मसे ह्वै के विधि विश्वको सम्हारे सव जिनकी सु ओट सुरराज सुकहावै है। सुर संत हितकारी अवनी अघभार हारी ऐसे जलशायी मुरआरी को नमामी है. ४०० स० ॥ गुरु नानक ब्रह्मस्वरूप अखंड भवमंडल जीवनकेर सहाये। जिनके गुणको सव लोकनमें शुभगाये तरैंभव आनँदपाये॥ नामभक्ति ज्ञान वैरागलिये सवको जगमें अधिकार वनाये। जेहि देशमें मानुष दुष्ट महा खल नीच महासुमलीन रहाये ४०१ नित राक्षस तुल्यरहैं जगमें मन्दभक्ष्य अभक्ष्य भपैंकुचिलाये। तिनको उपदेशकरैं गुरुनानक कव्वनते शुभ हंस बनाये॥ भवसागर लंघनके सो लिये सव जीवनको सुखसेत सोहाये। गुरु नानक ईशको कवीकीन माजिनके सुत रुद्र अवतार सुखदाये ४०२ जग उत्पति पालन हेतुज इन्द्री नित वाला अकाल सुदेत निवारे। आप सो शुद्ध स्वरूप सदा जिनकी महिमा नित वेद पुकारे॥ उदासीन अवधूत स्वरूप धरे जटाजूट सो अंग विभूति सँवारे। जिमि श्यामघटा महि इन्द्र शरासन रक्त कोपीन अरूढ़ सुधारे ४०३ कान विषय मणिमुद्रा शोभैं मानो खेह विषय शुभचन्द उजारे। ब्रह्मकमण्डलु हाथ लिये पुनि केहरिकी छाल बैठे जिमि दिवारे। उदासीन अवधूत निर्वाण अखण्ड दशों दिशा में रचे दैके नगारे। दैवी सम्पति जो सुखदाइक पंथ विषय जिनके याहि प्यारे ४०४ जिनकी प्रभुता अति फैलि रही नित जगत गुरु सबका सुखदाये। और सो वेप छिपै जगमें जिमि उडुगण आदित देखि लुकाये॥ सिध शक्ती सो आजश्री चन्द्रके घर औरनके घर सून दिखाये। दशोदिशा धामन कुम्भनमें जिनका प्रताप

सो एक लखाये ४०५ पट दरशनलै बहु वेष जितै जिनकी प्रभुता लखिके सुखदाये। चित मोह रहे सगरे जगमें चहु बरनसो आश्रम करत सराये॥ चारि पदारथ आदिक लै जिनके घर छायरही मनलाये। नित गिरिजापती श्रीचन्द औतारको हाथ जोरे कवि आनँद पाये ४०६ त्रिकालकू ज्ञान तूई सच्चिदानन्द में उर माहिं बसो जगप्यारे। माधौराम भयो तुमहीं भवमण्डल जीवन कीन उधारे॥ तुम्हरी महिमा अति सिन्धु अपार सो मैं मतिमन्द महा बगुलारे। थाह सुपायो यहि तुम्हरी सब कोविद हारिपरे विस्मारे ४०७॥ क०॥ माधौराम माधौरूप संकटहरणभारी तौ पद बारिजको बन्दना हमारिया। तुही शुद्ध बुद्ध चिद व्यापक जगत नित नाम रूपमाहिं साखी तुही सुख दानिया॥ जीवईश ब्रह्मतुही त्रिगुण अतीत सदा एकरस धन खट भावन बिकारिया। सरगुण औतार लैके कलिके मझार माहीं नेक नहिं जड़ जीव करे भवपारिया ४०८ जोइ पदमाहिं डिगे तिसहीको पारकरे अघमूल भ्रम दुखतरके किवारिया। जिनके सो गुननित सुरनरमुनि गावे माधौ की समान कोई न भवमें हितकारिया॥ क्लेश तीन ताप कोटि जनमका पाप होय जिनका सरूप देख होवे दुख हानिया। जिनके सरूपका सो वेद औ पुराण गावे नानाभाँति जगमें सो करत बखानिया ४०९ उदासीन आश्रम विषय विष्णु औतार भये जीवन कल्याणहित कलिके मझारिया। द्वापरमें मधुपुरी माहिं सब लीलाकीने त्रेताके मझार भये मनो राजधानिया॥ नर औ नरायण लैके चौबीस औतारधारे चारयुग जीवनको करै प्रतिपालिया। ऐसे दुखहारी सुख-दानी माधौराम काहि तिनपद वारिजमें कविकी नमामिया ४१०॥ क०॥ अवधपुरी भवमण्डल माहिं सो माधौ त्रिदेवन रूप धराई। जिनके गुण गावतहैं कविता अति लाजधरे मनमें पछिताई॥ ब्रह्मसनातन माधौराम नरायणराम भयो अब आई। भवमें चिद मोक्षके हेतु भये सब जीव चराचरके सुखदाई ४११॥ क०॥ शीशमें जटा कलापै हेमकी समान तन मुखचन्दबनी अमी भवदुखहारी है। भाजभृंग समान पानि बारिज समान सोहैं भोग मोक्ष लक्ष्मी सो नित तामें बसी है। पद पद्मसमान सब जीवन भवनिधि तारे मान अपमान जिन असुरी संहारी है॥ लालपट तनमाहिं बिजुली समान सोहै रतन खराऊँ शुभ पादमाहिं धारी है ४१२ शाम सुवह माधौवन चारिउओर गवनकरे ऋषिनको दरश होवै जोई सुखदाई है। जहाँ जहाँ पादपरे जी-

वन कल्याण करै टेढ़ी योनि आदिक जो जगमें पपील है॥ लक्षिमीपति जिमि देवन के बीचवसै तिमि ऋषिगण माहिं वसै मुनराई है। शान्त सुखदाई सव दैवी परिवार दयाजिन्के सो उरमाहिं नित सो रहाई है ४१३ कैसे भवदुख पावेकबि जिमि पदपाये विघ्न अज्ञान दुखहन्यो तूं हमारिया। सारी संशयको संहार कीना कामनाको फल दीनो मेरी उरमाहिं वसौ आय सुखदाइया॥ माधौरामकी मर्य्याद सव करत बनाये मुनिसियापतिपाल्यो जिमि मनोराजधानिया। जिनकी सो निश्चय निशि दिन माधौराम माहिं जिमि रामभ्रात भरत करै रामध्यानिया ४१४॥

दो० रामभ्रात जिमि भरतजी पाले अयोध्याधाम।
आपनिमाना हो रहै भनै करै सव राम ४१५
तिमि माधौवनपालही महन्त नरायणराम।
आप अहंवधि त्यागिके करैं सो माधौराम ४१६
ऐसे निश्चय गुरू मैं करै सो शिष्य उदार।
नातो शिष्य मलीनहै गुर त्यागकरैं हंकार ४१७

छं०॥ निखिलं असीनके तू मुनराजन माधौको ले जगईश उदारे। तुम्हरे पदमंजुल माहिं भले हम ध्यानलगाये भये सुखीआरे॥ धर्म छेतरूप धर्यो कलि में तुम मायापती जगनाथ मुरारे। यह जानि भजे कवि नित्त पदाम्बुज अंत विषय तुम्हरी है जोहारे ४१८॥

दो० तीरथ नीरप मधलोक में गंगयमुन मधुमांहि।
सुर नर मुनि सुख तहँ वसै जन्म कोटि अघदाहि ४१९
मोक्षहेत अमी अम्बुको पान करै नितताय।
वेद विहित कर ज्ञान लै अन्त मोक्ष में जाय ४२०
धर्म्मराज भगिनी सुभग लक्ष्मीपति पद वार।
श्याम सुकुल गम्भीरतन करै सोख संसार ४२१
दोनों आपस में मिली मानों नभ में चन्द।
तेहि तटपर कवि बैठके माधौराम गुरुबन्द ४२२
माधौ ग्रन्थ सुखसार को कवि रचना तहँ कीन।

बुधिमान जन हे कबि उनहि करिये शुद्ध नवीन ४२३
अधशत कमदुइ सहस में सन ऊपर पंचास।
कृष्णपक्ष हरजन्म सुख दुइ षट भादोंमास ४२४
निरविघुनइति परबन्ध शुभ महातेज रबिबार।
तेहि दिनचिदघनश्याम में कबि आनँद जैकार ४२५

श्रीमाधवरामायनमः॥

दो० देश तिलंग मन्दराज जो दक्खिन देशकहे।
धीर ईसापटन नगर एक बसै सिन्धु के तीर॥
जग साखी माधौरामके शिखथे यमुनादास।
तहां लिखा यह बैठके पढि लहैं सरब सुखरास॥

इति॥

कठवल्लीउपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत ≈)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित-इसमें भी ऊपर लिखे हुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और समझने की सुगमताके लिये गुरु शिष्य संवाद पूर्वक पूर्ण ज्ञान लखाया है॥

मुंडकउपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत ≈)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित-जिस में वादी प्र-तिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का संभव व अग्निहोत्रादि क्रियाओंका विधान मन्त्रों द्वारा वर्णित है॥

तैत्तिरीयोपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत ।-)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीकासहित-जिस में तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व वर्णों के उच्चारणकी शिक्षाका नियम व वर्णों के संबन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें वर्णित हैं॥

ऐतरेयोपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत ≈)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित-जिसमें आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना की व्याख्या व संन्यासादि आ-श्रमों के लक्षण व धर्म अच्छे प्रकार वर्णित हैं॥

उपनिषद्सार, क़ीमत -)॥ पु०

मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वर, ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, छां-दोग्य, बृहदारण्यक, कौषीतकि, ब्राह्मण और मैत्री की भाषा टीका राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने रचनाकर अपनेपुत्र पौत्र मित्र बान्धव योग्य अधिकारियोंके निमित्त छपवाया है॥

छान्दोग्य उपनिषद् भाषाटीका,क़ीमत ॥≈)॥

पंडित यमुनाशङ्करजी कृत टीका भाषा ॥

ब्राह्मधर्म दोखंड में, ग़ैरम्मतवा क़ीमत १) पु०

तथा प्रथमखंड ग़ैरम्मतवा क़ीमत ॥≈) पु०

तथा द्वितीयखंड ग़ैरम्मतवा क़ीमत ।≈) पु०

यह अत्युत्तम उपनिषद् है इसको पंडित लक्ष्मणप्रसादजी ने बंगाली भाषा से हिन्दी भाषा में उल्थाकिया है मूलश्लोक और भाषा टीका समेत है ॥

(वेदान्त)

योगवाशिष्ठ दोभागों में, क़ीमत ५॥) पु०

श्रीमद्भागवत भाषाटीका संयुक्त ७) रु० पु०

इस ग्रन्थ के उत्तम होने में कदापि सन्देह नहीं है–इसका भाषा तिलक ब्रज-बोली में बहुतही प्याराहै आशय प्रत्येक श्लोकोंका है क्यों न हो इसके तिलककार महात्मा ब्रजवासी अङ्गदजी शास्त्री हैं–यह तिलक ऐसा सरलहै कि इसकेद्वारा अल्प संस्कृतज्ञपुरुषों का पूराकार्य निकल सक्ताहै–संस्कृत पाठकभी इससे श्लोकोंका पूरा आशय समझ सक्ते हैं इसवार यह ग्रन्थ टैपके अक्षरों में उम्दा काग़ज़ सफ़ेद चिकना में छापागयाहै और विशेष विद्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे बम्बई की छपीहुई पुस्तकसे किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसावीरभी प्रत्येक स्कन्धमें युक्तहैं-आशाहै कि इसअमूल्य रत्न के लेने में महाशयलोग विलम्ब न करेंगे॥

———